मशरिकुल-अज़कार की संस्था

विश्व न्याय मन्दिर के शोध प्रभाग द्वारा
तैयार किया गया एक वक्तव्य

सितम्बर 2017

© National Spiritual Assembly of the Bahá'ís of India

Hindi Translatiion of
The Institution of the Mashriqu'l-Adhkár

प्रथम संस्करण : 2019

ISBN : 978-81-940483-7-4

Bahá'í
LITERATURE & PUBLICATION TRUST
बहाई लिट्रेचर एवं पब्लिकेशन ट्रस्ट
एफ–3/6, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1,
नई दिल्ली–110020, भारत

विषय-सूची

मशरिकुल–अज़कार की संस्था 1

1. मशरिकुल–अज़कार का प्रभाव 3
2. एक आराधना–स्थल 5
3. आराधना और सेवा 9
4. मशरिकुल–अज़कार पर आधारित संस्थाएँ 11
5. मशरिकुल–अज़कार का निर्माण 14

बहाउल्लाह और अब्दुल बहा के लेखों से चयनित अंशों, शोग़ी एफ़ेन्दी के लेखों और विश्व न्याय मन्दिर के पत्रों का एक संकलन

1. बहाउल्लाह के लेखों से 29
2. अब्दुल बहा के लेखों से 33
3. शोग़ी एफ़ेन्दी के लेखों से 49
4. शोग़ी एफ़ेन्दी की ओर से लिखे गए पत्रों से 56
5. विश्व न्याय मन्दिर द्वारा लिखित पत्रों से 66
6. विश्व न्याय मन्दिर की ओर से लिखे गए पत्रों से 90
7. मशरिकुल–अज़कार के लिए चयनित प्रार्थनाएँ 98

मशरिकुल-अज़कार की संस्था

मशरिकुल–अज़कार – "ईश्वर के गुणगान का उदय–स्थल"[1] – का वर्णन करते हुए विश्व न्याय मन्दिर ने ईरान के बहाइयों को लिखित 18 दिसम्बर 2014 के पत्र में उसे "धर्म के इतिहास में एक अनोखी संकल्पना" कहा है जो "परमात्मा के नए युग की शिक्षाओं का प्रतीक" है।[2] उसके बाद, विश्व न्याय मन्दिर ने यह भी कहा है कि उपासना मन्दिर "हार्दिक स्नेह के संवर्द्धन के लिए समाज का एक सामूहिक केन्द्र है" और यह

> *उपासना के एक सर्वव्यापी स्थल के रूप में है जो कि किसी स्थान के सभी निवासियों के लिए खुला है – चाहे वे किसी भी धर्म से जुड़े हों, उनकी चाहे जो भी पृष्ठभूमि हो, वे किसी भी प्रजाति के हों, स्त्री हों या पुरुष। यह आध्यात्मिक यथार्थ एवं जीवन के मूलभूत प्रश्नों पर गहन चिन्तन करने का आश्रय–स्थल है और इन प्रश्नों में समाज को बेहतर बनाने के लिए व्यक्तिगत एवं सामूहिक दायित्व के विशय भी शामिल हैं। इसके दायरे में स्त्री और पुरुष, बच्चे और जवान सब एक समान हैं।*[3]

मानवजाति की एकता और उसके कल्याण के लिए इस अनुपम संस्था के असाधारण महत्व को प्रभुधर्म के अनेक लेखों में

रेखांकित किया गया है। उदाहरण के लिए, बहाउल्लाह, कहते हैं, "धन्य हैं वे जो उपासना मन्दिर में स्वयं को उसके स्मरण में तल्लीन करते हैं जो धर्मपरायणों का परमेश्वर है।"[4] 'अब्दुल बहा हमें बताते हैं कि हालाँकि उपासना मन्दिर का "निर्माण धरती पर किया जाता है लेकिन यथार्थ रूप में यह 'उच्च लोक' की संस्था है" और इसके "शीर्ष स्वर्ग की ऊँचाइयों तक पहुंचेंगे।"[5] एक अन्य पाती में वे उसे "आभाओं का अरुणोदय–स्थल और सच्चरित्र लोगों का सम्मिलन–स्थान" कहते हैं जहाँ "अच्छे लोग .....याचनाएँ करते हैं, दिव्य श्लोकों का गान करते हैं और ऐसे अद्भुत स्वर–माधुर्य के साथ प्रार्थनाओं का पाठ करते हैं" कि "उच्च लोक के अंतःवासी उन्हें सुनकर यह पुकार उठते हैं कि "परम प्रसन्न हैं हम, यह समस्त विश्व आह्लादित हो!"[6] प्रिय मास्टर स्पष्ट करते हैं कि "यह प्रभु का प्रथम दृष्टिगोचर एवं प्रत्यक्ष संस्थापन है"[7] जो कि इतनी महत्वपूर्ण संरचना है कि "उसके लिए या उसकी आश्रित संस्थाओं में से किसी भी एक के लिए केवल एक ईंट की बुनियाद रखना भी एक उत्तुंग भवन के निर्माण के समतुल्य है"।[8] जैसाकि शोग़ी एफ़ेन्दी कहते हैं, मशरिकुल–अज़कार "बहाउल्लाह की विश्व–व्यवस्था का एक प्रतीक और उसका अग्रदूत है।"[9] विश्व न्याय मन्दिर के शब्दों में, यह "घृणा और अन्याय की कालिमा के विरुद्ध" प्रकाश की एक रेखा है।[10] वर्तमान समय में आठ महाद्वीपीय 'मन्दिर' विश्व में प्रकाश बिखेर रहे हैं और स्थानीय एवं राष्ट्रीय मन्दिरों का अभ्युदय भी आरम्भ होने लगा है जिनमें से प्रत्येक "सभी आगंतुकों को अपने 'रचयिता', सम्प्रभु परमेश्वर, विश्व के 'प्रकाशदाता' की आराधना के लिए"[11] आह्वान सुना रहा है और "सभी लोगों को "एकीकृत उद्देश्य की और अधिक गहन भावना के स्तर तक पहुंचने"[12] के लिए स्फूर्त कर रहा है। उनमें से प्रत्येक हमें अब्दुल बहा के इस आश्वासन का स्मरण दिलाता है कि "पूरी महिमा, प्रतिष्ठा और परम भव्यता के साथ हजारों–हजार मशरिकुल–अज़कार खड़े किए जाएंगे।"[13]

इस दिव्य संस्था की प्रकृति तथा मानवजाति के आध्यात्मिक नवसृजन के संदर्भ में इसके गहन अभिप्रायों के बारे में और अधिक समझ विकसित करने में सहायता देने के उद्देश्य से, बहाउल्लाह और अब्दुल बहा के पावन लेखों तथा शोग़ी एफ़ेन्दी एवं विश्व न्याय मन्दिर द्वारा, या उनकी ओर से, लिखे गए पत्रों से लिए गए अंशों का यह संकलन प्रस्तुत किया जा रहा है। संकलन के विभिन्न अनुच्छेदों में से जिन कुछ संकल्पनाओं का चयन किया जा सकता है उनके बारे में नीचे चर्चा की गई है।

1. मशरिकुल-अज़कार का प्रभाव

किताब–ए–अकदस में बहाउल्लाह ने दुनिया के लोगों का आह्वान किया है कि वे

> *उसके नाम पर जो सभी धर्मों का परमेश्वर है, सभी भूभागों में उपासना मन्दिरों का निर्माण करें। उन्हें इतना परिपूर्ण बनाएं जितना कि अस्तित्व के संसार में सम्भव है और उन्हें ऐसी वस्तुओं से विभूषित करें जो उनके उपयुक्त हों, न कि मूर्तियों और पुतलों से। उसके बाद, आनन्द और दीप्त–भावना के साथ, उनमें अपने प्रभु, उस परम दयालु, का गुणगान करें। सत्य ही, उसके स्मरण से नेत्रों को प्रफुल्लता मिलती है और हृदय प्रकाशित होता है।*[14]

अब्दुल बहा इस संस्था के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डालते हैं और वे मशरिकुल–अज़कार का उल्लेख "दिव्य संपुष्टियों को आकर्षित करने वाला चुम्बक" और "परमात्मा की सुदृढ़ आधारशिला, प्रभुधर्म का सशक्त स्तम्भ" कहकर करते हैं। उसी पाती में, वे यह कहते हैं कि उपासना मन्दिर की स्थापना "ईश्वर की वाणी को उदात्त

बनाने का साधन है" और यह कि "उससे बाहर निकलने वाली स्तुति और महिमा–गान हर सच्चरित्र व्यक्ति के हृदय को आह्लादित करते हैं।" इसलिए वे मित्रों से यह कहते हैं कि वे उपासना मन्दिर में "प्रार्थना और ईश्वर की आराधना, ईश्वरीय श्लोकों और उसके शब्दों के पाठ में तथा उस 'सर्वदयालु' के महिमा–मण्डन में स्वर्गिक गायन में तल्लीन हों"[15]

एक अन्य स्थान पर, अब्दुल बहा उपासना मन्दिर का वर्णन "एक केंद्र" के रूप में करते हैं "जहाँ चेतनाएं आह्लादित होती हैं और हृदय 'आभा साम्राज्य' की ओर आकर्षित होते हैं।"[16] और वे यह कहते हैं कि "जीवन के हर पहलू पर",[17] मित्रों की जागरूकता बढ़ाने[18] और मानवजाति की एकता को संवर्द्धित करने पर इसका बहुत ही सशक्त प्रभाव पड़ता है"[19] प्रभु का उल्लेख करने के लिए इस भवन में सबके एकजुट होने से "एकता का बन्धन"[20] बंधता है और "मानव हृदय में"[21] प्रेम का विकास एवं पोषण होता है। वास्तव में, मशरिकुल–अज़कार के माध्यम से जो कि "हृदयों को प्रकाशित करता है, आत्माओं को आध्यात्मिक बनाता है और 'महिमा के साम्राज्य' की सुरभियों का आस्वाद ग्रहण कराता है, मानवजाति का संसार "एक दूसरे ही संसार में बदल जाता है और हृदय की संवेदनाएँ उस चरम तक पहुंच जाती हैं कि वे सम्पूर्ण सृष्टि को आच्छादित कर लेती हैं।"[22] शोग़ी एफ़ेन्दी के अनुसार, मशरिकुल–अज़कार का प्रभाव "अगणित एवं रहस्यमय"[23] है जो कि व्यक्ति की निष्ठा को प्रत्यक्ष रूप से सबल बनाता है और, अब्दुल बहा के शब्दों में, "परमात्मा के मधुर आस्वाद को प्रसारित करने का सर्वश्रेष्ठ साधन है।"[24] विश्व न्याय मन्दिर की ओर से लिखित एक पत्र में यह बताया गया है कि "बहाउल्लाह का प्रकटीकरण लोगों को जिस दिव्य सभ्यता की ओर ले जा रहा है उसके एक प्रबल संकेत और अंतर्निहित तत्व के रूप में, उपासना मन्दिर – वह जिस

समुदाय में उभरता है – उस समुदाय का एक धुरीय बिंदु बन जाता है।"[25] प्रिय मास्टर की घोषणा है कि "उस स्वर्गिक मन्दिर में आराधना करने के लिए लोग उमड़कर आएंगे। ईश्वर की सुरभि का प्रसार होगा, लोगों की आत्माओं में चेतना के संस्थापन के समान दिव्य शिक्षाएँ हृदयों में अपनी जड़ें जमाएंगी और लोग तुम्हारे परमात्मा, उस सर्वदयालु के धर्म में सुदृढ़ होंगे।"[26]

2. एक आराधना-स्थल

अब्दुल बहा बताते हैं कि "शुद्ध एवं प्रकाशित हृदय परमात्मा के उल्लेख के उदय–स्थल हैं जहाँ से याचना और प्रार्थना के मधुर स्वर 'उच्च लोक' तक निरन्तर पहुंचते रहते हैं" और वे कहते हैं कि यदि मित्रों के हृदय ईश्वर की उदार कृपा से दिव्य मन्दिर बन जाएँ तो "वे निश्चित रूप से ...मशरिकुल–अज़कार के निर्माण के लिए अत्यधिक प्रयास करेंगे ताकि वह बाहरी संरचना आंतरिक यथार्थ को झलका सके और बाह्य रूपरेखा आभ्यंतरिक अर्थ को उजागर कर सके।"[27] इस आराधना–स्थल और उसके द्वारा झलकाए गए आंतरिक यथार्थ के सम्बंध में, बहाई लेखों में कई विषय–वस्तुओं का समावेश है जिनमें शामिल हैं प्रार्थना की शक्ति, सामुदायिक आराधना के प्रभाव और उसके मुख्य भवन के भीतर भक्तिपरकता की प्रकृति।

किताब–ए–अकदस में, बहाउल्लाह ने उपासना मन्दिर में ईश्वर के श्लोकों के मधुर गान की शक्ति की ओर ध्यान आकर्षित किया है :

> *अपने बच्चों को भव्यता और शक्ति के स्वर्ग से प्रकटित श्लोकों की शिक्षा दो ताकि वे मशरिकुल–अज़कारों के गुम्बद तले, अत्यंत सुमधुर लय से, 'सर्वदयालु' की पातियों का पाठ कर सकें। जो कोई भी मुझ परम*

करुणावान के नाम के गुणगान से उत्पन्न आह्लाद से विभोर हुआ है वह ईश्वर के श्लोकों का गान इस तरह करेगा कि उन लोगों के हृदय भी मोहित हो जाएंगे जो निद्रा में निमग्न हैं। धन्य है वह जिसने मेरे नाम से – उस नाम से जिसके माध्यम से हर उन्नत और महिमाशाली पर्वत धूलिसात हो उठा है – अपने दयालु प्रभु की वाणी से निस्सृत अनन्त जीवन की 'रहस्यमयी मदिरा' का पान किया है।[28]

प्रार्थना की शक्ति के विषय पर प्रकाश डालते हुए, विश्व न्याय मन्दिर ने कहा है कि 'युगल नक्षत्रों' ने हमें यह सिखाया है कि प्रार्थना "आत्मा का उसके रचयिता के साथ एक अनिवार्य आध्यात्मिक वार्तालाप है, एक प्रत्यक्ष और बिना मध्यस्थ के वार्तालाप" है, वह "प्रभात का ओस–बिंदु" है जो हृदय में ताजगी भरता है और उसे निर्मल करता है" तथा वह "अग्नि है जो पर्दों को भस्म कर देती है और वह प्रकाश है जो 'सर्वशक्तिमान' के साथ पुनर्मिलन के महासिंधु की ओर मार्गदर्शित करता है।"[29] प्रार्थना की गुणवत्ता प्रधान है। उसीपर "निर्भर है आत्मा की असीमित क्षमताओं का विकास और ईश्वर की उदार कृपाओं का आकर्षण।" जब वह (प्रार्थना) "ईश्वर के प्रेम से उत्प्रेरित" होती है तो उसकी शक्तियाँ प्रकट होती हैं। विश्व न्याय मन्दिर ने आगे कहा है:

उसे निष्ठावान और शुद्ध हृदय से अभिव्यक्त किया जाना चाहिए जो कि चिन्तन और मनन के अनुकूल हो ताकि तार्किक शक्ति उसके प्रभावों से प्रकाशित हो सके। ऐसी प्रार्थना शब्दों की सीमा से पार जाती है और केवल ध्वनि के दायरे से ऊपर उठती है। उसके स्वर–माधुर्य की मधुरिमा अवश्य ही हृदय को प्रफुल्ल करेगी, उसे उन्नत बनाएगी और सांसारिक रुझानों को

स्वर्गिक सद्गुणों में रूपांतरित करते हुए एवं मानवजाति की निःस्वार्थ सेवा की प्रेरणा से भरते हुए, 'शब्द' की भेदक शक्ति को सशक्त करेगी।[30]

एक दूसरी विषयवस्तु है सामुदायिक उपासना की जिसे बहाई लोग एवं दुनिया भर के उनके मित्र समाज के आध्यात्मिक एवं भौतिक कल्याण के लिए लक्षित सामुदायिक प्रयास की रूपरेखा की आधारशिला मानते हैं। विश्व न्याय मन्दिर ने कहा है कि इस रूपरेखा के लिए आवश्यक है "भक्तिपरक सभा जो कि ईश्वरीय जीवन का सामुदायिक पहलू है और मशरिकुल–अज़कार की संकल्पना का एक आयाम।"[31] "सामुदायिक जीवन के मूल में पिरो दिए जाने पर" ऐसी सभाओं से वे "अवसर उत्पन्न होते हैं जहाँ कोई भी व्यक्ति जा सकता है, स्वर्गिक सुरभियाँ ग्रहण कर सकता है, प्रार्थना की मधुरता का अनुभव कर सकता है, 'रचनात्मक शब्द' के ऊपर विचार कर सकता है, चेतना के डैनों पर चढ़कर उड़ान भर सकता है और उस 'परम प्रियतम' से वार्तालाप कर सकता है।"[32] ऐसी सभाओं का आयोजन मशरिकुल–अज़कार के विधान के "कार्यान्वयन का अगला चरण" है[33] – एक ऐसा चरण जो किसी भी स्थानीय क्षेत्र में उपासना मन्दिर की चेतना को जागृत करता है।[34]

तीसरी विषयवस्तु का सम्बंध उस विधि से है जिस विधि से मशरिकुल–अज़कार के दायरे में आराधना की जाती है। अब्दुल बहा कहते हैं: "उपासना मन्दिर मित्रों को सुदृढ़ता एवं स्थिरता प्रदान करते हैं" और वे "उस परमात्मा की गरिमा की दहलीज पर याचना और आह्वान करने के स्थान हैं।"[35] शोग़ी एफ़ेन्दी ने जिसका वर्णन "एक प्रशांत आध्यात्मिक वातावरण"[36] कहकर किया है, ऐसी आराधना और उसके उन्मेश के लिए आवश्यक है कि कर्मकाण्डों को दरकिनार किया जाए। जैसाकि विश्व न्याय मन्दिर ने गौर किया है, शोग़ी एफ़ेन्दी

विस्तृत एवं आडम्बरपूर्ण समारोह की साज–सज्जा को अस्वीकार करते हैं और ऐसा कोई भी अनुमान न लगाने की चेतावनी देते हैं कि "मुख्य भवन के आंतरिक भाग को ही असंगत एवं उलझनपूर्ण पंथीय संस्कारों और कर्मकाण्डों" को प्रस्तुत करने वाली "अनेक प्रकार की धार्मिक सेवाओं में परिवर्तित कर दिया जाएगा"।[37]

बल्कि इसके बदले, भक्तिपरक सेवाएं किसी भी प्रकार की एकरूपता या कर्मकाण्डीय रूपरेखा से अबाधित रहेंगी[38] और जैसाकि शोग़ी एफ़ेन्दी की ओर से लिखित एक पत्र में समझाया गया है, वे (भक्तिपरक सेवाएं) "सरल, गौरवमय तथा आत्माओं को उन्नत बनाने वाली तथा रचनात्मक शब्द के श्रवण के माध्यम से उसे सुशिक्षित बनाने वाली होंगी।"[39] उनकी ओर से लिखे गए एक अन्य पत्र में वे कहते हैं, "मन्दिर के अन्दर बहाई उपासना की प्रकृति जितनी ही सार्वजनिक और अनौपचारिक होगी, उतना ही अच्छा रहेगा।"[40]

ऐसी उपासना में वाद्य संगीत को भी शामिल किया जा सकता है।[41] विश्व न्याय मन्दिर की ओर से लिखे गए पत्र में यह स्पष्ट किया गया है कि उपासना मन्दिर में गाए गए गीत "बहाई अथवा अन्य पवित्र लेखों पर आधारित हों" जिनमें अब्दुल बहा के लेखों और वार्ताओं को भी शामिल किया जा सकता है, "उनमें बहाई विषय–वस्तुओं का भी समावेश"[42] होना चाहिए और "प्रार्थनाओं या पवित्र लेखों के चयन से श्लोकों को दुहराया" भी जा सकता है और "संगीत की आवश्यकता के अनुरूप ...पाठ में हल्के परिवर्तन किए जा सकते हैं"।[43] "गान की संगीत–शैली का निर्धारण संगीतकार द्वारा किया जा सकता है, बशर्ते कि वह पवित्र लेखों को औचित्य, गरिमा एवं समुचित सम्मान के साथ प्रस्तुत किए जाने के आध्यात्मिक दायित्व को ध्यान में रखे"।[44]

ऐसे मर्यादित किंतु सबको अपने दायरे में समेट लेने वाले तौर–तरीके से, मशरिकुल–अज़कार बहाउल्लाह के प्रकटीकरण की एक विशिष्टता – विविधता में एकता के सिद्धान्त – को अंगीकार करता है और शोग़ी एफ़ेन्दी के अनुसार, "इस धरती के मुखमण्डल पर, अत्यंत ही गोचर एवं ठोस रूप में, सर्वलोकों के प्रभु के धर्म की परम महत्वपूर्ण एवं अबाधित चेतना की एक सुन्दर प्रतिछवि और शाश्वत अभिव्यक्ति"[45] के संस्थापन को रेखांकित करता है। अब्दुल बहा स्वयं कहते हैं:

> *इस निम्न जगत में, मशरिकुल–अज़कार एक दिव्य भवन है और मानवजाति की एकता प्राप्त करने का एक साधन, क्योंकि दुनिया के सभी लोग मशरिकुल–अज़कार के प्रांगण में बंधुता और सौहार्द की भावना के साथ जुटेंगे और, 'दिव्य एकता' का गान गुंजरित करते हुए, 'दिव्य समूहों के स्वामी' की स्तुति और महिमा–गान में निरत होंगे।*[46]

3. आराधना और सेवा

मशरिकुल–अज़कार के दायरे में व्यक्तियों और समूहों द्वारा समर्पित भक्तियों से निःसृत आध्यात्मिक शक्तियाँ चाहे जितनी भी सक्षम और दूरगामी हों तथा व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास के लिए एक जीवन्त भक्तिपरक जीवन का होना चाहे जितना ही अनिवार्य है, किन्तु विश्व न्याय मन्दिर का कहना है कि आराधना का प्रतिफल भी उन कार्यों में उतना ही झलकना चाहिए जो "कार्य उस आंतरिक रूपांतरण को बाहरी अभिव्यक्ति प्रदान करते हों"।[47] शोग़ी एफ़ेन्दी हमें बताते हैं कि समुदाय – एक ऐसा समुदाय जो कि "दिव्य निर्देशित है, सहज रूप से एकता के सूत्र में बंधा है, जिसकी दृष्टि

स्पष्ट है, जो जीवन से स्पंदित है" – का "मूल उद्देश्य" "ईश्वर की आराधना और अपने बंधु–बांधवों की सेवा के दोहरे मार्गदर्शक सिद्धान्तों से विनियमित"[48] होता है। वस्तुतः, इन दो मार्गदर्शक सिद्धान्तों के बीच का अपरिहार्य सम्बंध एक ही साथ, जैसाकि विश्व न्याय मन्दिर ने कहा है, बहाउल्लाह के प्रकटीकरण का "संचालक सिद्धान्त है और उसका चरम लक्ष्य भी।"[49]

जब समुदाय बढ़ती हुई प्रभावशीलता के साथ कार्य (सेवा) से जुड़ी इसकी रूपरेखा के प्रावधानों को कार्यरूप देता है तो आराधना और सेवा की अविभाज्यता, जो कि मशरिकुल–अज़कार में पूर्णतः अभिव्यक्त होती है, स्वयं ही सतत प्रगतिशील रूप से प्रकट होती चलती है। विश्व न्याय मन्दिर ने लिखा है कि मित्रगण "उपासना तथा समाज की आध्यात्मिक, सामाजिक और भौतिक दशाओं को ऊँचा उठाने के लिए किए जाने वाले प्रयासों के बीच चलने वाले गत्यात्मक तालमेल को समझने में विफल नहीं रहे हैं।"[50] विश्व के बहाइयों को सम्बोधित रिज़वान 2012 संदेश में, विश्व न्याय मन्दिर का कहना है:

> *मशरिकुल–अज़कार जिसका वर्णन अब्दुल बहा ने "विश्व की एक अत्यंत महत्वपूर्ण संस्था" के रूप में किया है, बहाई जीवन के दो अनिवार्य एवं अविभाज्य पहलुओं को संयोजित करता है: आराधना और सेवा। इन दोनों का ऐक्य 'योजना' के समुदाय–निर्माणकारी लक्षणों में भी परिलक्षित होता है, खासतौर पर उस भक्तिपरक चेतना के उभार में जो कि प्रार्थना के लिए आयोजित सम्मिलनों और उस शैक्षणिक प्रक्रिया में अभिव्यक्त होती है जिससे मानवता की सेवा के लिए क्षमता का निर्माण होता है। उपासना और सेवा का अंतर्सम्बंध खासतौर पर दुनिया भर के उन समुदायों में प्रतिध्वनित होता है जहाँ बहाई*

समुदाय के आकार और क्षमता में अच्छी–खासी वृद्धि हुई है, और जहाँ सामाजिक कार्यों में उनकी संलग्नता स्पष्ट हो चुकी है।[51]

4. मशरिक़ुल-अज़कार पर आधारित संस्थाएँ

शोग़ी एफ़ेन्दी कहते हैं कि समय आने पर मशरिक़ुल–अज़कार का मुख्य भवन "सामाजिक सेवाओं से जुड़ी ऐसी संस्थाओं से घिरा होगा जो पीड़ितों को सांत्वना देंगी, बेघरों को आश्रय, वंचितों को तसल्ली और अज्ञानियों को ज्ञान।"[52] विश्व न्याय मन्दिर ने लिखा है कि "इस धरती पर जीवन की आध्यात्मिक और व्यावहारिक आवश्यकताओं के बीच एक गतिशील सुसंगति" की अनिवार्यता बहाउल्लाह द्वारा "मशरिक़ुल–अज़कार को बहाई समुदाय के ऐसे आध्यात्मिक केन्द्र के रूप में अभिहित किए जाने" में "निर्विवाद रूप से निरूपित है" "जिसके चारों ओर मानवजाति के सामाजिक, मानवतावादी, शैक्षणिक और वैज्ञानिक विकास के प्रति समर्पित उप–संस्थाओं का फलीभूत होना जरूरी है।"[53] इस सम्बंध में अब्दुल बहा हमें बताते हैं कि उपासना मन्दिर "अस्पताल, औषधालय, यात्री विश्रामालय, अनाथों के लिए विद्यालय तथा उन्नत अध्ययन के लिए विश्वविद्यालय से जुड़ा है।"[54]

शोग़ी एफ़ेन्दी उपासना और सेवा के बीच के महत्वपूर्ण अंतर्सम्बंध को रेखांकित करते हैं और मुख्य भवन और उसकी आश्रित संस्थाओं (उप–संस्थाओं) के बीच के आपसी अंतर्सम्बंध के बारे में निम्नांकित अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं:

मशरिक़ुल–अज़कार की उप–संस्थाओं के इर्द–गिर्द घूमते सामाजिक, मानवतावादी, शैक्षणिक, एवं वैज्ञानिक कार्यकलापों से वियुक्त होकर, उपासना मन्दिर – उसकी

संकल्पना चाहे जितनी भी उदात्त हो, उसकी भावना चाहे जितनी भी उत्कंठापूर्ण हो – किसी संत के चिन्तन अथवा किसी निष्क्रिय आराधक के सत्संग जैसे तुच्छ एवं अक्सर क्षणिक साबित होने वाले उद्देश्यों से बढ़कर और अधिक कुछ भी पाने की आशा नहीं कर सकता। वह स्वयं उस आराधक को भी दीर्घ संतोष या लाभ प्रदान नहीं कर सकता, तो फिर मानवजाति को कहाँ से कर पाएगा, बशर्ते कि वह मानवजाति के निमित्त ऐसी गत्यात्मक एवं निस्पृह सेवा के रूप में रूपांतरित न हो जाए जिसे संवर्द्धित करना और सहज बनाना मशरिकुल–अज़कार की आश्रित संस्थाओं का परम ध्येय है। और न ही मशरिकुल–अज़कार के दायरे में रहकर भविष्य के बहाई राष्ट्रकुल के मामलों का प्रशासन करने वाले लोगों के प्रयास – चाहे वे प्रयास कितने भी कठिन और निःस्वार्थ भाव से क्यों न हों – समृद्ध एवं फलीभूत हो सकेंगे जब तक कि उन प्रयासों को मशरिकुल–अज़कार के मुख्य भवन के चारों ओर केन्द्रित और उससे प्रतिबिम्बित होने वाली आध्यात्मिक एजेन्सियों के साथ घनिष्ठ एवं दैनिक अभिक्रिया की परिधि में नहीं ले आया जाएगा।

मशरिकुल–अज़कार के केन्द्र के रूप में इस उपासना मन्दिर से निःसृत आध्यात्मिक शक्तियों तथा मानवजाति की सेवा के प्रति समर्पित उसके मामलों का संचालन करने वालों द्वारा सजग रूप से प्रदर्शित की गई ऊर्जाओं के बीच प्रत्यक्ष एवं सतत अभिक्रिया से कम कुछ भी सम्भवतया उन आवश्यक एजेन्सियों को उन व्याधियों के निराकरण में सक्षम नहीं बना सकेगी जो कि चिरकाल से और अत्यंत

विकट रूप से मानवता को उत्पीड़ित करती आ रही हैं। क्योंकि कष्ट में पड़े हुए संसार की मुक्ति निश्चित रूप से एक ओर तो बहाउल्लाह के प्रकटीकरण की प्रभावशीलता के बारे में सजगता तथा दूसरी ओर उनके द्वारा प्रकट किए गए विधानों और सिद्धान्तों को बुद्धिमत्ता और पूरी निष्ठा से क्रियान्वित करने की नींव पर ही टिकी हुई है। और उनके पवित्र नाम से जुड़ी हुई समस्त संस्थाओं में, निश्चित रूप से, मशरिकुल–अज़कार के सिवा अन्य कोई भी संस्था बहाई उपासना एवं सेवा के अनिवार्य तत्वों को उतने पर्याप्त रूप से प्रदान नहीं कर सकता और ये दोनों ही संसार के नवसृजन के लिए अत्यावश्यक हैं। बहाउल्लाह द्वारा संकल्पित महान संस्थाओं में से एक – मशरिकुल–अज़कार – की उदात्तता, क्षमता और विशिष्टता इसी बात में निहित है।[55]

उपासना मन्दिर में निहित आध्यात्मिक और व्यावहारिक तत्व के बीच के सम्बंध के प्रथम संवेग हमें अश्काबाद में धर्मानुयायियों के प्रथम प्रयासों में देखने को मिलते हैं। विश्व के बहाइयों को सम्बोधित अपने 1 अगस्त 2014 के पत्र में विश्व न्याय मन्दिर द्वारा यह विवरण प्रस्तुत किया गया है :

> *शहर के मध्य में एक उपयुक्त भूखण्ड पर जिसे कुछ ही वर्षों पूर्व स्वयं 'आशीर्वादित सौन्दर्य' की अनुमति से अर्जित किया गया था, सामुदायिक कल्याण से सम्बंधित सुविधाओं का निर्माण किया गया था – एक सभा भवन, बच्चों का एक विद्यालय, आगंतुकों के लिए होस्टल, एक छोटा–सा क्लीनिक तथा अन्य। अश्काबाद में रहने वाले बहाई मित्रों, जो कि उन रचनात्मक वर्षों में अपनी समृद्धि, उदारहृदयता, तथा बौद्धिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियों के कारण विशिष्ट माने जाते थे, की एक*

पहचान यह थी कि उनका ध्यान यह सुनिश्चित करने पर केन्द्रित था कि निरक्षरता – खासतौर पर बालिकाओं की निरक्षरता – की समस्या से ग्रस्त उस समाज में सभी बहाई बच्चे और युवा साक्षर हों ....बीस से भी अधिक वर्षों तक, मित्रों को अपने इस उच्च लक्ष्य को साकार करने के स्वर्गिक आनन्द का आस्वाद प्राप्त हुआः उपासना के एक केंद्रबिंदु की स्थापना, सामुदायिक जीवन की एक धुरी, एक ऐसे स्थान का निर्माण जहाँ, इसके द्वार से बाहर आकर अपने दैनिक कार्यकलाप में निरत होने से पूर्व, लोग प्रभातकाल में विनम्र प्रार्थना और सम्मिलन के लिए एकत्रित हुआ करते थे।"[56]

दूसरे शब्दों में, जैसाकि विश्व न्याय मन्दिर ने बाद के एक अन्य पत्र में कहा है, मशरिकुल–अज़कार एक ही साथ "एक ऐसी जगह है जहाँ से आध्यात्मिक शक्तियों को परावर्तित होना है", वह "मानवजाति के कल्याण के लिए निर्मित की जाने वाली उप–संस्थाओं का केंद्रबिंदु है", और "सेवा के लिए एक सर्वसामान्य इच्छा और उत्सुकता की अभिव्यक्ति है"।[57] उसी पत्र में आगे कहा गया है कि ये उप–संस्थाएं "शिक्षा तथा वैज्ञानिक ज्ञान के साथ–साथ सांस्कृतिक एवं मानवतावादी कार्यक्रमों के केंद्र" हैं जो कि "ज्ञान के प्रयोग के माध्यम से प्राप्त की जाने वाली सामाजिक एवं आध्यात्मिक प्रगति के आदर्शों को मूर्तिमान करती हैं और यह झलकाती हैं कि जब विज्ञान और धर्म में तालमेल होता है तो किस तरह वे मानवजाति का रुतबा बढ़ाते हैं और सभ्यता को सम्पोषित करती हैं।"[58]

5. मशरिकुल-अज़कार का निर्माण

बहाउल्लाह की लेखनी द्वारा मशरिकुल–अज़कार के विधान के प्रकटीकरण के समय से ही, इसके कार्यान्वयन के लिए समुदाय की

क्षमता के अनुरूप एक क्रमिक एवं स्वाभाविक प्रक्रिया का पालन किया गया है। अब्दुल बहा कहते हैं कि "'परम उदात्त लेखनी' के निर्देशानुसार, परमात्मा के स्मरण के 'उदय–बिंदुओं' की स्थापना .... हर कस्बे और शहर में की जानी चाहिए।"[59] प्रिय मास्टर ने संकेत दिया है कि उनका आरम्भ अत्यंत सादगी के साथ भी किया जा सकता है :

> *जहाँ तक मशरिकुल–अज़कार का सम्बंध है, यह अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। इसका उद्देश्य यह है: एक स्थान निर्धारित किया जाना चाहिए, भले ही यह धरती की परतों और पत्थरों के नीचे बना एक छोटा–सा स्थान ही क्यों न हो, और उसे विवेकपूर्वक प्रच्छन्न एवं छिपा हुआ रखा जाना चाहिए ताकि शरारती तत्वों की शत्रुता न उकसाने लगे। सप्ताह में कम से कम एक बार, वहाँ ऐसे चुनिन्दा मित्रों का सम्मिलन होना चाहिए जिन्होंने निगूढ़ तत्वों को जान लिया है और जो दिव्य रहस्यों के अंतरंग सखा बन गए हैं। यह चाहे कैसा भी रूप ले सकता है, क्योंकि एक तहखाना जैसा होने के बावजूद वह गुहा एक आश्रयदायक स्वर्ग, एक प्रशंसित कुंज, एक आनन्द–वाटिका बन जाएगी।*[60]

अब्दुल बहा के धर्मनेतृत्व–काल में, मशरिकुल–अज़कार की स्थापना का सबसे पहला अवसर अश्काबाद और उसके बाद विल्मेट में उपलब्ध हुआ। तदुपरांत, दुनिया भर में सात अन्य स्थानों पर एक–एक महाद्वीपीय उपासना मन्दिर की स्थापना की गई, जिसकी पूर्णाहुति अक्टूबर 2016 में सैंटिएगो (चिली) में 'मन्दिर' की स्थापना के साथ हुई। अभी यह महाद्वीपीय चरण अपने समापन की ओर आ ही रहा था कि तभी – 1996 में प्रारम्भ हुई विश्वव्यापी 'योजनाओं' की श्रृंखलाओं से उत्प्रेरित सामुदायिक उपासना और सेवा की बढ़ती हुई

क्षमता के आधार पर – सामुदायिक निर्माण की प्रक्रिया में गतिशीलता आने के कारण, बहाई विश्व के समक्ष एक नया क्षितिज खुलने लगा था। 1996 में ही बहाई विश्व को सम्बोधित अपने रिज़वान संदेश में, विश्व न्याय मन्दिर ने इस बात पर जोर दिया कि "खासतौर पर स्थानीय स्तरों पर समुदाय के पनपने के कारण व्यवहार की पद्धतियों में महत्वपूर्ण विकास की मांग उठ रही है" जिसमें "परमात्मा की सामूहिक आराधना की प्रथा" निहित है। अतः, "समुदाय के आध्यात्मिक जीवन के लिए यह परम आवश्यक है कि जहाँ भी स्थानीय बहाई केन्द्र उपलब्ध हों, वहाँ या अन्य स्थान पर, जिनमें बहाई बंधुओं के घर भी शामिल हैं, मित्रगण नियमित भक्तिपरक सभाओं का आयोजन करें।"[61] पांच साल बाद के अपने रिज़वान संदेश में, विश्व न्याय मन्दिर ने रचनात्मक युग के पांचवें कालखंड में राष्ट्रीय मशरिकुल–अज़कारों के निर्माण की आशा की ... एक ऐसा विकास जो कि "अब्दुल बहा की दिव्य योजना के बाद के समस्त चरणों में प्रकटित होता रहेगा।"[62] विशेष रूप से उसमें यह कहा गया कि :

> *पांचवें कालखण्ड की एक विषेशता होगी राष्ट्रीय समुदायों में मौजूद परिस्थितियों के अनुकूल होने पर राष्ट्रीय उपासना मन्दिरों के निर्माण के माध्यम से समुदाय के भक्तिपरक जीवन को समृद्ध बनाना। इन परियोजनाओं का समय–निर्धारण सम्बंधित देशों में समूहों को प्रभुधर्म का संदेश देने की प्रक्रिया के विकास के सापेक्ष विश्व न्याय मन्दिर द्वारा किया जाएगा।*[63]

2012 के आते–आते, कांगो गणतंत्र और पापुआ न्यू गायना में आवश्यक मापदण्ड "स्पष्ट रूप से पूरे हो गए"।[64] यह एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण विकास था। उस वर्ष के रिज़वान संदेश में विश्व न्याय मन्दिर ने कहा कि "सैंटिएगो में निर्माणाधीन महाद्वीपीय मन्दिरों में से

एक की संरचना के साथ ही, राष्ट्रीय उपासना मन्दिरों के निर्माण की परियोजनाएँ समाज की जड़ में प्रभुधर्म की पैठ का एक और संतुष्टिदायक प्रमाण प्रस्तुत करती हैं।"[65] विश्व न्याय मन्दिर की ओर से उसके बाद लिखे गए एक पत्र में यह भी कहा गया कि उपासना मन्दिर "समुदाय–निर्माण की प्रक्रिया का एक अंतर्निहित अंग है और उसका निर्माण किसी भी समुदाय के विकास की दिशा में मील का एक महत्वपूर्ण पत्थर होने का परिचायक है।"[66]

यह भी समान रूप से उत्साहवर्द्धक बात थी कि रिज़वान 2012 तक यह स्पष्ट हो चुका था कि ऐसे समुदाय–समूहों में जो कि किशोरों के आध्यात्मिक सशक्तिकरण के लिए ज्ञान के सम्प्रसारण के केन्द्रों के रूप में सेवाएं दे रहे थे और जहाँ "विस्तार एवं सुगठन की सम्पूर्ण योजना"[67] को सुदृढ़ किया जा रहा था – उस समय खासतौर पर बैटमबैंग (कम्बोडिया), बिहारशरीफ (भारत), माटुंडा सोय (केन्या), नॉर्टे डेल कॉसा (कोलम्बिया) और ताना (वैनुएशु) में – वहाँ एक स्थानीय उपासना मन्दिर के बारे में विचार किया जा सकता था। इस दृष्टिकोण पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए, रिज़वान 2014 संदेश के निम्नांकित अनुच्छेद में किसी समुदाय–समूह में विकास–कार्यक्रम की प्रगति के साथ स्थानीय मशरिक़ुल–अज़कार की स्थापना का प्रत्यक्ष अंतर्सम्बंध स्थापित किया गया :

> *आपसी रूप से सहयोगात्मक वातावरण के सृजन की दिशा में 'योजना' के तीन अग्रवाहकों – व्यक्तियों, समुदायों और प्रभुधर्म की संस्थाओं – की क्षमता के विकास के साथ–साथ, अधिक से अधिक समुदाय–समूहों में, विकास कार्यक्रमों का दायरा और उनकी जटिलता बढ़ती जा रही है। और हमें इस बात की खुशी है कि, जैसी कि आशा की गई थी, ऐसे समुदाय–समूहों की*

संख्या बढ़ती जा रही है जहाँ सौ या उससे अधिक संख्या में लोग आध्यात्मिक, गत्यात्मक एवं रूपांतरकारी जीवन का ताना–बाना रचने के कार्य में हजारों अन्य लोगों की संलग्नता को सहज बना रहे हैं। इस आरंभिक समय से ही यह प्रक्रिया निस्संदेह भौतिक एवं आध्यात्मिक समृद्धि की विचार–दृश्टि की ओर – जिसका प्रणयन 'उसके' द्वारा किया गया था जो इस 'विश्व का जीवनदाता' है – सामूहिक गतिशीलता से रेखांकित होती है। लेकिन इतने बड़े पैमाने पर लोगों के शामिल होने पर समस्त जनसंख्या की गतिशीलता बोधगम्य हो जाती है।

यह गतिषीलता खास तौरपर उन समुदाय–समूहों में स्पष्ट है जहाँ स्थानीय मशरिकुल–अज़कार की स्थापना होनी है।[68]

रिज़वान 2012 संदेश में, विश्व न्याय मन्दिर ने सामुदायिक जीवन में आई इस गतिशीलता की विराटता को रेखांकित किया और दो राष्ट्रीय एवं पांच स्थानीय उपासना मन्दिरों के शीघ्र होने जा रहे निर्माण के सम्बंध में निम्नांकित अंतर्दृष्टि प्रदान की :

प्रिय सहकर्मियोंः सौ साल पहले अब्दुल बहा ने जो पहल की थी वही पहल एक बार फिर सात और देशों में की जानी है। लेकिन यह सिर्फ उस दिन की पूर्वभूमिका होगी जब बहाउल्लाह की आज्ञा का पालन करते हुए प्रत्येक शहर और गांव में प्रभु की आराधना के लिए एक भवन खड़ा किया जाएगा। ईश्वर के स्मरण के इन्हीं उदय–स्थलों से 'उसके प्रकाश' की किरणें बिखरेंगी और उसकी स्तुति के गान फूटेंगे।[69]

बैटमबैंग (कम्बोडिया) के उपासना मन्दिर के लोकाप्रण के लिए एकत्रित जनों को सम्बोधित 1 सितंबर 2017 के अपने संदेश में भी विश्व न्याय मन्दिर ने इसी विचार–दृष्टि की ओर आह्वान किया, यह घोषणा करते हुए कि "मशरिकुल–अज़कार की संस्था के विकास की दिशा में एक नया विहान आ रहा है" और यह पुष्टि करते हुए कि यह ऐतिहासिक अवसर,

> *बहाउल्लाह द्वारा उनके 'परम पवित्र ग्रंथ' में प्रकटित इस आज्ञा के अनुपालन में कि "उसके नाम पर जो सभी धर्मों का प्रभु है, सभी भूभागों में उपासना मन्दिरों का निर्माण करो", और भी अनेक स्थानीय एवं राष्ट्रीय मशरिकुल–अज़कारों के अभ्युदय की पूर्वभूमिका था।*[70]

राष्ट्रीय एवं स्थानीय उपासना गृहों के निर्माण के इस नए चरण के समारम्भ ने यह सीखना भी सम्भव बनाया कि उपासना मन्दिर के निर्माण के साथ ही और कौन–सी बातें जुड़ी हुई हैं, जिसमें एक उपयुक्त स्थान का चयन और भवन कितना बड़ा होना चाहिए यह तय करने जैसी व्यावहारिक बातें भी शामिल हैं और साथ ही यह भी कि स्थानीय लोगों में उस प्रायोजन को अपना समझने की भावना कैसे विकसित की जानी चाहिए। भवन–निर्माताओं का चयन भी एक विशेष महत्व का विषय समझा गया था, क्योंकि विश्व न्याय मन्दिर के अनुसार उनके समक्ष,

> *एक विशिष्ट चुनौती है मन्दिर की रूपरेखा को "इतना परिपूर्ण बनाना जितना कि अस्तित्व के संसार में सम्भव हो", जो कि सहज रूप से उन लोगों की स्थानीय संस्कृति और दैनिक जीवन में रच–बस जाए जो वहाँ प्रार्थना और मनन के लिए एकत्रित होंगे। इस कार्य हेतु सौन्दर्य, गरिमा और भव्यता को मर्यादा, प्रकार्यता और किफ़ायत*

के साथ संयोजित करने के लिए रचनात्मकता और कुशलता की जरूरत है।"[71]

विकास की इस सम्पूर्ण प्रक्रिया के दौरान, समुदाय को यह जानने–समझने का निरन्तर अधिक से अधिक अवसर प्राप्त हुए कि एकता की वह चेतना कितनी अपरिहार्य है जिससे ये प्रयास किए जाते हैं। इस संदर्भ में, अश्काबाद में मशरिकुल–अज़कार के बारे में योजनाएँ तैयार किए जाने के बारे में अब्दुल बहा यह बात कहते हैं :

आवश्यक है कि हर विषय को एकता और सद्भाव का माध्यम बनाया जाए, ताकि दिनानुदिन ईश्वर के प्रियपात्रों के बीच बंधुता और समरसता बढ़े।

और अब, स्वयं मशरिकुल–अज़कार के इस प्रसंग को इस तरह कार्यान्वित किया जाना चाहिए कि उससे मित्रों के बीच एकता और सद्भावना का विकास हो। अर्थात, पहले तो तुम सबको परस्पर परामर्श करना चाहिए और उसके बाद एक योजना तैयार करनी चाहिए। यदि तुम इन चरणों का पालन करोगे तो दिव्य संपुष्टियां तुम्हें सतत रूप से प्राप्त होती रहेंगी।"[72]

प्रिय मास्टर निम्नांकित परामर्श भी देते हैं:

जीवन और अस्तित्व का आधार है सहयोग एवं पारस्परिक सहायता जबकि विनाश और विघटन का कारण है सहयोग और सहायता का रुक जाना। अस्तित्व का लोक जितना ही ऊँचा होगा, सहयोग और सहायता का यह महत्वपूर्ण विषय उतना ही अधिक प्रबल और आवश्यक हो जाता है। अतः, मानवजाति के लोक में अस्तित्व के अन्य लोकों की तुलना में सहयोग एवं आपसी सहायता

अपनी परिपूर्णता के और अधिक बड़े पैमाने पर होती है .... इतना अधिक कि मानवजाति का जीवन ही पूर्णतः इस सिद्धान्त पर आश्रित है। खासतौर पर, प्रभुधर्म के मित्रों के बीच यह मजबूत आधार इतना सुदृढ़ होना चाहिए कि हर व्यक्ति सभी विषयों में दूसरे की सहायता करे – चाहे वे आध्यात्मिक यथार्थ और आंतरिक सच्चाइयों से सम्बंधित बातें हों या जीवन के भौतिक–शारीरिक विषयों से सम्बंधित। सभी लोगों के लाभ के लिए स्थापित की जाने वाली सार्वजनिक संस्थाओं और खासतौर पर मशरिकुल–अज़कार के प्रसंग में जो कि दिव्य आधारशिलाओं में महानतम है, विशेष तौर पर यही बात लागू होती है।"[73]

सहयोग की अवधारणा पर प्रकाश डालते हुए, शोग़ी एफ़ेन्दी ने अपनी ओर से लिखे गए एक पत्र में इस बात पर जोर दिया है कि उपासना मन्दिर की आधारशिला रखने के लिए "अथक सहयोग और आपसी सहायता आवश्यक है और यह त्याग की भावना पर आश्रित है।"[74] उनकी ओर से लिखे गए एक अन्य पत्र में यह समझाया गया है कि "भक्ति, निष्ठा और सच्चा उत्साह ही वे तत्व हैं जो दीर्घ काल में हमारे प्रिय मन्दिर की पूर्णाहुति सुनिश्चित कर सकते हैं"। और वे कहते हैं, "हालाँकि भौतिक चीजें अनिवार्य हैं लेकिन किसी भी रूप में वे परमावश्यक नहीं हैं।"[75] इसी तरह, विश्व न्याय मन्दिर ने यह बताते हुए कि सात नए उपासना मन्दिरों के लिए किए गए आह्वान का विश्वव्यापी प्रत्युत्तर पाकर वह कितना अभिभूत है, निम्नांकित बातों की ओर ध्यान दिलाया है :

खासतौर पर उन देशों और स्थानों में जिन्हें हाल ही में उपासना मन्दिर के निर्माण के लिए सुनिर्धारित किया

गया है, हमें मित्रों की सहज प्रसन्नता की अभिव्यक्ति, मौजूदा कार्य को पूरा करने में अपना अंशदान देने तथा उन कार्यकलापों की गत्यात्मकता को तेज करने के लिए, जो किसी भी जनसंख्या क्षेत्र में मशरिकुल–अज़कार के अभ्युदय के लिए आवश्यक कार्यकलाप हैं, उनकी त्वरित एवं हार्दिक प्रतिबद्धता और इसके साथ ही समय, शक्ति एवं भौतिक संसाधन की दिशा में उनके द्वारा अनेक रूपों में दिए गए योगदान और उन भवनों के विचार–दर्शन की दिशा में जो उनके बीच पूर्णतया परमात्मा के स्मरण के लिए स्थापित किए जाने हैं, बढ़ती हुई संख्या में जनसमूहों को जागरूक बनाने के लिए उनके द्वारा किए जा रहे सतत प्रयास देखने को मिले हैं। वास्तव में, 'महानतम नाम' के समुदाय के त्वरित प्रत्युत्तर इन सामूहिक उपक्रमों को आगे बढ़ाने में उनकी क्षमता के शुभ संकेतक हैं।[6]

इस मार्गदर्शन को ध्यान में रखते हुए और इस महान संस्था की स्थापना के लिए वांछित सच्ची सेवा की चेतना के महत्व को समझते हुए, अश्काबाद के मशरिकुल–अज़कार के निर्माण में भागीदारी निभाने के लिए अब्दुल बहा की उत्कंठा और उनके इस भावप्रवण आग्रह पर विचार करना बड़ा सहायक सिद्ध होगा कि उनके बदले मित्रगण इस कार्य को पूरा करें।

मशरिकुल–अज़कार के निर्माण के लिए, अब्दुल बहा की ओर से तुम लोग ही मिट्टी खोदने, गारा ढोने और पत्थर उठाने का काम करो ताकि इस सेवा से प्राप्त आनन्द 'सेवा के केंद्र' को आनन्दित कर सके। वह मशरिकुल–अज़कार प्रभु का प्रथम गोचर एवं प्रत्यक्ष

संस्थापन है। इसलिए, इस सेवक की यह आशा है कि प्रत्येक सच्चरित्र एवं धर्मपरायण व्यक्ति अपने सर्वस्व का त्याग करेगा, अत्यधिक आनन्द और प्रसन्नता की झलक दिखाएगा और गारे एवं मिट्टी उठाते हुए उल्लास का अनुभव करेगा ताकि इस 'दिव्य भवन' का निर्माण किया जा सके, प्रभुधर्म का प्रसार किया जा सके और इस महान दायित्व को पूरा करने के लिए दुनिया के सभी कोनों में मित्रगण अत्यंत दृढ़ता से उठ खड़े हों। यदि अब्दुल बहा जेल में न होते और उनके पथ पर बाधाएं नहीं होतीं तो निश्चित रूप से वे स्वयं ही अश्काबाद पहुंचने की तत्परता दिखाते और अत्यंत हर्ष और आनन्द के साथ मशरिकुल–अज़कार के निर्माण के लिए मिट्टी ढोते। अब मित्रों के लिए उपयुक्त है कि वे इस इरादे को ध्यान में रखकर उठ खड़े हों और मेरी जगह सेवा करें ताकि कुछ ही समय में यह 'भवन' लोगों के नेत्रों के समक्ष प्रकट हो सके, ईश्वर के प्रियजन उसमें 'आभा सौन्दर्य' के स्मरण में तल्लीन हो सकें, प्रभात बेला में मशरिकुल–अज़कार से निकलने वाले स्वर–माधुर्य उच्च लोक के प्रांगण तक पहुंच सकें और परमात्मा के कोकिलों के गान 'सर्व–महिमामय लोक' के निवासियों के हृदयों को आनन्द से विभोर कर दें। इस तरह हृदय आनन्दित होंगे, आत्माएँ आननददायक समाचारों से प्रफुल्लित होंगी और मनो–मस्तिष्क आलोकित होंगे। निष्ठावान लोगों की उच्चतम आशा यही है, जो लोग परमात्मा के निकट हैं उनकी सबसे अभीष्ट कामना यही है।[17]

1 किताब–ए–अकदसः परम पवित्र पुस्तक (विल्मेटः बहाई पब्लिशिंग ट्रस्ट, 1993, 2009 मुद्रण), नोट 53

2 उद्धरण 67.

3 उद्धरण 67.

4 उद्धरण 6.

5 उद्धरण 28.

6 उद्धरण 9.

7 उद्धरण 66.

8 उद्धरण 28.

9 उद्धरण 43.

10 उद्धरण 67.

11 दक्षिण अमेरिका के 'मातृ मन्दिर' के लोकार्पण के लिए सैंटिएगो (चिली) एकत्रित मित्रों को लिखित विश्व न्याय मन्दिर के पत्र दिनाँक 14 अक्टूबर 2016 से

12 उद्धरण 69.

13 उद्धरण 29.

14 उद्धरण 1.

15 उद्धरण 31.

16 उद्धरण 35.

17 उद्धरण 16.

18 उद्धरण 30.

19 उद्धरण 25.

20 उद्धरण 16.

21 उद्धरण 13.

22 उद्धरण 30.

23 उद्धरण 57.

24 उद्धरण 28.

25 उद्धरण 69.

26 उद्धरण 10.

27 उद्धरण 21.

28 उद्धरण 3.

29 उद्धरण 67.

30 उद्धरण 67.

31 उद्धरण 67.

32 उद्धरण 68.

33 उद्धरण 62.

34 उद्धरण 68.

35 उद्धरण 28

36 उद्धरण 38.

37 उद्धरण 58.

38 उद्धरण 49.

39 उद्धरण 53.

40 उद्धरण 45.

41 उद्धरण 53.

42 उद्धरण 81.

43 उद्धरण 75.

44 उद्धरण 75.

45 उद्धरण 37.

46 उद्धरण 25.

47 उद्धरण 67.

48 उद्धरण 41.

49 उद्धरण 60.

50 उद्धरण 66.

51 उद्धरण 64.

52 उद्धरण 38.

53 उद्धरण 60.

54 उद्धरण 18.

55 उद्धरण 38.

56 उद्धरण 66.

57 उद्धरण 67.

58 उद्धरण 67.

59 उद्धरण 8.

60 उद्धरण 35.

61 उद्धरण 61.

62 उद्धरण 63.

63 उद्धरण 63.

64 उद्धरण 64.

65 उद्धरण 64.

66 उद्धरण 78.

67 उद्धरण 64.

68 उद्धरण 65.

69 उद्धरण 64.

70 उद्धरण 70.

71 उद्धरण 66.

72 उद्धरण 20.

73 उद्धरण 22.

74 उद्धरण 50.

75 उद्धरण 48.

76 उद्धरण 66.

77 उद्धरण 66.

मशरिकुल-अज़्कार की संस्था

बहाउल्लाह और अब्दुल बहा के लेखों से चयनित अंशों, शोग़ी एफ़ेन्दी के लेखों और विश्व न्याय मन्दिर के पत्रों का एक संकलन

बहाउल्लाह के लेखों से

हे दुनिया के लोगो ! समस्त भू–भाग में उपासना मंदिरों की स्थापना करो, उसके नाम पर जो सभी धर्मों का प्रभु है। उन्हें इतना परिपूर्ण बनाओ, जितना अस्तित्व के संसार में सम्भव हो सकता है और उन्हें उनके योग्य वस्तुओं से सजाओ, मूर्तियों और प्रतिमाओं से नहीं और तब, आनन्दमग्न होकर, उनमें अपने सर्वाधिक दयावान प्रभु के गौरव का गान करो। सत्य ही, उसके स्मरण से आँखें प्रफुल्लित और हृदय प्रकाशित हो उठते हैं।

(किताब–ए–अकदसः परम पवित्र पुस्तक (विल्मेटः बहाई पब्लिशिंग ट्रस्ट, 1993, 2009 प्रिंटिंग), अनुच्छेद 31) (1)

धन्य है वह जो उषाकाल में ईश्वर पर ध्यान केन्द्रित किए हुए, उसके स्मरण में तल्लीन और उससे क्षमा–याचना करते हुए मशरिकुल–अज़कार की ओर कदम बढ़ाता है और उसमें जाकर सम्प्रभु, शक्तिमान, सर्वप्रशंसित ईश्वर के श्लोकों को सुनने के लिए मौन भाव से बैठता है। कहो : वह प्रत्येक भवन जो नगरों और गांवों में मेरे गुणगान के लिए निर्मित किया गया है, मशरिकुल–अज़कार है। महिमा के सिंहासन के सम्मुख यही नाम प्रदान किया गया है, काश ! तुम उनमें से होते जो समझते हैं !

(किताब–ए–अकदसः परम पवित्र पुस्तक, अनुच्छेद 115) (2)

अपने बच्चों को गरिमा और शक्ति के आकाश से प्रकट किए गए श्लोकों की शिक्षा दो ताकि वे मशरिक़–उल–अज़कार के कोश्ठों में अत्यंत मधुर स्वर से सर्वदयालु की पातियों का पाठ कर सकें। जो भी मुझ परम करुणावान के नाम के प्रति श्रद्धा से नत होकर असीम आनन्द से भर उठा है, वह ईश्वर के श्लोकों का इस तरह पाठ करेगा कि सुसुप्त हृदय भी मुग्ध हो उठेंगे। धन्य है वह जिसने मेरे नाम पर अपने दयालु प्रभु की वाणी रूपी अनन्त जीवनदायिनी रहस्यमयी मदिरा का पान किया है; वह नाम जिसकी शक्ति ने विशाल पर्वतों को भी धूल–धूसरित कर दिया है।

(किताब–ए–अकदसः परम पवित्र पुस्तक, अनुच्छेद 150) (3)

जहाँ तक तुम लोगों ने 'ता'[1] की भूमि में मशरिकुल–अज़कार की स्थापना किए जाने और इस सम्बंध में लिखा है कि ईश्वर की कृ पा से उसे अन्य स्थानों पर भी स्थापित किया गया है और किया जा रहा हैः इस विषय का उल्लेख उनकी पावन और परम उदात्त उपस्थिति में किया गया था, जिस पर 'दिवसाधिक प्राचीन' की वाणी ने यह उत्तर दियाः "धन्य है वह स्थल और वह गृह और वह स्थान और वह नगर और वह हृदय और वह पर्वत और वह आश्रय और वह गुफा और वह उपत्यका और वह भूमि और वह समुद्र और वह द्वीप और वह शस्यभूमि जहाँ उस परमेश्वर का उल्लेख हुआ है और उसके यश की महिमा गाई गई है।"

(अरबी और फारसी से अनूदित एक पाती से) (4)

मशरिकुल–अज़कार के सम्बंध में उस 'अप्रतिबाधित की वाणी' ने यह बात कही थी। महिमान्वित हो उसकी शक्ति और उदात्त हो उसका साम्राज्य! उसका कहना है :

"गुणगान करो तुम उसका जो विश्व की 'अभिलाषा' है
कि उसने अपने धर्म की सेवा में तुझे संपुष्ट किया है।

संसार के लोग उत्तेजित हैं, उपद्रव और विद्रोह व्याप्त हैं और सब 'उसके' प्रकाश को बुझाने उठ खड़े हुए हैं। किन्तु इसके बावजूद, तुम और और 'उसके' चुने हुए जन परमात्मा के उल्लेख और उसके स्मरण में सक्रिय रूप से निमग्न हो।

"इस भवन को अनन्त काल तक याद रखा जाएगा क्योंकि इसे उस एकमेव सत्य ईश्वर के नाम पर और उसके दिनों में खड़ा किया गया है, और उसे उसकी आज्ञा के आभूषण से अलंकृत किया गया है। वह जो कि 'अनन्त सत्य' है उससे याचना करो कि अपने धर्म की सेवा में वह प्रत्येक आत्मा को संपुष्टि प्रदान करे ताकि सब दृढ़ रह सकें और उसका अनुपालन कर सकें जो कि परमात्मा ने अपनी 'पुस्तक' में भेजा है।

"इस संसार की वस्तुएं कितनी व्यर्थ और क्षणभंगुर हैं! बहुत ही शीघ्र सब शून्य में लौट जाएंगे और केवल वही बचा रहेगा जिसे 'परम महान लेखनी' ने संकटों में सहायक, स्वयंजीवी, ईश्वर की आज्ञा से निर्दिष्ट किया है"

(एक पाती से – अरबी और फारसी से अनूदित) (5)

धन्य हैं वे जो उपासना मन्दिर के अन्दर स्वयं को 'उसके' स्मरण में निमग्न करते हैं जो सच्चरित्रों का प्रभु है! धन्य हैं वे जो इस 'मन्दिर' की सेवा के लिए उठ खड़े होते हैं! धन्य हैं वे जिन्होंने इस 'मन्दिर' को तैयार किया है! वे शांति और उत्कंठा की अवस्था में उसमें प्रवेश करते हैं और बड़ी अनिच्छा और पछतावे के साथ उस स्थान को छोड़कर निकलते हैं। ईश्वर से, अपरिमित रूप से महान है वह – वह जो हमारा प्रभु और तुम्हारा प्रभु है – हम याचना करते

हैं कि वह दृश्य और अदृश्य दोनों ही साधनों से तुम्हारी सहायता करे और तुम्हारे लिए वह सुनिर्दिष्ट करे जो तब तक बना रहे जब तक कि उसका नाम बना रहेगा – वह नाम जो अन्य सभी नामों को आच्छादित करता है। 'उसके' सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है – सदा क्षमाशील, सर्वदयालु।

(एक पाती से – अरबी और फारसी से अनूदित) (6)

मेरे जीवन और मेरे धर्म की सौगन्ध! ईश्वर के सखा जिस किसी आवास में प्रवेश करेंगे और जहाँ से प्रभु की स्तुति और महिमा–गान की उनकी पुकार मुखरित होगी उसके चारों ओर सच्चे धर्मानुयायियों और सभी कृपाप्राप्त देवदूतों की आत्माएँ परिक्रमा करेंगी। और यदि उनमें से कुछ जनों पर सच्ची दृष्टि का द्वार खुलेगा तो वे 'परमोच्च समूहों' को परिक्रमा करते और यह पुकारते सुनेंगेः "धन्य हो तुम हे घर! क्योंकि ईश्वर ने तुम्हें उनके लिए आश्रय–स्थल बनाया है जो उनका कृपापात्र है और उनके लिए एक निवास–स्थान जिन्हें उसने अपना प्रिय माना है, और उनका गृह जिनमें उसने अपना विश्वास संजोया है। तुझपर उसकी प्रशंसा विराजे, और उसकी गरिमा और उसकी अनन्त कृपा।"

(एक पाती से – अरबी और फारसी से अनूदित) (7)

अब्दुल बहा के लेखों से

मित्रों के लिए उपयुक्त है कि वे एक सभा, एक सम्मिलन आयोजित करें जहाँ वे परमात्मा का महिमा–गान करें और उसपर अपने हृदयों को केन्द्रित करें और 'आशीर्वादित सौन्दर्य' – काश कि मेरी आत्मा उनके प्रेमियों पर उत्सर्ग हो जाए – के पवित्र लेखों को पढ़ें और सस्वर पाठ करें। ऐसी दीप्त सभाओं पर 'सर्वमहिमामय लोक' के प्रकाश, 'परमोच्च क्षितिज' की किरणें, विकीर्ण होंगी, क्योंकि ये और कुछ नहीं मशरिकुल–अज़कार हैं, ईश्वर के स्मरण के उदय–स्थल जिन्हें, 'परम महान लेखनी' के निर्देशानुसार, हर गांव और नगर में स्थापित किया जाना है ..... ये आध्यात्मिक सभाएं अत्यंत पवित्रता और पावनता की भावना के साथ आयोजित किए जाएँ ताकि उस स्थल से, वहां की मिट्टी और हवा से व्यक्ति 'पावन चेतना' के सुवासित उच्छवास ग्रहण कर सकें।

(अब्दुल बहा के लेखों से चयन (विल्मेटः बहाई पब्लिशिंग ट्रस्ट, 1997, 2009 प्रिंटिंग, सं. 55.1) (8)

हे अब्दुल बहा के सच्चे मित्रों! इस क्षण मेरे विचार तुम्हारी ओर उन्मुख हैं। सूर्यास्त निकट आ रहा है और अनेक कठिनाइयों ने मुझे आराम से वंचित कर रखा है, फिर भी तुम लोगों के स्मरण ने मुझे अत्यधिक आनन्द से भर दिया है। इस तरह, मैं सदा–क्षमाशील ईश्वर की ओर उन्मुख हूं और उससे याचना कर रहा हूं कि वह अपनी सामर्थ्यमयी कृपा का प्रचुर अंश देकर तुम्हें सुदृढ़ करें।

मशरिकुल–अज़कार प्रकाशों का उदय–स्थल और सच्चरित्र लोगों का सम्मिलन–स्थल है। जब कभी अच्छे लोगों का समूह एक स्वर्गिक सभा में एकत्रित होता है और अभ्यर्थनाएं करता है, दिव्य श्लोकों का गान और विलक्षण स्वर–माधुर्य के साथ प्रार्थनाएं अर्पित करता है तो उच्च लोक के अंतरंग सखा ध्यान देते हैं और यह कहते हुए पुकार उठते हैं कि "प्रसन्न हैं हमः समस्त संसार को आनन्दित होने दो!" क्योंकि, ईश्वर का गुणगान हो, अपने प्रभु से वार्तालाप करने और पवित्रता की सभा में 'दिव्य एकता' के श्लोकों का गान करने के लिए 'गरिमा के साम्राज्य' के देवदूतों के बीच से लोग इस निम्न जगत में उठ खड़े हुए हैं। इससे बढ़कर और क्या कृपा हो सकती है ?

(एक पाती से – फारसी से अनूदित) (9)

हे अब्दुल बहा के मित्रों, और 'आतिथेयों के स्वामी' की सेवा में उनके सहभागी और हिस्सेदार! सत्य ही, आज के समय सबसे बड़ी बात और सबसे महत्वपूर्ण विषय है मशरिकुल–अज़कार की स्थापना और 'मन्दिर' का निर्माण जहाँ से स्तुति के स्वर उस भव्य प्रभु के साम्राज्य तक मुखरित हो सकें। धन्य हो तुम सब कि तुमने ऐसा विचार किया और ऐसा भवन खड़ा करने का अभिप्राय जताया, इस महान उद्देश्य और इस भव्य उपक्रम के लिए अपनी धन–सम्पत्ति समर्पित करने में सबको पीछे छोड़ दिया। शीघ्र ही तुम देखोगे कि संपुष्टि के देवदूत एक–एक करके तुम्हें सहायता देंगे और सुदृढ़ीकरण के समूह तेजी से तुम्हारी ओर बढ़ेंगे।

जब मशरिकुल–अज़कार बनकर तैयार हो जाएगा, जब उससे प्रकाश विकीर्ण होने लगेंगे और सच्चरित्र लोग वहाँ एकत्रित होंगे, जब दिव्य रहस्यों के 'साम्राज्य' के प्रति प्रार्थनाएं अर्पित की जाने लगेंगी और 'सर्वोच्च स्वामी' के प्रति महिमा–गायन के स्वर उभरने

लगेंगे, तब धर्मानुयायी आनन्दित हो उठेंगे और सदाजीवी एवं स्वयंजीवी परमात्मा के प्रेम से परिपूरित उनके हृदय उत्फुल्ल हो उठेंगे।

इस भवन की सेवा में जो लोग उठ खड़े होंगे उनमें से ऐसा कोई भी नहीं होगा जो कि ईश्वर द्वारा उसके सामर्थ्यमय साम्राज्य से निस्सृत शक्ति से सम्बलित नहीं होगा और उस व्यक्ति पर ऐसे आध्यात्मिक एवं स्वर्गिक आशीष बरसेंगे जो उसके हृदय को एक विलक्षण प्रकाश से भर देंगे और उसके नेत्रों को 'दिवसाधिक प्राचीन' की गरिमा को देख पाने का आलोक प्रदान करेंगे।

(एक पाती से – अरबी से अनूदित) (11)

हे तू जो संविदा में अडिग है! तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ और उसके आशय को सुस्पष्ट किया गया। तुमने ईश्वर के प्रियजनों द्वारा झलकाए गए उच्च प्रयास, परिश्रम और दृढ़संकल्प के बारे में लिखा है, मशरिकुल–अज़कार के निर्माण के लिए उनके अदम्य उत्साह और उनके आशीर्वादित लोगों द्वारा उसके लिए पत्थरों को ढोए जाने के बारे में। सचमुच, इस समाचार ने हृदयों को इतना आनन्दित किया कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता, क्योंकि इससे अत्यंत विनम्रता के साथ पत्थर ढोते और फिर भी स्वयं को दुनिया के राजाओं से भी अधिक उदात्त समझने वाले लोगों के समूह का चित्र खिंच जाता है।

(एक पाती से – फारसी से अनूदित) (12)

तुमने उपासना के स्थानों और उसके अंतर्निहित कारण के बारे में पूछा है। ऐसे भवनों को खड़ा किए जाने के पीछे यह विवेक छिपा है कि, एक सुनिश्चित घड़ी में, लोग यह जानें कि सम्मिलन का समय आ गया है और वहां सबको एकजुट होना चाहिए तथा एक–दूसरे के साथ समरस भाव से प्रार्थना में शामिल होना चाहिए,

जिसका परिणाम यह होगा कि इस एकत्रण से मानव–हृदय में एकता और प्रेम का विकास एवं पल्लवन होगा।

(अब्दुल बहा के लेखों से चयन, सं. 58.1) (13)

हमने सुना है कि तुम्हारे मन में अपने घर को समय–समय पर बहाइयों के सम्मिलन से सुशोभित करने का विचार है, जहाँ उनमें से कुछ 'सर्वमहिमामय प्रभु' के महिमा–गान में निरत होंगे ..... तू यह जान कि ऐसा करने से धरती का वह घर एक स्वर्गिक गृह बन जाएगा और पत्थरों की वह संरचना चेतना का एक समन्वय।

(अब्दुल बहा के लेखों से चयन, सं. 57.1) (14)

यदि ईश्वर ने चाहा तो भविष्य में .....असाधारण सौन्दर्य और गरिमा से सम्पन्न 'मन्दिरों' का निर्माण सभी प्रदेशों में किया जाएगा, जिनमें भव्यता और गरिमा इतने उत्कृष्ट अनुपात में संयोजित होंगी कि उसे देखना नयनाभिराम लगेगा।

(एक पाती से – फारसी से अनूदित) (15)

हालाँकि बाहरी तौर से देखने पर, मशरिकुल–अज़कार एक भौतिक संरचना है किन्तु फिर भी इसका एक आध्यात्मिक प्रभाव है। यह एक हृदय से दूसरे हृदय तक एकता के बन्धन की रचना करता है, यह मानव आत्माओं के लिए एक सामूहिक केंद्र है। वह हर शहर जहाँ, प्रकटावतार के दिनों में, मन्दिर का निर्माण किया गया, उसने सुरक्षा, स्थिरता और शांति का सृजन किया, क्योंकि इस तरह के भवन परमात्मा के सतत महिमा–गान के लिए समर्पित थे और हृदय को केवल ईश्वर के स्मरण में ही शांति प्राप्त हो सकती है। भव्य परमात्मा! जीवन के प्रत्येक पहलू पर उपासना मन्दिर के भवन का सशक्त प्रभाव पड़ता है। पूर्व में जो अनुभव प्राप्त हुए हैं वे इसे सत्य प्रमाणित करते हैं। यहाँ तक कि अगर किसी छोटे–से गांव में भी

किसी घर को मशरिकुल–अज़कार निर्धारित किया गया तो इसका उल्लेखनीय प्रभाव देखने को मिला, तो फिर खासतौर पर बनाए गए मशरिकुल–अज़कार का प्रभाव कितना ज्यादा होगा!

(अब्दुल बहा के लेखों से चयन, सं. 60.1) (16)

मशरिकुल–अज़कार के अभिरक्षक, ज़नाब–ए–कर्बला' ए मुहम्मद–हाज़ी, मेरे स्वामी हैं। दूसरे शब्दों में, मैं उनका सेवक हूं, क्योंकि वे 'आशीर्वादित सौन्दर्य' के सेवक हैं। वे मशरिकुल–अज़कार की सतह बुहारते हैं। यह दासता नहीं है, यह तो सम्प्रभुता है। वे जो सेवा कर रहे हैं वह कोई साधारण बात नहीं हैः नहीं, बल्कि यह ईश्वर की उदार कृपा है, शुद्ध और सच्ची कृपा।

(एक पाती से – फारसी से अनूदित) (17)

मशरिकुल–अज़कार दुनिया की सबसे महत्वपूर्ण संस्थाओं में से एक है और इसकी अनेक सहायक शाखाएँ हैं। हालाँकि यह एक उपासना मन्दिर है लेकिन यह अस्पताल, औषधालय, यात्री विश्रामालय, अनाथों के लिए विद्यालय, और उन्नत अध्ययन के लिए विश्वविद्यालय जैसी संस्थाओं से भी जुड़ा हुआ है। हर मशरिकुल–अज़कार इन पांच चीजों से जुड़ा है। मेरी आशा है कि अब अमेरिका में मशरिकुल–अज़कार की स्थापना कर ली जाएगी और यह कि अत्यंत प्रभावी और सुव्यवस्थित प्रक्रियाओं के मुताबिक, क्रमिक रूप से अस्पताल, विद्यालय, विश्वविद्यालय, औषधालय और विश्रामालय भी अस्तित्व में आ जाएंगे। ये बातें ईश्वर के प्रियजनों को बता दो ताकि वे यह समझ सकें कि "ईश्वर के स्मरण के इस उदय–स्थल" का महत्व कितना ज्यादा है। 'मन्दिर' केवल उपासना का स्थान नहीं है, बल्कि हर दृष्टिकोण से यह समग्र और सम्पूर्ण है।

(अब्दुल बहा के लेखों से चयन, सं. 64.1) (18)

जब कभी लोगों का कोई समूह किसी सम्मिलन–स्थान पर एकत्रित होगा, ईश्वर के महिमा–गान में निरत होगा, और एक–दूसरे से ईश्वर के रहस्यों के बारे में चर्चा करेगा तो इसमें कोई संदेह नहीं कि 'पवित्र चेतना' के उच्छवास उन पर प्रवाहित होंगे और हर किसी को उसका अंशदान प्राप्त होगा।

(अब्दुल बहा के लेखों से चयन, सं. 56.1) (19)

तुम्हारा पत्र और मशरिकुल–अज़कार के लिए तुम्हारी दो योजनाएँ प्राप्त हुईं। दोनों ही योजनाओं की समीक्षा की गई और उनसे हृदय आनन्दित हुए। ईश्वर के प्रियजन और उसकी सेविकाएं – उनमें से प्रत्येक – तुम्हारी प्रशंसा करने में निरत हुए। तथापि, मशरिकुल–अज़कार की रूप–रेखा के सम्बंध में तुम्हें आध्यात्मिक सभा के सदस्यों के साथ परामर्श करना चाहिए ताकि तुम सब मिलकर किसी निर्णय पर पहुंच सको। सभी विषयों को एकता और सहमति का साधन बनाया जाना चाहिए ताकि ईश्वर के प्रियजनों के बीच बन्धुता और सौहार्द दिनोंदिन बढ़ता चला जाए।

और अब, स्वयं मशरिकुल–अज़कार के इस प्रसंग को इस तरह कार्यान्वित किया जाना चाहिए कि उससे मित्रों के बीच एकता और सद्भावना का विकास हो। अर्थात, पहले तो तुम सबको परस्पर परामर्श करना चाहिए, और उसके बाद एक योजना तैयार करनी चाहिए। यदि तुम इन चरणों का पालन करोगे तो दिव्य सम्पुष्टियाँ तुम्हें सतत रूप से प्राप्त होती रहेंगी। अश्काबाद में मित्रों ने मशरिकुल–अज़कार के निर्माण को पूर्ण बंधुता स्थापित करने का माध्यम बनाया। अत्यंत प्रेम और निष्ठा के साथ उन्होंने एक समिति का गठन किया और उस समिति ने मशरिकुल–अज़कार की स्थापना, सुगठन, व्यवस्थापन और रूपरेखा जैसी बातों पर ध्यान दिया। दिन–प्रतिदिन उन्हें दिव्य सम्पुष्टियाँ प्राप्त होती गईं और – ईश्वर

की स्तुति हो – उसका निर्माण अत्यंत ही उत्कृष्ट और भव्य तरीके से हुआ।

(एक पाती से – फारसी से अनूदित) (20)

सत्य ही, शुद्ध और प्रकाशित हृदय परमात्मा के स्मरण के वे उदय–स्थल हैं जहाँ से प्रार्थना और अभ्यर्थना के स्वर–माधुर्य निरंतर उच्च लोक के प्रांगण तक पहुंचते रहते हैं। मैं ईश्वर से याचना करता हूं कि तुममें से प्रत्येक के हृदय को वे एक दिव्य मन्दिर बना दें जिसमें 'महानतम मार्गदर्शन' का प्रदीप झिलमिलाता रहे। यदि हृदयों को इस तरह की कृपा प्राप्त हो जाए तो वे निश्चित रूप से अत्यधिक प्रयासरत हो उठेंगे और मशरिकुल–अज़कार के निर्माण के लिए पूर्ण रूप से दृढ़प्रतिज्ञ हो जाएंगे, ताकि बाहरी संरचना आंतरिक यथार्थ को झलका सके और बाहरी रूपरेखा आभ्यंतरिक अर्थ को प्रबल बना सके।

(एक पाती से – फारसी से अनूदित) (21)

हे पूरब और पश्चिम के मित्रगणों! ईश्वर के धर्म की आधारशिलाओं, ईश्वर के शब्द की आंतरिक महत्ताओं और प्रभु के सखाओं के कर्तव्यों में से सबसे बड़ा है आपसी सहयोग और सहायता क्योंकि यह मानवलोक ही नहीं बल्कि अस्तित्व के संसार में पाई जाने वाली असंख्य वस्तुएं इसी पर निर्भर हैं। यदि सृष्टि की वस्तुओं के बीच आपसी सहायता और सहयोग न हो तो यह अस्तित्व का संसार बिल्कुल ही विखण्डित हो जाएगा.....

जीवन और अस्तित्व का आधार है सहयोग एवं पारस्परिक सहायता जबकि विनाश और विघटन का कारण है सहयोग और सहायता का रुक जाना। अस्तित्व का लोक जितना ही ऊँचा होगा, सहयोग और सहायता का यह महत्वपूर्ण विषय उतना ही अधिक प्रबल

और आवश्यक हो जाता है। अतः, मानवजाति के लोक में अस्तित्व के अन्य लोकों की तुलना में सहयोग एवं आपसी सहायता अपनी परिपूर्णता के और अधिक बड़े पैमाने पर होती है – इतना अधिक कि मानवजाति का जीवन ही पूर्णतः इस सिद्धान्त पर आश्रित है। खासतौर पर, प्रभुधर्म के मित्रों के बीच यह मजबूत आधार इतना सुदृढ़ होना चाहिए कि हर व्यक्ति सभी विषयों में दूसरे की सहायता करे – चाहे वे आध्यात्मिक यथार्थ और आंतरिक सच्चाइयों से सम्बंधित बातें हों या जीवन के भौतिक–शारीरिक विषयों से सम्बंधित। सभी लोगों के लाभ के लिए स्थापित की जाने वाली सार्वजनिक संस्थाओं और खासतौर पर मशरिकुल–अज़कार के प्रसंग में जो कि दिव्य आधारशिलाओं में महानतम है, विशेषतौर पर यही बात लागू होती है।

(एक पाती से – फारसी से अनूदित) (22)

तुमने लिखा है कि मित्र लोग मशरिकुल–अज़कार के खर्च में अपना अंशदान देना चाहते हैं। इस समाचार से अत्यधिक प्रसन्नता हुई क्योंकि मानव–जगत में एकता, बंधुता और सौहार्द का बन्धन कायम करने की दिशा में ईश्वर की कृपा की स्वर्गिक फुहारें और उसकी अचूक सम्पुष्टियाँ प्राप्त होती हैं। इसलिए, पूरब के मित्र धन एकत्रित करके पश्चिम को भेजने का जो सुयोग्य कार्य कर रहे हैं वह बहुत ही प्रशंसनीय, उत्तम और इस धर्मयुग के विशिष्ट लक्षणों में से एक है। अतीत में पहले कभी ऐसा नहीं सुना गया कि पूरब ने पश्चिम को कोई भौतिक सहायता दी हो – अर्थात फारस के मित्रों द्वारा अमेरिका में मशरिकुल–अज़कार बनाए जाने के कार्य में सहयोग देना। यह अपने किस्म का पहला अवसर है, इसके परिणाम निश्चित रूप से प्रशंसनीय होंगे।

मानवजाति को बंधुता और समरसता के ऐसे बन्धनों का वरदान देने, ऐसी शक्तिशाली आधारशिला स्थापित करने और ऐसी

उच्च आकांक्षा के संवर्द्धन के लिए 'पुरातन सौन्दर्य' का गुणगान हो। विश्व के हृदय–मध्य में ऐसे चंदोवे के उच्च प्रसार के लिए आभार हो 'महानतम नाम' के प्रति, जिसके माध्यम से धरती के विभिन्न राष्ट्र एक हो जाएंगे और एक–दूसरे के साथ मित्रतापूर्वक सहयोग करेंगे, दुनिया के भिन्न–भिन्न राष्ट्र एक देश बन जाएंगे और उनके विभिन्न भूभाग एक मातृभूमि, विभिन्न सरकारें एकता और सौहार्द के सूत्र में बंध जाएंगी, अन्याय की जड़ें समाप्त कर दी जाएंगी तथा युद्ध, संघर्ष, लूटमार, घृणा और शत्रुता के आधार नष्ट कर दिए जाएंगे। पूरब और पश्चिम के बीच यह सहयोग और सहकार्य इस बात का पर्याप्त और अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत करता है कि इस महान उद्देश्य को प्राप्त कर लिया जाएगा।

(एक पाती से – फारसी से अनूदित) (23)

हे तू जो संविदा में सुदृढ़ है! मशरिकुल–अज़कार का निर्माण शीघ्र पूरा होने जा रहे का शुभ समाचार और उसके साथ ही, उसके उद्यानों की व्यवस्था और बहुत ही जल्द उसके फव्वारों के चालू होने के समाचार भी, असीम रूप से आनन्ददायक थे। मशरिकुल–अज़कार सचमुच ही महान प्रसन्नता और आनन्द का स्थल बनेगा। उसकी संरचना की मजबूती और भव्यता, उसके रास्ते का सुव्यवस्थित विकास, फूलों की क्यारियों की रूपरेखा, उसके फव्वारों का प्रवाह, उसके पेड़–पौधों की हरियाली, उसमें बहती हुई ताजी हवा और उसके रूप–रंग का आकर्षण एवं सौन्दर्य – ये सब मिलकर अत्यंत ही आनन्द भरे एक स्वर्ग की रचना करते हैं। यह सचमुच ही बहुत अनुपम होगा।

(एक पाती से – फारसी से अनूदित) (24)

मशरिकुल–अज़कार इस निम्न लोक में एक दिव्य भवन तथा मानवजाति की एकता प्राप्त करनेका एक साधन है, क्योंकि दुनिया के

सभी लोग मशरिकुल–अज़कार में सौहार्द और बंधुता के साथ एकत्रित होंगे और, दिव्य एकता के गान गाते हुए, वे 'आतिथेयों के स्वामी' की स्तुति और उसके महिमा–गान में निरत होंगे। निस्संदेह, दिव्य मार्गदर्शन का प्रकाश बिखेरने में ही आनन्द है।

(एक पाती से – फारसी से अनूदित) (25)

अमेरिका में पहले मशरिकुल–अज़कार की स्थापना शिकागो में हुई थी, और इस सम्मान एवं विशिष्टता का मोल असीम है। निस्संदेह, इस मशरिकुल–अज़कार से हजारों अन्य मशरिकुल–अज़कारों का जन्म होगा।

(दिव्य योजना की पातियां (विल्मेटः बहाई पब्लिशिंग ट्रस्ट, 1993, 2006 प्रिंटिंग), पृ॰ 78) (26)

तुम्हारा 23 नवंबर 1918 का पत्र प्राप्त हुआ। ईश्वर की स्तुति हो, उसकी विषय–वस्तु का अभिप्राय यह था कि तुम मशरिकुल–अज़कार की सेवा में जुटे हुए हो ताकि यह सार्वजनिक भवन स्थापित किया जा सके। वास्तव में, इस सम्बंध में तुमने घोर प्रयास किए हैं और मैं यह आशा संजोए हुए हूँ कि यह प्रयास दिनोंदिन तेज होता जाएगा। कर्म पेड़ की तरह होते हैं। पेड़ रोपना आसान है, लेकिन जब तक वह फल देने लायक न हो जाए तब तक उसे पालना–पोसना बड़ा कठिन है। अभी तक मन्दिर की आधारशिलाएं रखने के लिए प्रयास किए गए हैं मगर उसे पूर्णता तक लाना एक कठिन काम है। मेरी आशा है कि ईश्वर के सखाओं को इस काम में सहायता मिले।

(एक पाती से – फारसी से अनूदित) (27)

हे संविदा और ईश्वर के प्रमाण में सुदृढ़ जनों! तुम्हारा वह नोटबुक जिसमें मशरिकुल–अज़कार और उसकी उप–संस्थाओं –

जिनमें एक अस्पताल, विद्यालय, एक होस्टल और कमजोर एवं गरीब लोगों के लिए घर शामिल हैं – की स्थापना सम्बंधी तुम्हारी योजनाएँ और उनके अलावा उनके नाम अंकित हैं जिन्होंने इस उपक्रम के लिए कोष में दान दिया है, प्राप्त हुआ और उसे पढ़ा गया। परमात्मा की स्तुति हो कि उसने आशीर्वादित आत्माओं को उठ खड़े होने और ऐसे महत्वपूर्ण काम को अंजाम देने और एक ऐसे भवन की आधारशिला रखने में सहायता दी है जो अनन्तकाल तक रहेगा, जिसके उच्च शिखर आकाश की चोटियों तक पहुंचेंगे।

हालाँकि उपासना मन्दिर का निर्माण धरती पर किया जाता है लेकिन यथार्थ रूप में यह 'उच्च लोक' की संस्था है और इसलिए कहा जा सकता है कि इसके शीर्ष स्वर्ग की ऊँचाइयों तक पहुंचेंगे। ईश्वर के प्रति आभार प्रकट करो कि तुम लोग ऐसी महत्वपूर्ण सेवा देने उठ खड़े हुए हो, क्योंकि इस युग और इस सदी में मशरिकुल–अज़कार की स्थापना अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। ये भवन मित्रों को दृढ़ता और स्थिरता प्रदान करेंगे। ये 'उसकी' गरिमा की दहलीज पर अभ्यर्थना और आह्वान करने के स्थान हैं और वे प्रभु की मधुर सुरभियों के प्रसार के सर्वोत्तम साधन हैं। इन दिवसों में, मशरिकुल–अज़कार या उसकी आश्रित संस्थाओं में से किसी भी एक के लिए केवल एक ईंट की बुनियाद रखना भी एक उत्तुंग भवन के निर्माण के समतुल्य है। अतः, मैं प्रभु के प्रियजन के लिए अत्यंत ही खुश हूँ कि कि वह ऐसी आवश्यक एवं महत्वपूर्ण सेवा करने में सफल हुआ है। मुझे आशा है कि यह संरचना अत्यंत ही सुन्दरता और शक्ति से सम्पन्न होकर स्थापित होगी और क्रमिक रूप से उसकी आश्रित संस्थाओं का निर्माण भी पूरा होगा।

(एक पाती से – फारसी से अनूदित) (28)

.....विचार करो कि वह पावन चेतना, वह सम्पुष्ट आत्मा, हाजी मिर्ज़ा मुहम्मद–तकी अफ़नान, किस तरह इस महान धर्म की सेवा के लिए उठ खड़ा हुआ। यज़्द में अपने सुख और आराम की ज़िन्दगी का परित्याग करते हुए वह प्रभुधर्म का कार्य करने शीघ्रता से अश्काबाद की ओर चल पड़ा। मशरिकुल–अज़कार की देखभाल में उसने कैसे आत्मत्याग का परिचय दिया! उसने अपना जीवन पूर्णतः इस कार्य के लिए समर्पित कर दिया, जब तक कि वह उस भूमि पर प्रथम मशरिकुल–अज़कार की स्थापना में सफल नहीं हो गया। सचमुच उसकी सेवा कितनी असाधारण थी, क्योंकि ईश्वर के नाम पर संस्थापित यही पहला मशरिकुल–अज़कार है। तथापि, भविष्य में सैकड़ों–हजारों मशरिकुल–अज़कार गरिमा, सम्मान और अत्यंत भव्यता के साथ खड़े किए जाएंगे। अश्काबाद के मशरिकुल–अज़कार को एक माता का रुतबा प्राप्त है और अन्य मशरिकुल–अज़कार उससे उत्पन्न आध्यात्मिक शिशुओं की तरह होंगे।

(एक पाती से – फारसी से अनूदित) (29)

हे ईश्वर के प्रियजनों! समाचार प्राप्त हुआ कि मशरिकुल–अज़कार की स्थापना कर ली गई है, यह कि उस भू पर परमात्मा की स्तुति और उसका महिमा–गान 'महिमा के साम्राज्य' तक जा पहुंचा है और उपासना के स्वर–माधुर्य तथा उस महिमामय 'प्रियतम' के गुणगान उच्च लोक के समूहों तक पहुंचे हैं। इन शुभ समाचारों से कितना असीम आनन्द, कितनी प्रसन्नता की प्राप्ति हुई, क्योंकि मशरिकुल–अज़कार मित्रों को जागृत करता है, परमात्मा का स्मरण दिलाता है और उन्हें प्रार्थना की विनम्र स्थिति में लाता है। मशरिकुल–अज़कार हृदयों को प्रकाशित करता है, आत्माओं को आध्यात्मिक बनाता है, और उन्हें 'महिमा के साम्राज्य' की सुरभियों का आस्वाद ग्रहण कराता है। इस तरह मानव–जगत एक अन्य ही

संसार में बदल जाता है, और हृदयों की संवेदनशीलता इतनी उदात्त हो उठती है कि वे सम्पूर्ण विश्व को आच्छादित कर लेते हैं। मेरी आशा है कि एक मशरिकुल–अज़कार की स्थापना हर हिस्से, देश के हर कोने में होनी चाहिए, भले ही यह कार्य अत्यंत ही विवेकशीलता से और अच्छी तरह देख–परख के बाद क्यों न करना पड़े, और उस समय तक जब तक कि उसकी ख्याति से असावधान लोगों के बीच आशंका और खलबली मचना न बंद हो जाए, बुद्धिमत्ता की खातिर वह ईश्वर के प्रियजनों में से कुछ चुने हुए विश्वासपात्र मित्रों तक ही क्यों न सीमित हो।

हे ईश्वर के प्रियजनों! देखो कि जब तुम चेतना की उस सम्मिलन–स्थली में एकत्रित होओगे, प्रभातकाल[1] में स्वयं को परमात्मा के स्मरण में तल्लीन करोगे और प्रार्थनाओं का पाठ करने के बाद तुम सब मिलकर अपने सुमधुर स्वरों में 'परम कृपालु परमेश्वर' का उल्लेख करोगे तो उससे कितनी प्रचुर ताजगी, आध्यात्मिकता और प्रकाश की प्राप्ति होगी। ये स्वर–माधुर्य 'महिमा के साम्राज्य' तक पहुंचेंगे, और ये गान उच्च लोक के सहचरों को आह्लादित करेंगे।

(एक पाती से – फारसी से अनूदित) (30)

मशरिकुल–अज़कार दिव्य सम्पुष्टियों को आकर्शित करने वाला चुम्बक है। मशरिकुल–अज़कार परमेश्वर की सुदृढ़ आधारशिला है। मशरिकुल–अज़कार की स्थापना 'ईश्वर के शब्द' को उदात्त बनाने का साधन है। उससे उत्पन्न स्तुति और महिमा–गान हर सच्चरित्र व्यक्ति के हृदय को प्रफुल्ल कर देते हैं। मशरिकुल–अज़कार से आने

1 परम पवित्र पुस्तक 'किताब–ए–अकदस' के प्रश्नोत्तर सं. 15 में बहाउल्लाह स्पष्ट करते हैं कि "प्रभात–काल" से तात्पर्य है "दिन का अहले–सुबह का समय, उषाकाल और सूर्योदय के बीच की बेला, और यहाँ तक कि सूर्योदय से दो घंटे बाद तक का समय"

वाली पावन सुरभियाँ धर्मपरायण लोगों की आत्माओं को जीवन्त बना देती हैं, और उसकी नवजीवनकारी हवाएँ शुद्ध हृदय के लोगों पर जीवन का संचार करती हैं। प्रभात–काल की ज्योतिर्मय किरणों की तरह, मशरिकुल–अज़कार के प्रदीप क्षितिजों को आलोकित करते हैं। मशरिकुल–अज़कार की मधुरता उच्च लोक के सहचरों की आत्माओं में आह्लाद भर देती है और उसके अन्दर 'उसकी' दिव्य एकता के श्लोकों का पाठ 'महिमा के साम्राज्य' के अंतःवासियों को आनन्द–विभोर कर देता है।

आज के युग में, ईश्वर की पावन दहलीज पर अर्पित की जाने वाली सबसे बड़ी बात और सबसे परम सेवा है मशरिकुल–अज़कार की स्थापना। .....इसका उद्देश्य यह है कि ईश्वर के प्रियजनों को चाहिए कि वे, अत्यंत विवेकशीलता का परिचय देते हुए, उसमें प्रार्थना तथा ईश्वर की आराधना, ईश्वर के श्लोकों और उसके शब्दों के पाठ तथा सर्वदयालु परमेश्वर का महिमा–गान करते हुए स्वर्गिक गानों को मधुर स्वर में पढ़ने के कार्यों में संलग्न हों।

(एक पाती से – फारसी से अनूदित) (31)

हे बहा के सेवक! सर्वशक्तिमान की दहलीज पर संगीत को एक प्रशंसनीय विज्ञान माना गया है। अतः बड़ी सभाओं और अधिवेशनों में तुम अत्यंत सुमधुरता के साथ श्लोकों का गान कर सकते हो और मशरिकुल–अज़कार में स्तुति के ऐसे गायन गा सकते हो जो उच्च लोक के सहचरों को आनन्द–विभोर कर दें। इससे तुम समझ सकते हो कि संगीत–कला की कितनी प्रशंसा और सराहना की गई है। यदि हो सके तो आध्यात्मिक माधुर्य, गीतों और धुनों का प्रयोग करने और सांसारिक संगीत में स्वर्गिक माधुर्य घोलने का प्रयास करो। तब तुम यह महसूस करोगे कि संगीत का असर कितना महान होता है और उससे कितने स्वर्गिक आनन्द और जीवन का संचार होता है।

ऐसी धुन और मधुरता का निनाद करो कि स्वर्गिक रहस्यों के कोकिल आनन्द और भाव–विह्वलता से भर उठें।

(एक पाती से – फारसी से अनूदित) (32)

वस्तुतः, मैंने सच्चे हृदय से ईश्वर को धन्यवाद दिया है कि मित्रों की गरीबी और अकिंचनता के बावजूद मशरिकुल–अज़कार, जिसके स्तम्भ बहुत ही शीघ्र अमेरिका के बीचोंबीच खड़े कर दिए जाएंगे, में दान देने के कार्य में उसने उन्हें सहायता पहुंचाई है।

(एक पाती से – अरबी से अनूदित) (33)

हे अब्दुल बहा के सच्चे मित्र! तुम्हारी सबसे उत्कट अभिलाषा थी मशरिकुल–अज़कार को तैयार किया जाना और उसकी संस्थापना। हर वस्तु का एक निर्धारित समय होता है – और ईश्वर की स्तुति हो कि मशरिकुल–अज़कार के निर्माण का समय अब आ गया है! इसलिए महानतम प्रयास किया जाना चाहिए कि यह शक्तिशाली भवन ठोस और सुदृढ़ रूप में खड़ा किया जाए, उत्कृष्टता और भव्यता के साथ। यह 'पवित्र दहलीज' की एक महान सेवा है जिसकी ख्याति पावनता के साम्राज्य में उच्च लोक के सहचरों को अनन्त काल तक आह्लादित करती रहेगी।

(एक पाती से – फारसी से अनूदित) (34)

जहाँ तक मशरिकुल–अज़कार का सम्बंध है, यह अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। इसका उद्देश्य यह हैः एक स्थान निर्धारित किया जाना चाहिए, भले ही यह धरती की परतों और पत्थरों के नीचे बना एक छोटा–सा स्थान ही क्यों न हो, और उसे विवेकपूर्वक प्रच्छन्न एवं छिपा हुआ रखा जाना चाहिए ताकि शरारती तत्वों की शत्रुता न उकसाने लगे। सप्ताह में कम से कम एक बार, वहाँ ऐसे चुनिन्दा मित्रों का सम्मिलन होना चाहिए जिन्होंने निगूढ़ तत्वों को जान लिया

है और जो दिव्य रहस्यों के अंतरंग सखा बन गए हैं। यह चाहे कैसा भी रूप ले सकता है, क्योंकि एक तहखाना जैसा होने के बावजूद वह गुहा एक आश्रयदायक स्वर्ग, एक प्रशंसित कुंज, एक आनन्द–वाटिका बन जाएगी। यह एक ऐसा केंद्र बन जाएगा जहाँ चेतनाओं को आनन्द प्राप्त होगा और हृदय आभा साम्राज्य की ओर आकर्षित होंगे।

(एक पाती से – फारसी से अनूदित) (35)

जहाँ तक मशरिकुल–अज़कार की रूपरेखा का प्रश्न है: उसे अश्काबाद के मशरिकुल–अज़कार जैसा होना चाहिए। अर्थात, यह नौमुखी भवन होना चाहिए और उसका निर्माण इस तरह से किया जाना चाहिए कि वह अत्यधिक आध्यात्मिकता, गरिमा, उच्चता, परिष्कार और भव्यता झलकाए – इस तरह कि वह एक आकर्षण भरा स्थान बन सके। यथासम्भव, उस स्थल की मनोरम्यता, ताजगी और सुन्दरता सुनिश्चित करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

(एक पाती से – फारसी से अनूदित) (36)

शोग़ी एफ़ेन्दी के लेखों से

समय गुजरने के साथ, बहाई संस्थाओं की चमक–दमक, आध्यात्मिकता, आभा, गरिमा और भव्यता को बढ़ाते हुए बढ़ेगी और इस धरती पर अत्यंत ही प्रत्यक्ष एवं ठोस रूप में 'उसके' धर्म की, जो सभी लोकों का प्रभु है, आधारभूत और असीमित चेतना की एक सुन्दर प्रतिकृति और चिरस्थायी अभिव्यक्ति के रूप में, मशरिकुल–अज़कार का उत्तुंग भवन बहाई पवित्र स्थानों के निकट और उसके आस–पास के स्थलों पर विकसित किया जाएगा।

(अनेक राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं को सम्बोधित अगस्त 1927 के एक पत्र से – फारसी से अनूदित) (37)

यह याद रखा जाना चाहिए कि मशरिकुल–अज़कार के केन्द्रीय भवन को, समय आने पर जिसके इर्द–गिर्द पीड़ितों को सहायता, गरीबों को सहारा, यात्रियों को आश्रय, वंचितों को सांत्वना और अशिक्षितों को शिक्षा देने जैसी सामाजिक सेवाओं से जुड़ी संस्थाओं का समूह होगा, इन आश्रित संस्थाओं के अतिरिक्त एक 'मन्दिर' समझा जाना चाहिए जो, किताब–ए–अकदस में बहाउल्लाह द्वारा प्रणीत थोड़े–से किन्तु स्पष्ट रूप से संस्थापित सिद्धान्तों के अनुसार, ईश्वर की उपासना के लिए खासतौर पर निर्मित और इस उद्देश्य के लिए पूर्णतः समर्पित होगा। लेकिन इस सामान्य वक्तव्य से यह अनुमान नहीं लगा लेना चाहिए कि मुख्य भवन के आंतरिक भाग को

ऐसे धार्मिक कर्मकाण्डीय सेवा–समूहों को प्रस्तुत करने के परिवर्तित कर दिया जाएगा जैसा कि गिरजाघरों, मस्जिदों, यहूदी उपासना–गृहों तथा अन्य उपासना मन्दिरों से जुड़ी पारम्परिक विधियों में हुआ करता है। उसके विभिन्न विधि–विधानों में, जो कि सब के सब उसके गुम्बद तले मुख्य हॉल की ओर केन्द्रित होंगे, उन कट्टर एवं मानव–निर्मित विश्वासों में आस्था रखने वाले पंथवादी श्रद्धालुओं को प्रवेश प्राप्त नहीं होगा जिनमें से हर कोई, बहाउल्लाह के विश्व उपासना मन्दिर में, अपने–अपने तरीके से अपने–अपने कर्मकाण्डों का पालन करने, प्रार्थना करने, अपने शुद्धिकरण करने या अपने धर्म के विशेष संकेतों को प्रदर्शित करने पर आमादा होंगे। मशरिकुल–अज़कार द्वारा ऐसे असंगत एवं उलझनपूर्ण पंथीय संस्कारों और कर्मकाण्डों को प्रस्तुत किए जाने से कहीं दूर, जो कि अकदस के प्रावधानों के बिल्कुल अनुरूप नहीं है और न ही उसमें निहित भावना से ही जिसका कोई तालमेल है, मशरिकुल–अज़कार में स्थित केन्द्रीय बहाई उपासना मन्दिर अपनी पवित्र चारदीवारी के अन्दर, अपने प्रशान्त आध्यात्मिक वातावरण में, केवल ऐसे लोगों को एकत्रित करेगा जो विस्तृत एवं दिखावटी समारोह के ताम–झाम को सदा के लिए त्याग कर, एकमेव सत्य ईश्वर की आराधना की अभिलाषा रखते हैं, जो कि इस युग में बहाउल्लाह के व्यक्तित्व में प्रकट है। उनके लिए मशरिकुल–अज़कार बहाई धर्म में निहित इस आधारभूत सत्य को संकेतित करेगा कि धार्मिक सत्य निरपेक्ष नहीं बल्कि सापेक्ष है और दिव्य प्रकटीकरण अन्तिम नहीं बल्कि प्रगतिशील है। उनके मन में यह विश्वास होगा कि सबसे प्रेम करने वाला और सब पर सदा दृष्टि रखने वाले एक 'पिता' ने अतीतकाल में और मानवजाति के विकास के विभिन्न चरणों में अपने 'संदेशवाहकों' और अपने प्रकाश के प्रकटकर्ताओं के रूप में अपने अवतारों को भेजा है और सभ्यता के इस महत्वपूर्ण कालखण्ड में वह अपनी सन्तानों को उस मार्गदर्शन से वंचित नहीं रख सकता जिसकी इस अंधकारमय बेला में उन्हें इतनी आवश्यकता है और

जिस अंधकार को छिन्न–भिन्न करने में न तो विज्ञान की रोशनी सक्षम है और न ही मानवीय विवेक–बुद्धि। और इस तरह बहाउल्लाह को इस स्वर्गिक प्रकाश को विकीर्ण करने वाले 'स्रोत' के रूप में पहचान कर वे उनके 'मन्दिर' का आश्रय पाने, और उसकी परिधि में – कर्मकाण्डों और पंथवाद से बाधित हुए बिना – उस एकमेव सत्य ईश्वर के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के अदम्य आकर्षण का अनुभव करेंगे जो कि 'अनन्त सत्य के सार–तत्व का पुंज' है और 'उसके' संदेशवाहकों एवं अवतारों का महिमा–गान करने और उनके नाम का प्रसार करने के लिए उद्यत होंगे जिन्होंने अनादि काल से लेकर अब तक, विभिन्न परिस्थितियों और विविध पैमाने पर, इस अंधकारमय और पथभ्रमित विश्व के समक्ष स्वर्गिक मार्गदर्शन की ज्योति प्रतिबिम्बित की है।

किंतु इस उदात्त मन्दिर के मुख्य भवन में आयोजित बहाई उपासना की अवधारणा चाहे जितनी भी प्रेरणादायी हो, उसे उस भूमिका का न तो समग्र और न ही अनिवार्य, कारक समझा जा सकता जिस भूमिका को बहाई समुदाय के नैसर्गिक जीवन में निभाने के लिए, बहाउल्लाह के निरूपण के अनुसार, मशरिकुल–अज़कार को निर्दिष्ट किया गया है। मशरिकुल–अज़कार की उप–संस्थाओं के इर्द–गिर्द घूमते सामाजिक, मानवतावादी, शैक्षणिक, एवं वैज्ञानिक कार्यकलापों से वियुक्त होकर, उपासना मन्दिर – उसकी संकल्पना चाहे जितनी भी उदात्त हो, उसकी भावना चाहे जितनी भी उत्कंठापूर्ण हो – किसी संत के चिन्तन अथवा किसी निष्क्रिय आराधक के सत्संग जैसे तुच्छ एवं अक्सर क्षणिक साबित होने वाले उद्देश्यों से बढ़कर और अधिक कुछ भी पाने की आशा नहीं कर सकता। वह स्वयं उस आराधक को भी दीर्घ संतोष या लाभ प्रदान नहीं कर सकता, तो फिर मानवजाति को कहाँ से कर पाएगा, बशर्ते कि वह मानवजाति के निमित्त ऐसी गत्यात्मक एवं निस्पृह सेवा के रूप में रूपांतरित न हो जाए जिसे सम्वर्द्धित करना और सहज बनाना मशरिकुल–अज़कार की आश्रित संस्थाओं का परम ध्येय है। और न

ही मशरिकुल–अज़कार के दायरे में रहकर भविष्य के बहाई राष्ट्रकुल के मामलों का प्रशासन करने वाले लोगों के प्रयास – चाहे वे प्रयास कितने भी कठिन और निःस्वार्थ भाव से क्यों न हों – समृद्ध एवं फलीभूत हो सकेंगे जब तक कि उन प्रयासों को मशरिकुल–अज़कार के मुख्य भवन के चारों ओर केन्द्रित और उससे प्रतिबिम्बित होने वाली आध्यात्मिक एजेन्सियों के साथ घनिष्ठ एवं दैनिक अभिक्रिया की परिधि में नहीं ले आया जाएगा। मशरिकुल–अज़कार के केन्द्र के रूप में इस उपासना मन्दिर से निःसृत आध्यात्मिक शक्तियों तथा मानवजाति की सेवा के प्रति समर्पित उसके मामलों का संचालन करने वालों द्वारा सजग रूप से प्रदर्शित की गई ऊर्जाओं के बीच प्रत्यक्ष एवं सतत अभिक्रिया से कम कुछ भी संभवतया उन आवश्यक एजेन्सियों को उन व्याधियों के निराकरण में सक्षम नहीं बना सकेगी जो कि चिरकाल से और अत्यंत विकट रूप से मानवता को उत्पीड़ित करती आ रही हैं। क्योंकि कष्ट में पड़े हुए संसार की मुक्ति निश्चित रूप से एक ओर तो बहाउल्लाह के प्रकटीकरण की प्रभावशीलता के बारे में सजगता तथा दूसरी ओर उनके द्वारा प्रकट किए गए विधानों और सिद्धान्तों को बुद्धिमत्ता और पूरी निष्ठा से क्रियान्वित करने की नींव पर ही टिकी हुई है। और उनके पवित्र नाम से जुड़ी हुई समस्त संस्थाओं में, निश्चित रूप से, मशरिकुल–अज़कार के सिवा अन्य कोई भी संस्था बहाई उपासना एवं सेवा के अनिवार्य तत्वों को उतने पर्याप्त रूप से प्रदान नहीं कर सकता, और ये दोनों ही संसार के नवसृजन के लिए अत्यावश्यक हैं। बहाउल्लाह द्वारा संकल्पित महान संस्थाओं में से एक – मशरिकुल–अज़कार – की उदात्तता, क्षमता और विशिष्टता इसी बात में निहित है।

(सम्पूर्ण युनाइटेड स्टेट्स और कनाडा में 'प्रभु' के प्रियजनों और 'सर्वदयालु' की सेविकाओं को सम्बोधित 25 अक्टूबर 1929 के एक पत्र से, "बहाई ऐडमिनिस्ट्रेशन : सेलेक्टेड मैसेजेज 1922–1932 से। विल्मेट बहाई पब्लिशिंग ट्रस्ट, 1974, 1998 प्रिंटिंग), पृ. 184–86) (38)

मन्दिर के अन्दर किसी भी भाषा में प्रार्थना की जा सकती है। प्रार्थना करना बच्चों तक ही सीमित नहीं है। प्रार्थनाओं के पाठ में हल्के–फुल्के परिवर्तन की अनुमति है और मैं आपको यह सलाह दूंगा कि प्रकटित शब्दों को आप संगीत के रूप में ढालें जो मेरी समझ से काफी प्रभावी रहेगा। मैं प्रार्थना करूंगा कि 'प्रियतम' अपने धर्म की यह महान सेवा करने में आपको सहायता दें।

(शोग़ी एफ़ेन्दी की हस्तलिपि में, उनकी ओर से एक व्यक्तिगत बहाई को लिखे गए दिनांक 8 अप्रैल 1931 के एक पत्र में जोड़ा गया अंश) (39)

आपका देश और सम्पूर्ण विश्व जिस गंभीर वित्तीय एवं आर्थिक मंदी के दौर से गुजर रहा है उसके बावजूद अमेरिका के धर्मानुयायियों के सतत त्यागपूर्ण प्रयासों की मैं अत्यंत सराहना करता हूँ। यह कि मन्दिर के भवन का निर्माण ऐसी परिस्थितियों में हो और यह कि उसका विस्तृत एवं उत्कृष्ट अलंकरण–कार्य सम्पन्न हो और उनके आस–पास छाई निराशा, अनिश्चितता और जोखिमों के बावजूद ये कार्य मुट्ठी भर बहाई अनुयायियों द्वारा किए जाएं यह स्वयं ही बहाउल्लाह की रहस्यमय, सर्ववशकारी शक्ति का एक और प्रमाण है जिनके आशीर्वाद उन सबको प्रचुरता से प्राप्त होंगे जो उनके उद्देश्य को पूरा करने उठ खड़े होंगे। प्रभुधर्म अब अभूतपूर्व उपलब्धियों के कालखण्ड में प्रवेश कर रहा है। इसकी महिमा और शक्ति का पूरा पैमाना धीरे–धीरे उजागर होगा बशर्ते कि हम अपनी ओर से अपने प्रिय 'मास्टर' द्वारा दिए गए निर्देशों और आज्ञाओं को पूर्णतया क्रियान्वित करें।

(शोग़ी एफ़ेन्दी की हस्तलिपि में, उनकी ओर से युनाइटेड स्टेट्स एवं कनाडा की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को लिखे गए दिनाँक 20 दिसंबर 1931 के एक पत्र में जोड़ा गया अंश) (40)

जहाँ तक पूरब और पश्चिम के सुदूर बहाई समुदायों का प्रश्न है, जिनमें से ज्यादातर समुदायों को दिनोंदिन अधिकाधिक प्रतिबंधों

और अनाचारों का सामना करना पड़ रहा है और जिनमें से कोई भी उन दोहरे आशीर्वादों का अंश प्राप्त करने का दावा नहीं कर सकता जो कि विशेष रूप से निर्मित बहाई उपासना मन्दिर एवं पूर्णतः तथा प्रभावी रूप से कारगर प्रशासनिक व्यवस्था के माध्यम से निर्विवाद रूप से प्राप्त होते हैं, उनके लिए किसी एक ऐसे स्थान पर ध्यान केन्द्रित करना जिसे समुदाय के आध्यात्मिक जीवन का मुख्य–स्रोत कहा जाएगा और जिसे पहले ही उनके प्रशासनिक कार्यकलापों की मुख्य धारा के रूप में पहचाना गया है, इस पतनशील कालखंड में एक आदर्श बहाई समुदाय – एक ऐसा समुदाय जो दिव्य–निर्दिष्ट, नैसर्गिक रूप से एकसूत्रता में पिरोया हुआ, स्पष्ट दृष्टि वाला, जीवन्त है – के क्रमिक और सूक्ष्म अभ्युदय के एक अन्य चरण को संकेतित करता है – एक ऐसा समुदाय जिसका मुख्य उद्देश्य ईश्वर की उपासना और अपने बंधु–बांधवों की सेवा के दुहरे मार्गदर्शक सिद्धान्तों से निर्देशित होता है।

(शोग़ी एफ़ेन्दी की हस्तलिपि में, उनकी ओर से युनाइटेड स्टेट्स एवं कनाडा की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को लिखे गए दिनाँक 4 जुलाई 1939 के एक पत्र में जोड़ा गया अंश) (41)

मशरिकुल–अज़कार से, जिसे बहाउल्लाह ने 'किताब–ए–अकदस' में उपासना मन्दिर के रूप में निर्धारित किया है, अपनी–अपनी समितियों के सदस्यों सहित बहाई समुदायों के स्थानीय और राष्ट्रीय प्रतिनिधि, जब वे प्रभात काल में इसके प्रांगण में प्रतिदिन एकत्रित होंगे, तो उन्हें वह आवश्यक प्रेरणा प्राप्त होगी जिससे प्रभुधर्म के चुने हुए कर्णधारों के रूप में हज़ीरत–उल–कद्स – अर्थात उनके प्रशासनिक कार्यकलापों के आसन – में अपने दैनिक कार्यों और दायित्वों के निर्वहन में वे सक्षम होंगे।

('गॉड पासेज बाइ (विल्मेटः बहाई पब्लिशिंग ट्रस्ट, 1974, 2012 प्रिंटिंग), पृ॰ 539) (42)

मौजूदा ऊहापोह, चिन्ताओं, प्रतिद्वंद्विताओं और एक पतनशील सभ्यता की गिरावट को रेखांकित करने वाले संकटों के मध्य इस प्रतीक और बहाउल्लाह की विश्व–व्यवस्था – जो अभी भी अपने विकास की शैशवावस्था में है – के अग्रवाहक का उदय निस्संदेह इस धरती के सभी प्रायद्वीपों पर प्रभुधर्म के सतत विकास को अपार गतिमयता प्रदान करेगा और, अन्य किसी भी कार्य की तुलना में, एक अत्यंत ही संकटापन्न प्रायद्वीप के आध्यात्मिक रूप से दरिद्र, आर्थिक रूप से कष्ट में पड़े, सामाजिक रूप से बाधित और नैतिक रूप से विच्छिन्न जनसमूहों का ध्यान उसकी नवोदित संस्थाओं की ओर ज्यादा आकृष्ट करेगा।

(शोग़ी एफ़ेन्दी की हस्तलिपि में, उनकी ओर से जर्मनी और ऑस्ट्रिया की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को दिनाँक 25 जून 1954 में लिखे गए पत्र में जोड़ा गया अंश। "लाइट ऑफ गाइडेंस : दि मैसेजेज फ्रॉम द गार्ज़ियन ऑफ दि बहाई फेथ टु दि बहाइज ऑफ जर्मनी ऐंड ऑस्ट्रिया", खंड 1 (हॉफेम–लैंजेनहेनः बहाई–वरलैग, 1982), पृ. 219) (43)

शोग़ी एफ़ेन्दी की ओर से लिखे गए पत्रों से

दीप्त होने, गरिमा और ज्ञान, प्रफुल्लता और आध्यात्मिकता के संकेतों में से एक है प्रभात बेला में मशरिकुल–अज़कार में एकत्रित होना और उस भव्य एवं प्रकाशित 'मन्दिर' में प्रार्थनाएं और अभ्यर्थनाएं अर्पित करना। यह महत्वपूर्ण विषय है और इसके बहुत ही अच्छे परिणाम सामने आएंगे। प्रभातकाल में मशरिकुल–अज़कार में मित्रों की उपस्थिति मात्र से प्रभुधर्म की शक्ति प्रदर्शित होगी, ईश्वर के शब्द की क्षमता और प्रभावशीलता झलकेगी, दिव्य आज्ञाओं के प्रति हृदयों की अनुरक्ति प्रकट होगी और यह स्पष्ट रूप से आत्माओं का 'उसकी' एकमेवता की ओर उन्मुख होना दर्शाएगा। इस पवित्र कार्य की उपेक्षा और उसके प्रति उदासीनता दर्शाने की अनुमति कदापि नहीं है।

(अश्काबाद के बहाइयों को लिखित 13 दिसंबर 1928 का एक पत्र – फारसी से अनूदित) (44)

जहाँ तक मन्दिर के सभागृह में आयोजित होने वाली सभाओं की प्रकृति का प्रश्न है, वे यह महसूस करते हैं कि उन्हें विशुद्ध रूप से भक्तिपरक प्रकृति का होना चाहिए और बहाई सम्बोधनों और व्याख्यानों को कठोरता से अपवर्जित किया जाना चाहिए। वर्तमान समय के लिए, उन्हें लगता है कि 'फाउंडेशन हॉल' में बहाई सभाएँ – जिनमें 'अधिवेशन' सम्बंधी संबोधन और कार्यसत्र भी शामिल हैं –

आयोजित करने में कोई आपत्ति नहीं होगी। शोग़ी एफ़ेन्दी यह आग्रह करेंगे कि सभागार में स्त्रियों, पुरुषों और बच्चों द्वारा समूह–गान को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और बहाई सेवा में किसी भी तरह की सख़्ती से पूरी तरह बचा जाना चाहिए। मन्दिर में बहाई उपासना का चरित्र जितना ही व्यापक और अनौपचारिक होगा उतना ही बेहतर। 'महानतम नाम' के चित्र के अलावा अन्य किसी भी तरह के चित्रों और छवियों को कठोरता से अपवर्जित किया जाना चाहिए। बहाउल्लाह और प्रिय मास्टर (अब्दुल बहा) द्वारा प्रकटित प्रार्थनाएं और अवतारों द्वारा प्रकटित पवित्र लेखों का पाठ या गान किया जाना चाहिए और साथ ही बहाई या गैर–बहाई पवित्र लेखों पर आधारित गीतों का।

(संयुक्त राष्ट्र और कनाडा की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को लिखित 11 अप्रैल 1931 के पत्र से) (45)

उन्हें अत्यंत ही आशा है कि 'मन्दिर' का दृश्य और वह जिन सिद्धान्तों का प्रतीक है, वे उस स्थान के लोगों के हृदय में रच–बस जाएंगे और उन्हें प्रभुधर्म की ओर आकर्षित करने में सहायक होंगे। एक सुन्दर भवन खड़ा कर लेना ही पर्याप्त नहीं है, हमें उसे ऐसे निष्ठावान और समर्पित लोगों से भी भरना है जो इसके आध्यात्मिक वातावरण में आना चाहेंगे।

(संयुक्त राष्ट्र और कनाडा की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को लिखित 6 मई 1931 के पत्र से) (46)

तुमने ऐसी कुछ योजनाओं के सम्बंध में पूछा है जिनसे मन्दिर के लिए कोष इकट्ठा किया जा सके। शोग़ी एफ़ेन्दी मानते हैं कि सबसे अच्छी और श्रेष्ठ विधि है इस तरह का मुक्त दान प्राप्त करना जो स्वेच्छा से और प्रभुधर्म के विकास के लिए त्याग करने की नीयत से दिया गया हो। इस मन्दिर का निर्माण त्याग से किया जाना है। यह सचमुच सुयोग्य विधि है। इसलिए इस सिद्धान्त के आगे ऐसी

और किसी भी विधि का समावेश नहीं किया जा सकता जिसमें गैर–बहाइयों की सहायता शामिल हो। बहाई मन्दिर का निर्माण केवल बहाइयों द्वारा ही किया जाना चाहिए। यह कोई सामान्य मानवतावादी कार्य नहीं है जिसके लिए किसी भी व्यक्ति से याचना की जा सकती हो।

(किनोशा, विस्कौंशिन, के बहाइयों को लिखा गया पत्र, दिनाँक 14 अप्रैल 1932) (47)

मन्दिर के लिए दिए गए आपके दान और साथ ही अपने प्रचार कार्य का दायरा विस्तृत करने के लिए धर्मानुयायियों द्वारा किए जा रहे प्रयासों में आप जिस उल्लेखनीय तरीके से उनकी मदद कर रहे हैं वे वाकई बहुत ही अच्छे हैं और आपने प्रभुधर्म के लिए दीर्घस्थायी योगदान दिए हैं। हालाँकि वर्तमान समय में आप आर्थिक रूप से उतना योगदान देने में सक्षम नहीं हैं जितना कि आपने पिछले वर्षों में दिया था लेकिन इससे आपको निराश नहीं होना चाहिए। क्योंकि मन्दिर के निमित्त आपकी सर्वोत्तम और प्रभावी सहायता भौतिक साधनों के माध्यम से नहीं अपितु उन लोगों को नैतिक सहायता देने के रूप में है जो उस पवित्र और विलक्षण भवन के निर्माण का दायित्व निभा रहे हैं, और ऐसा करना आपका प्राथमिक कर्तव्य है। हमारे प्रिय मन्दिर की पूर्णाहुति अंततः भक्ति, निष्ठा और सच्चे उत्साह के माध्यम से ही सुनिश्चित होगी। भौतिक विषय हालाँकि आवश्यक हैं लेकिन वे परम महत्व के नहीं हैं। यदि ऐसा नहीं होता तो मन्दिर कभी भी विकास के उस चरण पर नहीं पहुंच पाता जिसे उसने प्राप्त किया है। समुदाय के संसाधन सीमित हैं और पिछले दो वर्षों के दौरान अभूतपूर्व एवं विश्वव्यापी आर्थिक मंदी से उन पर गंभीर असर पड़ा है। लेकिन इन तमाम भौतिक बाधाओं के बावजूद, मन्दिर की प्रगति सतत रूप से जारी रही है और किसी भी पूर्वाग्रह–रहित व्यक्ति को प्रभुधर्म

की जीवन्तकारी क्षमता दर्शाने के लिए यह पर्याप्त है – वह क्षमता जिसके आगे अंततः सभी भौतिक बाधाओं को परास्त होना ही है।

(एक व्यक्तिगत बहाई को लिखे गए दिनाँक 30 दिसंबर 1933 के पत्र से) (48)

जहाँ तक मन्दिर में 'पातियों' का गान करने का प्रश्न है, इस सम्बंध में शोग़ी एफ़ेन्दी मित्रों से यह आग्रह करना चाहते हैं कि उपासना के विषय में वे हर तरह की कट्टरता और एकरूपता का परित्याग करें। 'पूर्वी' भाषा में प्रार्थनाओं के पाठ या गान करने पर कोई आपत्ति नहीं है लेकिन ऐसी कोई अनिवार्यता भी नहीं है कि मन्दिर के सभागार में किसी भी भक्तिपरक प्रस्तुति के दौरान प्रार्थना के इसी रूप का अनुपालन किया जाए। न तो इसे आवश्यक माना जाना चाहिए और न ही इसका निषेध किया जाना चाहिए। वह महत्वपूर्ण बात जिसे हमेशा याद रखा जाना चाहिए वह यह है कि कुछ खास अनिवार्य प्रार्थनाओं के अलावा बहाउल्लाह ने मन्दिर में या अन्यत्र कहीं भी उपासना के विषय में कोई कठोर या विशेष नियम नहीं दिए हैं। प्रार्थना अनिवार्य रूप से मनुष्य और ईश्वर के बीच वार्तालाप है और अतः यह हर कर्मकांडी स्वरूपों और सूत्रों से परे है।

(संयुक्त राष्ट्र और कनाडा की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को लिखित 15 जून 1935 के पत्र से) (49)

उन्हें खासतौर पर हजीरतुल–कद्स के लिए जमीन खरीदे जाने के लिए किए गए प्रयासों और साथ ही इस अत्यंत ही प्रतीक्षित एवं सुयोग्य प्रयास के लिए एकत्रित किए गए योगदान के बारे में जानकर बहुत ही खुशी हुई ....उन्हें अत्यंत ही आशा है कि वर्तमान वर्ष के दौरान, एकता की भावना के साथ उस भवन की आधारशिला रखने और उस देश की राजधानी में कोई उपयुक्त भूमि अर्जित करने में मित्रों को सम्पुष्टि प्राप्त होगी। आगे उन्होंने यह भी कहा है कि इस

प्रयास की पूर्णाहुति के लिए अथक सहयोग और आपसी सहायता की जरूरत है और यह त्याग पर निर्भर है। यह महत्वपूर्ण परियोजना उस क्षेत्र में मशरिकुल–अज़कार की स्थापना की भूमिका होगी और इस तरह प्रभुधर्म की एजेन्सियों की संख्या बढ़ेगी, उसकी दिव्य संस्थाएं सुदृढ़ होंगी, समुदाय के प्रभाव और उसकी शक्ति में इजाफा होगा, और उन सबको आभा एवं महिमा का वरदान प्राप्त होगा।

(इज़िप्ट की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को लिखे गए 14 मई 1936 के एक पत्र से – अरबी से अनूदित) (50)

मानव–बंधुता और दयालुता की इस बहाई शिक्षा का अभिप्राय यह है कि हमें हमेशा उन लोगों को सहायता पहुंचाने के लिए तैयार रहना चाहिए जो कष्ट और मुसीबत में हैं। बहाई लोकोपकार बहाई शिक्षाओं का सार–तत्व है और इसलिए यह गुण हर बहाई समुदाय में अपनाया जाना चाहिए। अनाथाश्रम, निःशुल्क विद्यालय और गरीबों के लिए अस्पताल जैसी लोकोपकारी संस्थाएँ मशरिकुल–अज़कार के अपरिहार्य अंग हैं। हर स्थानीय बहाई समुदाय का दायित्व है कि यथासम्भव जो भी साधन उपलब्ध हों उनके माध्यम से वे अपने गरीब एवं जरूरतमंद सदस्यों का कल्याण सुनिश्चित करें।

(एक व्यक्तिगत बहाई को 26 जून 1936 को लिखे गए एक पत्र से) (51)

अब्दुल बहा की एक पाती की प्रतिलिपि के संदर्भ में जिसे आपने अपने 20 अक्टूबर के पत्र के साथ संलग्न किया है और जिसमें प्रिय मास्टर ने मन्दिर के सहायक भवनों का निर्माण किए जाने के क्रम का विवरण दिया है: शोग़ी एफ़ेन्दी का मानना है कि इन सहायक भवनों के निर्माण का जो क्रम दिया गया है उसके बारे में इस पाती का अर्थ बहुत ही कठोर रूप से नहीं निकाला जाना चाहिए और न ही उसे उन भवनों की व्यापक सूची मान लिया जाना चाहिए

जिनका निर्माण भविष्य में मशरिकुल–अज़कार के केन्द्रीय भवन के इर्द–गिर्द किया जाना है। अंतर्राष्ट्रीय न्याय मन्दिर निष्चित रूप से मन्दिर के इन भावी उप–भवनों की संख्या और क्रम निर्धारित करेगा और एक–दूसरे तथा स्वयं मन्दिर के साथ उनके आपसी सम्बंधों को परिभाषित करेगा। यदि उपलब्ध हो तो धर्मसंरक्षक चाहेंगे कि आप उस 'पाती' का मूल पाठ भेज दें।

जहाँ तक प्रशासनिक भवन का मन्दिर के साथ सम्बंध का सवाल हैः इसे भी भविष्य में परिभाषित किया जाना होगा, लेकिन इस सम्बंध का जो भी वास्तविक स्वरूप होगा और उसकी विस्तृत बातें चाहे जो भी होंगी, उसे इस सामान्य सिद्धान्त पर आधारित होना चाहिए कि बहाई संस्थाओं के ये दो समूह बहाई जीवन के दो विशिष्ट एवं अनिवार्य, किन्तु फिर भी अविभाज्य, पहलुओं को मूर्त रूप देते हैंः उपासना और सेवा। मशरिकुल–अज़कार का केन्द्रीय भवन, जो विशुद्ध रूप से उपासना के उद्देश्य के लिए है, आध्यात्मिक तत्व का परिचायक है और अतः वह प्रत्येक बहाई समुदाय में एक प्राथमिक प्रकार्य को पूरा करता है, किन्तु दूसरी ओर मन्दिर के अन्य सभी उप–भवन, चाहे वे बिल्कुल प्रशासनिक हों या सांस्कृतिक अथवा मानवतावादी चरित्र के, द्वितीयक हैं और महत्व की दृष्टि से वे स्वयं उपासना मन्दिर के बाद आते हैं।

(संयुक्त राष्ट्र और कनाडा की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को लिखित 28 जनवरी 1939 के पत्र से) (52)

जहाँ तक 'मन्दिर' और उसमें की जाने वाली सेवाओं/प्रस्तुतियों का समग्र प्रश्न है :

वे इस बात पर जोर देना चाहते हैं कि अब जबकि पश्चिम का यह सबसे पहला और विशाल मन्दिर बन चुका है और कुछ ही वर्षों में वह उपासना एवं बहाइयों द्वारा नियमित सेवा के उपयोग में आने

लगेगा, वे इस बात को लेकर फ़िक्रमंद हैं कि शिक्षाओं में रेखांकित की गई न्यूनतम रूपरेखा से आगे उसमें कोई भी स्वरूप, रीति–रिवाज़ या तयशुदा परम्पराएँ न शुरू कर दी जाएँ। इन सम्मिलनों की प्रकृति प्रार्थना, ध्यान और हमारे धर्म एवं अन्य धर्मों के पवित्र ग्रंथों से पाठ करने की है। एक या अनेक लोग पाठ कर सकते हैं, किसी बहाई का चयन किया जा सकता है या गैर–बहाई भी पाठ कर सकते हैं। इस सम्मिलन का स्वरूप सरल, गरिमामय होना चाहिए तथा वह रचनात्मक शब्द के श्रवण के माध्यम से आत्मा को उन्नत एवं सुशिक्षित बनाने वाला होना चाहिए। कोई व्याख्यान नहीं होना चाहिए और कोई भी अप्रासंगिक विषय प्रस्तुत नहीं किया जाना चाहिए।

उपदेश–मंच के प्रयोग का बहाउल्लाह ने निषेध किया है। ज्यादा स्पष्ट रूप से सुनाई देने के इरादे से, पाठ करने वाला व्यक्ति एक कम ऊंचे प्लेटफार्म पर खड़ा होकर पढ़ सकता है, इसमें कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन उसे भवन की निर्माण–शैली में शामिल नहीं किया जाना चाहिए।

●●●●●

पाठ करने वाले को ऐसी जगह खड़ा होना चाहिए जहाँ से उसे अच्छी तरह देखा और सुना जा सके। इस विषय से सम्बंधित छोटी–मोटी बातें आपकी आध्यात्मिक सभा के विवेक पर छोड़ दी गई है ताकि आप विशेषज्ञों की सलाह प्राप्त करके निर्णय ले सकें। जैसाकि वे पहले ही आपको सूचित कर चुके हैं, उनका सुझाव है कि 'मूवेबल' (हटाए जा सकने योग्य) कुर्सियों की जगह 'फिक्स्ड' कुर्सियां या बेंचें लगवाई जाएँ।

केवल मौखिक संगीत का प्रयोग किया जा सकता है और जहाँ तक गायक अथवा गायकों की स्थिति का प्रश्न है तो यह भी आपकी आध्यात्मिक सभा के निर्णय का विषय है। लेकिन, पुनः, कोई निर्धारित

बिंदु नहीं होना चाहिए और न ही वास्तुशिल्प के अंतर्गत कोई विशेष स्थान ही रेखांकित किया जाना चाहिए। गायकों का स्थान तय करते समय इस बात पर जरूर विचार किया जाना चाहिए कि कहाँ से उन्हें बेहतर सुना जा सकता है।

●●●●●

उन्हें यह बताने की जरूरत नहीं है कि मन्दिर के निर्माण–कार्य को पूरा करने सम्बंधी आपके निर्णय कितने महत्वपूर्ण होने वाले हैं . .. वे हर समय आपसे यही आग्रह करते हैं कि आप बेहतर से बेहतर तकनीकी सलाह प्राप्त करें और ध्यान रखें कि मन्दिर में होने वाले सम्मिलन अत्यंत ही सुन्दर और शांतिप्रिय, आरामदेह वातावरण में और गरिमा एवं सादगी से सम्पन्न हों, और यह कि श्रोता अच्छी तरह से सुन सकें और स्वर सुनने में कर्णप्रिय हों।

(संयुक्त राष्ट्र और कनाडा की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को लिखित 20 जुलाई 1946 के पत्र से) (53)

जैसाकि अब्दुल बहा द्वारा निरूपित किया गया है, रूपरेखा सम्बंधी आवश्यक बातें ये हैं कि भवन नौमुखी और गोले आकार का होना चाहिए। इसके अतिरिक्त, रूपरेखा की अपनी शैली का चयन करने के लिए भवन–शिल्पी पर अन्य कोई प्रतिबंध नहीं है।

(जर्मनी और ऑस्ट्रिया की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को लिखित 25 जून 1954 के पत्र से, "दि लाइट ऑफ गाइडेंसः दि मैसेजेज फ्रॉम दि गार्ज़ियन ऑफ दि बहाई फेथ टु दि बहाइज़ ऑफ जर्मनी ऐंड ऑस्ट्रिया", खंड 1, पृ. 216) (54)

अंत में, एक बात का उल्लेख किया जाना है, और वह यह है कि विल्मेट का बहाई मन्दिर अन्य मन्दिरों के लिए कोई आदर्श ढांचे के रूप में नहीं है और न ही किसी नए प्रकार के बहाई भवन–शिल्प का परिचायक है। इसलिए जरूरी नहीं है कि आपके भवन–शिल्पी

उसी ढांचे का अनुसरण करने का प्रयास करें। मन्दिर के सम्बंध में केवल मास्टर के निर्देशों का पालन किया जाना चाहिए, और उसके बाद ऐसा निर्माण किया जाना चाहिए जो आपके क्षेत्र के लिए वांछनीय और उपयुक्त हो।

(जर्मनी और ऑस्ट्रिया की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को लिखित 10 फरवरी 1955 के पत्र से, "दि लाइट ऑफ गाइडेंसः दि मैसेजेज फ्रॉम दि गार्ज़ियन ऑफ दि बहाई फेथ टु दि बहाइज़ ऑफ जर्मनी ऐंड ऑस्ट्रिया", खंड 1, पृ. 227) (55)

मन्दिर के निर्माण में यह सावधानी बरती जानी चाहिए कि स्थितिगत आदर्शों और भावनाओं के वशीभूत न हुआ जाए बल्कि ठोस जमीन पर खड़ा होकर सोचा जाए और यह विचार किया जाए कि वे इस्पात और पत्थर से बने भवन हैं। जरूरी यह है कि एक सुन्दर और आकर्षक 'बहाई उपासना मन्दिर' का निर्माण हो सके – न कि बाब की समाधि या विल्मेट के मन्दिर की प्रतिकृति की। हमें भवन–शिल्प के असाधारण आदर्शों की तलाश नहीं है बल्कि उस चेतना की जो कि यूरोप के प्रथम आध्यात्मिक भवन के निर्माण से उत्पन्न होगी।

(जर्मनी और ऑस्ट्रिया की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को लिखित 9 नवंबर 1956 के पत्र से) (56)

निर्माण के पश्चात, सम्पूर्ण प्रशांत क्षेत्र का यह 'मातृ मन्दिर' जो प्रभाव डालेगा वह अमाप्य और रहस्यमय है। प्रिय मास्टर ने अमेरिका के बंधुओं से कहा था कि उनका मन्दिर महानतम मूक शिक्षक होगा, और इसमें कोई संदेह नहीं कि इस एक भवन ने प्रभुधर्म के प्रसार पर गहरा प्रभाव डाला है, न केवल संयुक्त राष्ट्र और पश्चिमी गोलार्द्ध में बल्कि सम्पूर्ण विश्व में। इसलिए हम यह आशा कर सकते हैं कि ऑस्ट्रेलेशिया के मध्य में एक अन्य 'मातृ मन्दिर', तथा एक और

अफ्रिका तथा दूसरा यूरोप की हृदय–स्थली में, निर्मित किए जाने से स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर अपार प्रभाव पड़ेगा।

(ऑस्ट्रेलिया की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को लिखित 19 जुलाई 1957 के पत्र से, "मैसेजेज टु दि ऐंटिपोड्सः कम्युनिकेशंस फ्रॉम शोग़ी एफ़ेन्दी टु दि बहाई कम्युनिटीज ऑफ ऑस्ट्रेलेशिया" से (मोना वेलः बहाई पब्लिकेशंस, ऑस्ट्रेलिया, 1997), पृ. 439) (57)

विश्व न्याय मन्दिर द्वारा लिखित पत्रों से

अपने 23 जनवरी 1964 के पत्र में आपने मशरिकुल–अज़कार के उपयोग के बारे में जो प्रश्न किए हैं उन पर हमने सावधानीपूर्वक विचार किया है।

आपकी आध्यात्मिक सभा प्राचीन धर्मों के सामान्य रूप से मान्य धर्मग्रंथों के अंशों का अपने विवेक से चयन करने के लिए स्वतंत्र है।

जहाँ तक एक ही साथ अनेक पाठ करने वालों का उपयोग करने का आपका सवाल है, इसकी अनुमति दी जा सकती है बशर्ते कि ऐसा करना आपकी आध्यात्मिक सभा की दृष्टि में नाटकीय न लगता हो। जहाँ तक पाठक के स्थान का प्रश्न है, प्रिय धर्मसंरक्षक पहले ही संकेत दे चुके हैं कि "पाठ करने वाले को ऐसी जगह खड़ा होना चाहिए जहाँ से उसे सबके द्वारा आसानी से देखा और सुना जा सके।"

उपासना मन्दिर में केवल मौखिक संगीत होना चाहिए, गायक चाहे एक हों या अनेक। यदि किसी अतिथि, बिना वाद्य के गाने वाले समूह या एकल गायक का उपयोग करने में कोई हर्ज़ नहीं है लेकिन ऐसे उपयोग के माध्यम से उपासना सेवाओं को प्रचारित नहीं किया जाना चाहिए और आपने जिन सावधानियों का उल्लेख किया है वे बरती जानी चाहिए। इसमें कोई दो मत नहीं कि वर्तमान समय में जो

उत्कृष्ट रिकॉर्डिंग उपलब्ध हैं उनसे किफ़ायत के साथ उच्चतम गुणवत्ता सुनिश्चित की जा सकती है लेकिन मुख्य भवन में मौखिक संगीत के जो भी संदर्भ दिए गए हैं वे गायकों की सशरीर उपस्थिति को संकेतित करते हैं।

शिकागो के एक धर्मानुयायी को 1931, "बहाई न्यूज़", सं. 55, पृष्ठ 4, में अपने सचिव की ओर से लिखे गए पत्र के माध्यम से शोग़ी एफ़ेन्दी ने यह आशा व्यक्त की कि "अब जबकि मन्दिर का निर्माण हो चुका है, यह पूर्ण रूप से शुद्ध एवं जिज्ञासु आत्माओं से भरा रहेगा। यह अन्य उपासना मन्दिरों से भिन्न होना चाहिए जिनमें, लोगों से पूरी तरह भरे होने के बावजूद, आकर्षण का स्रोत संगीत हो जाता है। यहां चेतना इतनी प्रबल होनी चाहिए कि वह सभी प्रवेश करने वाले व्यक्तियों के हृदय को बहाउल्लाह की महिमा के प्रति जागृत कर सके।"

निश्कर्ष के तौर पर, प्रिय धर्मसंरक्षक द्वारा अमेरिकी बहाई समुदाय को सम्बोधित 25 अक्टूबर 1929 का ज्ञानवर्द्धक संदेश मशरिकुल–अज़कार की सच्ची प्रकृति को स्पष्ट रूप से प्रकट करता है। उनमें वे विस्तृत एवं आडम्बरपूर्ण समारोह की साज–सज्जा को अस्वीकार करते हैं और ऐसा कोई भी अनुमान न लगाने की चेतावनी देते हैं कि "मुख्य भवन के आंतरिक भाग को ही असंगत एवं उलझनपूर्ण पंथीय संस्कारों और कर्मकाण्डों" को प्रस्तुत करने वाली "अनेक प्रकार की धार्मिक सेवाओं में परिवर्तित कर दिया जाएगा"। अंत में शोग़ी एफ़ेन्दी बहाई उपासना एवं मशरिकुल–अज़कार की संस्था से उत्पन्न सेवा को विश्व के नवनिर्माण के लिए परमावश्यक तथा इस उदात्त, सामर्थ्यशाली एवं विशिष्ट संस्था की अनूठी महानता का रहस्य मानते हैं।

(संयुक्त राष्ट्र की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को लिखित 13 मार्च 1964 के पत्र से) (58)

जहाँ तक बहाई विवाह समारोहों का प्रश्न है, मुख्य हॉल से बाहर की सीढ़ियों पर ऐसे समारोह आयोजित करने में हमें कोई आपत्ति नहीं दिखती, लेकिन हमारा सुझाव है कि उससे भी उपयुक्त जगह होगी मन्दिर की भूमि पर बने लॉज। यह भी उपयुक्त रहेगा कि समारोह से पहले या बाद में, स्वयं मन्दिर में ही प्रार्थना और ध्यान आयोजित किया जाए।

(पनामा की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को लिखित 29 जुलाई 1973 के पत्र से) (59)

अपने विलक्षण मिशन के आरम्भ से ही, बहाउल्लाह ने राष्ट्रों का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया कि वे मानवीय कार्यकलापों का सुव्यवस्थापन इस तरह से करें कि जिससे वे एक ऐसे संसार को अस्तित्व में ला सकें जो जीवन के सभी आवष्यक पहलुओं में एकताबद्ध हो। अपने अनगिनत श्लोकों और पातियों में उन्होंने, आज के युग के लिए ईश्वर के आदेश के रूप में, बार–बार और विविध रूपों में, "विश्व की प्रगति" और "राष्ट्रों के विकास" की घोषणा की। मानवजाति की एकता, जो कि उनके प्रकटीकरण का मार्गदर्शक सिद्धान्त और साथ ही उसका अंतिम ध्येय भी है, का अभिप्राय यह है कि इस धरती पर आध्यात्मिक और व्यावहारिक आवश्यकताओं के बीच एक गत्यात्मक सुसंगति हासिल की जानी चाहिए। इस सुसंगति की अपरिहार्यता उनके द्वारा मशरिकुल–अज़कार के विधि–निर्धारण के कार्य में निर्विवाद रूप से प्रकट है, जो कि प्रत्येक बहाई समुदाय का वह आध्यात्मिक केन्द्र है जिसके इर्द–गिर्द पुष्पित होंगी ऐसी आश्रित संस्थाएँ जो मानवजाति की सामाजिक, मानवतावादी, शैक्षणिक और वैज्ञानिक उन्नति के प्रति समर्पित होंगे।

(बहाई विश्व को सम्बोधित 20 अक्टूबर 1983 के पत्र से) (60)

जैसाकि हमने पहले के एक संदेश में कहा है, समुदायों को पोषित करने के लिए – खासतौर पर स्थानीय स्तर पर – व्यवहार–पद्धति को अच्छी तरह बेहतर बनाने की आवश्यकता होती है : ऐसी पद्धतियाँ जिनके माध्यम से व्यक्तिगत सदस्यों के सद्‌गुणों और आध्यात्मिक सभा की सक्रियता की सामूहिक अभिव्यक्ति उस समुदाय की एकता और बंधुता में तथा उसके कार्यकलाप और विकास की गतिशीलता में झलकती हो। इसके लिए घटक तत्वों – वयस्कों, युवाओं और बच्चों – का आध्यात्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक तथा प्रशासनिक कार्यकलापों में एकरूपण तथा शिक्षण और विकास की स्थानीय योजनाओं में उनकी संलग्नता जरूरी है। इसमें ईश्वर की सामूहिक उपासना की आदत भी शामिल है। इसलिए समुदाय के आध्यात्मिक जीवन के लिए अत्यावश्यक है कि जहाँ भी उपलब्ध हो वहां स्थानीय बहाई केन्द्रों में अथवा धर्मानुयायियों के घरों सहित अन्य जगहों पर नियमित भक्तिपरक सभाएँ आयोजित की जाएँ।

(विश्व के बहाइयों को सम्बोधित रिज़वान 1996 संदेश) (61)

हर भूभाग में हमें आध्यात्मिक जीवन और नैतिक सुस्पष्टता की बढ़ती हुई प्यास का अनुभव हो रहा है। मानव जीवन को बेहतर बनाने के लिए जिन योजनाओं और कार्यक्रमों की जड़ें आध्यात्मिक जागृति और नैतिक सद्‌गुणों में नहीं जमी हैं उनकी निष्फलता को मान लिया गया है। इस उत्कंठा को शांत करने में उनसे अधिक सक्षम भला कौन हो सकते हैं जो पहले से ही बहाउल्लाह की शिक्षाओं से प्रेरित और उनकी शक्ति की सहायता से सम्पन्न हैं?

●●●●●

हर स्थानीय क्षेत्र में, व्यक्तिगत भक्ति से उत्पन्न आध्यात्मिक विकास मित्रों के बीच स्नेहपूर्ण सम्बंध से प्रबल हुआ है और साथ ही सामूहिक उपासना एवं प्रभुधर्म तथा मानव–बंधुओं की सेवा के माध्यम

से। पवित्र जीवन के ये सामुदायिक पहलू 'किताब–ए–अकदस' में प्रकटित मशरिकुल–अज़कार के विधान से सम्बंधित हैं। हालाँकि अभी स्थानीय मशरिकुल–अज़कारों के निर्माण का समय नहीं आया है किन्तु उपासना के नियमित रूप से सभाओं के आयोजन के सबके लिए मुक्त अवसर तथा मानवतावादी सेवा परियोजनाओं में बहाई समुदायों की संलग्नता बहाई जीवन के इस तत्व की अभिव्यक्ति तथा ईश्वर के विधान को कार्यरूप देने की दिशा में एक अगला चरण है।

बहाउल्लाह ने लिखा है: "अपनी ओर से उदार कृपा के रूप में, हमने वाणी के स्वर्ग को दिव्य प्रज्ञा एवं पवित्र आदेशों के सितारों से अलंकृत किया है। सत्य ही, हम सदा–क्षमाशील, परम उदार हैं। हे सभी क्षेत्रों में रहने वाले ईश्वर के सखाओं! तुम सब इन दिनों के महत्व को जान लो और उसका दामन थामो जो परम महान, परम उदात्त परमात्मा द्वारा भेजा गया है। सत्य ही, इस 'महानतम कारागार' में वह तेरा स्मरण करता है और तुम्हें वह अनुदेश देता है जो तुम्हें ऐसे स्थान के निकट पहुंचने योग्य बनाएगा जो शुद्धहृदयी लोगों के नेत्रों को प्रफुल्लित करता है। महिमा विराजे तुझ पर और उन सब पर जो उस जीवन्त निर्झर तक पहुंच सके हैं जो मेरी विलक्षण लेखनी से प्रवाहित होता है।"

पवित्र दहलीज पर हमारी प्रार्थना है कि इन विधानों द्वारा अभिव्यक्त शिक्षाओं के आध्यात्मिक मूल पर और अधिक ध्यान दिए जाने के माध्यम से 'उसके' प्रति मित्रों की आस्था और ज्यादा प्रबल हो जो सभी कृपाओं का 'स्रोत' है और वे 'उसके' आध्यात्मिक रूप से भूखी सन्तानों के बीच से ग्रहणशील आत्माओं को प्रभुधर्म की ओर आकर्षित कर सकें।

(विश्व के बहाइयों को सम्बोधित 28 दिसंबर 1999 के पत्र से) (62)

रचनात्मक काल के पाँचवें चरण की एक विशेषता होगी कि जहॉ कहीं भी राष्ट्रीय समुदायों में परिस्थितियॉ अनुकूल हों वहाँ राष्ट्रीय बहाई उपासना मन्दिरों के निर्माण के माध्यम से समुदाय के भक्तिपरक जीवन को समृद्ध बनाया जायेगा। इन प्रायोजनों के बारे में किसी देश में समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकारे जाने की प्रक्रिया में हुई प्रगति को ध्यान में रखते हुए विश्व न्याय मन्दिर कार्यक्रम तय करेगा। यह विकास अब्दुल बहा की दिव्य योजना के आने वाले सभी चरणों में स्पष्ट होता जायेगा। पश्चिम में सबसे पहले निर्मित उपासना मन्दिर का निर्माण पूरा होने पर धर्मसंरक्षक ने महाद्वीपीय मन्दिरों के निर्माण का कार्यक्रम प्रारम्भ किया। दस वर्षीय योजना के लक्ष्यों को प्राप्त करने के क्रम में शुरू में ऐसे मशरिकुल–अज़कार कम्पाला, सिडनी और फ्रैंकफर्ट में निर्मित किए गए। विश्व न्याय मन्दिर द्वारा इसी कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए पनामा सिटी, एशिया और नई दिल्ली में मन्दिरों का निर्माण किया गया। परन्तु यह महाद्वीपीय चरण अभी पूरा किया जाना है : एक और मंदिर का निर्माण होना बाकी है। हार्दिक कृतज्ञता और आह्लाद की भावना के साथ इस मांगलिक बेला में हम यह घोषणा करना चाहते हैं कि हमने इस अंतिम प्रायोजन को प्रारंभ करने का निर्णय ले लिया है। पाँच वर्षीय योजना के दौरान सांतियागो/चिली/ में दक्षिणी अमेरिका के प्रथम मन्दिर के निर्माण का काम प्रारम्भ हो जाएगा और इस प्रकार शोग़ी एफ़ेन्दी ने साफ़ तौर पर अपनी जो इच्छा प्रकट की थी वह पूरी हो जाएगी।

(विश्व के बहाइयों को संबोधित रिज़वान 2001 संदेश) (63)

आज से सौ साल पहले, रिज़वान उत्सव के ग्यारहवें रोज, दिन के तीसरे प्रहर के मध्य, सैकड़ों श्रोताओं की मौजूदगी में, अब्दुल बहा ने एक कुल्हाड़ी उठाई और शिकागो की उत्तर दिशा में, ग्रॉस प्वाइंट के मन्दिर स्थल को आच्छादित करने वाली तृणभूमि को भेद

डाला। उस समय, बसन्त ऋतु के उस दिन, उनके साथ भूमि के उपयोग का सूत्रपात करने के लिए आमंत्रित लोगों में शामिल थे अनेक पृष्ठभूमियों से आए हुए लोग – नॉर्वे के निवासी, भारतीय, फ्रांसीसी, जापानी, फारस के लोग और अमेरिका के जनजातीय लोग तथा और भी अनेक। ऐसा लग रहा था मानों अभी तक अनिर्मित उपासना मन्दिर प्रिय मास्टर की उन इच्छाओं को पूरा कर रहा था जो उन्होंने उस उत्सव के अवसर पर ऐसे सभी भवनों के संदर्भ में प्रकट की थीं – ''जो मानव जाति के लिए एक मिलन–स्थल बन सकें'' और ''जिसकी पावनता के खुले प्रांगण से मानवजाति की एकता की घोषणा का संचार होगा''।

उस समय उनके जो श्रोता थे और वे तमाम लोग जिन्होंने मिस्र (इज़िप्ट) और पश्चिमी देशों की उनकी यात्राओं के क्रम में उनकी बातों को सुना था, वे समाज तथा उसके मूल्यों और कार्य–व्यवसायों के संदर्भ में अब्दुल बहा के शब्दों के दूरगामी अभिप्रायों को स्पष्ट रूप से शायद ही समझ पाए थे। बहाउल्लाह के प्रकटीकरण द्वारा भविष्य में समाज का जो स्वरूप नियत है, उसकी सुदूर और अस्पष्ट रूपरेखा की झलक के सिवा और कुछ देख पाने का दावा क्या आज भी कोई व्यक्ति कर सकता है? किसी भी व्यक्ति को यह मानकर नहीं चलना चाहिए कि ईश्वरीय शिक्षाएँ मानवजाति को जिस सभ्यता की दिशा में प्रेरित करते हुए ले जा रही हैं उस सभ्यता का जन्म वर्तमान युग की व्यवस्थाओं से केवल तालमेल बिठाकर हो जाएगा। बल्कि सच्चाई इससे कोसों दूर है। पश्चिम के मातृ उपासना मन्दिर की आधारशिला रखने के कुछ ही दिनों बाद दिए गए एक व्याख्यान में अब्दुल बहा ने कहा था कि ''आध्यात्मिक शक्तियों के प्रकटीकरण के परिणामों में से एक यह होगा कि मानव जगत स्वयं को एक नए सामाजिक स्वरूप के अनुकूल बना लेगा'' और यह कि ''सभी मानवीय व्यवहार में ईश्वर का न्याय प्रकट हो

उठेगा।'' अब्दुल बहा की ये तथा ऐसी ही अन्य कई वाणियों से, जिनकी ओर बहाई समुदाय इस शताब्दिक अवधि में बार–बार अभिमुख हो रहा है, उस दूरी के बारे में जागरूकता उत्पन्न हो रही है, जो वर्तमान व्यवस्था वाले समाज को, उस महान विचारदृष्टि से अलग कर रही है जो उनके 'दिव्य पिता' ने इस संसार को प्रदान की थी।

●●●●●

अपने रिज़वान सन्देश 2001 में, हमने यह संकेत दिया था कि ऐसे देशों में जहाँ समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकारे जाने (इंट्री बाइ ट्रूप्स) की प्रक्रिया पर्याप्त रूप से आगे बढ़ चुकी हो तथा जहाँ राष्ट्रीय समुदायों की स्थितियाँ अनुकूल हों, वहाँ हम राष्ट्रीय स्तर पर उपासना मन्दिर की स्थापना को स्वीकृति देंगे, जिनका अभ्युदय प्रभुधर्म के रचनात्मक युग के पाँचवें काल की विशिष्टता का परिचायक होगा। अत्यधिक प्रसन्नता के साथ अब हम यह घोषणा करते हैं, कि दो देशों में राष्ट्रीय मशरिकुल–अज़कार निर्मित किए जाएँगे – कांगो गणतंत्र और पापुआ न्यू गिनी में। इन देशों के लिए हमने जो मापदण्ड स्थापित किए थे वे उन पर खरे उतरे हैं और योजनाओं की वर्तमान श्रृंखलाओं से उत्पन्न सम्भावनाओं के प्रति, वहाँ के लोगों की प्रतिक्रियाएँ उल्लेखनीय रही हैं। सांतियागो में जहाँ एक ओर महाद्वीपीय उपासना मन्दिरों में से अन्तिम उपासना मन्दिर का निर्माण कार्य जारी है, वहीं दूसरी ओर इन राष्ट्रीय उपासना मन्दिर परियोजनाओं का शुरु होना इस बात का एक अन्य संतोषदायक प्रमाण है कि ईश्वर का धर्म समाज की माटी में गहराई से पैठता जा रहा है।

एक और चरण सम्भव है। मशरिकुल–अज़कार जिसका वर्णन अब्दुल बहा ने ''संसार की सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्थाओं में से एक'' कहकर किया है, बहाई जीवन के दो अनिवार्य और अविभाज्य पक्षों को एक सूत्र में पिरोता है – उपासना और सेवा। इन दोनों की

एकसूत्रता योजना की समुदाय–निर्माण सम्बंधी विशेषताओं में स्थित संयोजन में भी झलकती है, विशेषकर भक्तिपरक चेतना के तेजी से होते विकास में, जिसकी अभिव्यक्ति प्रार्थना सभाओं और उस शैक्षणिक प्रक्रिया के माध्यम से होती है जिससे मानवजाति की सेवा के लिए क्षमता का निर्माण होता है। उपासना और सेवा का सह–सम्बंध विशेषकर दुनिया के उन क्लस्टरों में प्रतिध्वनित होता है, जहाँ के बहाई समुदायों का आकार और उनकी जीवन्तता काफी विकसित हो चली है और जहाँ सामाजिक कार्यकलापों में भागीदारी साफ झलकने लगी है। इनमें से कुछ समुदाय ज्ञान के प्रसार के स्थल के रूप में तय किए गए हैं, ताकि उनसे जुड़े हुए क्षेत्रों में किशोर युवा कार्यक्रम को आगे बढ़ाने में मित्रों की क्षमता का पोषण किया जा सके। जैसाकि हमने हाल ही में संकेत दिया है, इस कार्यक्रम को स्थायित्व देने की क्षमता अध्ययन वृत्त कक्षाओं और बच्चों की कक्षाओं के विकास को भी ऊर्जा प्रदान करती है। इस प्रकार अपने मुख्य लक्ष्य से भी आगे बढ़कर ये ज्ञान का स्थल 'लर्निंग साईट' विस्तार और सुगठन की सम्पूर्ण योजना को ही मजबूती प्रदान करता है। आने वाले वर्षों, में ऐसे ही समुदायों में स्थानीय मशरिकुल–अज़कार के अभ्युदय के बारे में विचार किया जा सकता है। 'पुरातन सौन्दर्य' के प्रति अत्यधिक आभार भरे हृदय से, आपको यह सूचित करते हुए हमें बहुत प्रसन्नता हो रही है कि निम्नांकित क्लस्टरों में प्रथम स्थानीय बहाई उपासना मन्दिर के निर्माण के सम्बंध में हम सम्बंधित राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं के साथ परामर्श शुरु करने जा रहे हैं: बैटमबांग (कम्बोडिया), बिहार शरीफ (भारत), माटुंडा सोय (केन्या), नॉर्टे डेल कॉसा (कोलंबिया), और तान्ना (वैनुवाटु)।

दो राष्ट्रीय और पाँच स्थानीय मशरिकुल–अज़कारों के निर्माण कार्य में सहायता देने के लिए हमने बहाई विश्व केन्द्र में एक मन्दिर कोष की स्थापना का निर्णय लिया है, जिससे ऐसी सभी परियोजनाओं

को लाभ मिल सकेगा। सभी जगहों के मित्रों को आमंत्रित किया जाता है कि वे अपनी–अपनी क्षमताओं के अनुसार इसमें त्यागपूर्वक दान दें।

प्रिय साथियों : आज से सौ साल पहले अब्दुल बहा ने जो पहल की थी, वही पहल एकबार फिर सात और देशों में की जानी है। लेकिन यह, उस दिन की पूर्वभूमिका होगी जबकि हर शहर, हर गाँव में, बहाउल्लाह के आदेश का अनुपालन करते हुए, प्रभु की उपासना के लिए एक भवन खड़ा किया जाएगा। ईश्वर के स्मरण के उन उदयाचलों से 'उनके' प्रकाश की किरणें विकीर्ण होंगी और 'उनकी' स्तुति के गान गुंजित हो उठेंगे।

(विश्व के बहाइयों को सम्बोधित, रिज़वान 2012 संदेश) (64)

योजना के तीन नायकों – व्यक्ति, समुदाय और प्रभुधर्म की संस्थाओं – की बढ़ती हुई क्षमता के अनुरूप, अधिक से अधिक समुदाय–समूहों में, पारस्परिक रूप से सहयोगात्मक वातावरण के निर्माण के लिए, विकास–कार्यक्रम का दायरा और उसकी जटिलता बढ़ती जा रही है। और हमें हर्ष है कि, जैसीकि हमें उम्मीद थी, ऐसे समुदाय–समूहों की संख्या बढ़ रही है जहाँ अब सौ या इससे भी अधिक व्यक्ति एक आध्यात्मिक, गत्यात्मक और रूपांतरकारी जीवन–पद्धति का प्रतिमान तैयार करने के कार्य में, हजार या इससे भी अधिक लोगों की भागीदारी को सहज बनाने के कार्य में जुटे हुए हैं। निश्चिय ही, इस प्रक्रिया के मूल में, अत्यंत आरम्भ से ही, भौतिक एवं आध्यात्मिक समृद्धि के उस विचार–दर्शन की दिशा में सामूहिक अभिगमन रहा है जिसकी संकल्पना 'विश्व के जीवनदाता' (बहाउल्लाह) द्वारा दी गई थी। लेकिन जब इतनी बड़ी संख्या में लोग शामिल हो रहे हैं तो पूरी जनसंख्या का अभिगमन दिखाई दे रहा है।

इस अभिगमन का प्रमाण खासतौर पर उन समुदाय–समूहों में मिलता है जहाँ स्थानीय मशरिकुल–अज़कार की स्थापना की जानी है। उदाहरण के तौर पर, ऐसा ही एक समुदाय–समूह है वैनुअतु। और विस्तार एवं सुगठन के सतत् जारी कार्य की पृष्ठभूमि में ही – गहन विकास कार्यक्रम का तीसवाँ चक्र अभी हाल ही में समाप्त हुआ है – मित्रगण उस द्वीप के बाकी निवासियों के साथ यह सक्रिय तलाश भी जारी रखे हुए हैं कि उनके बीच एक मशरिकुल–अज़कार यानी "मनुष्यों की आत्माओं के लिए एक सामूहिक केन्द्र" की स्थापना किए जाने का क्या अर्थ है। उपासना मन्दिर ने किस हद तक उनकी कल्पनाओं को प्रेरित किया है इसकी झलक दिखाते हुए और उस मन्दिर की छाया तले जीवन जीने वाले लोगों पर वह कैसा प्रभाव डालने वाला है उसके अद्भुत परिदृश्यों के द्वार खोलते हुए, ताना द्वीप के वासियों ने वहाँ के पारम्परिक नेताओं के सक्रिय सहयोग के साथ उपासना मन्दिर के लिए सौ से भी अधिक डिजाइन की संकल्पनाएँ प्रस्तुत की हैं।

(विश्व के बहाइयों को सम्बोधित, रिज़वान 2014 संदेश) (65)

दो साल से अधिक बीत गये जब रिज़वान 2012 में हमने सैंटियागो, चिली में महाद्वीपीय मशरिकुल–अज़कारों की श्रंखला में अंतिम मंदिर के निर्माण के साथ–साथ दो राष्ट्रीय और पाँच स्थानीय उपासना मंदिरों के निर्माण की योजना की घोषणा की थी। ये कार्य निर्बाध रूप से उस सामुदायिक जीवन को उन्नत बनाने से जुड़े हैं जो श्रद्धा और सेवा की भावना से सम्प्रति सर्वत्र प्रोत्साहित किये जा रहे हैं, ''पूरी धरती पर उस ईश्वर के नाम पर जो सभी धर्मों का स्वामी है'' उपासना मंदिरों के निर्माण का बहाउल्लाह द्वारा मानवजाति को दिया गया यह उत्कृष्ट दायित्व सामुदायिक जीवन को उन्नत बनाने के लिये अगला कदम है – ऐसे केन्द्र, जहाँ व्यक्ति ''एक–दूसरे से

सद्भावपूर्ण वातावरण में मिल कर'' ईश्वर के शब्दों को सुनने के लिये एकत्र हों और अपनी प्रार्थनायें अर्पित करें'' और जहाँ से ''स्तुति के स्वर प्रभु–साम्राज्य तक गूंजें'' और ''ईश्वर की सुरभि'' चतुर्दिक फैले।

दुनिया के प्रत्येक भाग से हमारे आह्वान से मिली प्रतिक्रिया से हम काफी प्रभावित हुये हैं। खासकर उन देशों व इलाकों में जो हाल ही उपासना मंदिर के निर्माण के लिये निर्धारित किये गये हैं, हमने मित्रों के बीच स्वाभाविक प्रसन्नता की अभिव्यक्ति; हाथ में लिये गये इस महत्वपूर्ण कार्य में अपने हिस्से की जिम्मेदारी को पूरा करने और वैसी गतिविधियों की सक्रियता को बढ़ाने के प्रति उनकी आसन्न और हार्दिक प्रतिबद्धता जो उनके समुदाय के बीच मशरिकुल–अज़कार के निर्माण से जुड़ी हैं, उनका समय, शक्ति और भौतिक संसाधनों का विभिन्न रूपों में त्यागपूर्ण योगदान; और पूरी तरह से ईश्वर के स्मरण के लिये उनके बीच बनाये जाने वाले मंदिर–भवन के वास्तविक उद्देश्य के प्रति अपने जनमानस को जागरूक करने का उनका निरन्तर प्रयास देखा है। निसंदेह, सर्वमहान नाम के समुदाय की तत्पर प्रतिक्रिया इन सामूहिक कार्यों को आगे बढ़ाने की इनकी क्षमता का सही शुभ संकेत है।

●●●●●

चार देशों में ये परियोजनायें मंदिर–भवन के डिजाइन बनाने के पड़ाव पर पहुँच चुकी हैं। यह प्रक्रिया सम्भावित वास्तुशिल्पियों के चुनाव और ढ़ाचे की जरूरतों की संक्षिप्त व्याख्या करते हुये वास्तुशिल्पीय नोट से शुरू होती है और इसके परिणामस्वरूप अंतिम रूप से चुने गये डिजाइन के लिये अनुबंध किया जाता है। वास्तुशिल्पियों के सामने एकमात्र चुनौती ''अस्तित्व के संसार में जितना श्रेष्ठ सम्भव हो सके'' वैसा डिजाइन बनाने की होती है, जो स्थानीय संस्कृति तथा वहाँ के लोगों के दैनिक जीवन से यह कार्य रचनात्मकता और कौशल

की माँग करता है जो सौन्दर्य, लालित्य और गरिमा को शालीनता, कार्य–सहजता और मितव्ययिता के साथ जोड़ सके। सभी जगहों से अनेक वास्तुशिल्पियों ने सेवा देने की इच्छा व्यक्त की है, जहाँ ऐसे योगदानों का स्वागत है, राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभायें वैसे वास्तुशिल्पियों को काम में लगाने की ओर उचित ध्यान दे रही हैं जो उस क्षेत्र विषेश से भलीभाँति परिचित हों जिस क्षेत्र में भवन का निर्माण होगा।

●●●●●

जहाँ दुनिया भर में मित्रगण इन उत्साहवर्द्धक विकास के कार्यों की खुशियाँ मना रहे हैं वहीं एक–के–बाद एक समुदायसमूहों की प्रक्रियाओं के सशक्त होने की ओर उनकी ऊर्जा केन्द्रित है। इस प्रकार वे आराधना और समाज की आध्यात्मिक, सामाजिक तथा भौतिक अवस्था को ऊपर उठाने के अपने प्रयासों के गत्यात्मक पारस्परिक प्रभाव को समझने में भी विफल नहीं हुए हैं। हमारी कामना है कि वे सब जो नगरों और शहरों में पड़ोस के क्षेत्रों और गाँवों में इस प्रकार के कार्य के लिये प्रयत्नशील हैं, उन प्रयासों से अंतर्दृष्टि प्राप्त करें जो बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में पूरब में और तत्पश्चात पश्चिम में, पहले दो उपासना मंदिरों के निर्माण के लिये किये गये थे।

अश्काबाद के निष्ठावान अनुयायियों की एक टोली ने, जो फारस से आ बसी थी और जिसने कुछ समय के लिये तुर्किस्तान में शांति तथा तसल्ली पाई थी, एक ऐसी जीवन शैली के निर्माण में अपनी ताकत लगा दी जो बहाउल्लाह के प्रकटीकरण में निहित महान आध्यात्मिक और सामाजिक सिद्धांतों को प्रतिबिम्बित करती थी। कुछ ही दशकों में यह टोली, जो मूल रूप से कुछ परिवारों के संयोग से बनी थी, अन्य लोगों का साथ पाती गई और कुछ हजार अनुयायियों में तब्दील हो गई। गहरी मित्रता की भावना से सुरक्षित और उद्देश्य की एकता तथा विश्वास के आचरण से सजीव यह

समुदाय उच्च स्तर के सामंजस्य और विकास को प्राप्त करने में समर्थ हुआ, जिसके लिये इसे सम्पूर्ण बहाई जगत में ख्याति मिली। दिव्य शिक्षाओं की अपनी समझ से संचालित और उन्हें जो धार्मिक स्वतंत्रता दी गई थी उसकी परिधि में रहते हुए इन मित्रों ने ऐसी परिस्थितियों के निर्माण के लिये कड़ी मेहनत की ताकि एक मशरिकुल–अज़कार की स्थापना की जा सके – ''प्रत्येक बहाई समुदाय के बीच शीर्श की संस्था''। नगर के मध्य में एक उचित भूभाग पर जिसका अधिग्रहण स्वयं 'आशीर्वादित सौंदर्य' की सहमति से कुछ वर्ष पहले किया गया था, सामुदायिक कल्याण की सुविधाओं के साथ एक मीटिंग हाल, बच्चों के लिये स्कूल, आगन्तुकों के लिये हॉस्टल और अन्य सुविधाओं के साथ एक क्लीनिक का निर्माण किया गया। अश्काबाद के बहाईयों की असाधारण उपलब्धियों का यह प्रतीक बहाईयों के उन सफल वर्षों में उनकी समृद्धि, उदारता और बौद्धिक तथा सांस्कृतिक सम्पदा के लिये ख्याति दिला चुका था। उन्होंने अपना ध्यान यह सुनिश्चित करने पर केन्द्रित किया कि एक ऐसे समाज में जहाँ शिक्षा का, खासकर लड़कियों के बीच, नितान्त अभाव था, सभी बहाई बच्चे और युवा साक्षर हों। एकजुट प्रयास और प्रगति के ऐसे माहौल में, विकास के हर स्तर पर अब्दुल बहा द्वारा प्रोत्साहित, एक शानदार उपासना मंदिर बन कर उभरा– उस क्षेत्र का सर्वाधिक प्रसिद्ध भवन। बीस सालों से अधिक समय तक मित्रों ने अपने ऊँचे उद्देश्य के स्वर्गिक आनन्द की अनुभूति की : आराधना के एक केन्द्रीय स्थल की स्थापना, सामुदायिक जीवन का शक्तिपुँज, एक ऐसी जगह जहाँ लोग अपने दैनिक काम–काज के लिये घरों से निकलने के पहले, तड़के सुबह प्रार्थना और परस्पर मन की बातें करने के लिये एकत्र हुआ करते थे। अन्ततः अधर्म की ताकतें उस क्षेत्र में बलवती हुईं और आशाओं पर पानी फेर गईं, (किन्तु) अश्काबाद में थोड़े समय एक मशरिकुल–अज़कार का रहना उन अनुयायियों की

टोली की इच्छा–शक्ति और प्रयासों का एक चिरस्थायी प्रमाण है जिन्होंने 'रचनात्मक शब्द' की षक्ति से प्रेरणा प्राप्त कर एक समृद्ध जीवनशैली को स्थापित किया।

अश्काबाद में उपासना मंदिर का निर्माण–कार्य शुरू होने के कुछ ही समय बाद पश्चिमी गोलार्ध में उत्तरी अमेरिका के नवोदित बहाई समुदाय के सदस्य स्वयं अपना एक मंदिर बना कर अपनी आस्था और श्रद्धा का प्रदर्शन करने के लिये प्रेरित हुये और उन्होंने सन 1903 में मास्टर की सहमति के लिये लिखा। उस समय से मशरिकुल–अज़कार बहाउल्लाह के समर्पित सेवकों के भाग्य से अविच्छेद्य रूप से जुड़ गया। हालाँकि दो विश्व युद्धों और व्यापक आर्थिक मंदी के कारण इस विशाल परियोजना की प्रगति कई दशकों तक बाधित रही, (तथापि) विकास का हर चरण समुदाय के विस्तार और प्रशासन के फैलाव से प्रगाढ़ रूप से जुड़ा रहा। ठीक उसी दिन जब मार्च 1909 में कार्मल पर्वत पर बाब के पावन अवशेश समाधिस्थ किये जा रहे थे, प्रतिनिधिगण 'बहाई मंदिर एकता' नामक संस्था की स्थापना के लिये एकत्र हुये। एक ऐसी राष्ट्रीय संस्था जिसका निर्वाचित बोर्ड इस महाद्वीप में दूर–दूर तक के स्थानीय समुदायों के लिये प्रेरणा–केन्द्र बना। इस गतिविधि ने शीघ्र ही युनाइट्ेड स्टेट्स और कनाड़ा की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के गठन को प्रोत्साहित किया। उत्तरी अमेरिका की अपनी यात्रा के दौरान स्वयं अब्दुल बहा ने पश्चिम के उस मातृ–मंदिर का, विषाल आध्यात्मिक शक्तियों के वरदान के साथ, शिलान्यास किया। और इस ऐतिहासिक उद्यम के लिये दान अफ्रीका, एशिया, यूरोप, लैटिन अमेरिका और प्रशांत महासागर के देशों से बरस पड़ा, जो पूरब और पश्चिम के देशों के बहाईयों की एकजुटता और त्याग का प्रदर्शन है।

जब बहाउल्लाह के अनुयायी अपना ध्यान ईश्वर पर केन्द्रित कर रहे हों और प्रतिदिन 'उसके' स्मरण में अपने को निमग्न कर रहे

हों निरन्तर 'उसके नाम' से प्रयासरत हों (तब) उन्हें अब्दुल बहा द्वारा एक अनुयायी को कहे गये इन प्रभावशाली शब्दों से प्रेरणा ग्रहण करने दें, जो (अनुयायी) उनके निरन्तर और प्रेमपूर्ण मार्गदर्शन में बनाये जा रहे पहले उपासना मंदिर के निर्माण के प्रति समर्पित था : सम्पूर्ण अनासक्ति और आकर्षण की ज्वाला से प्रदीप्त होकर शीघ्र अश्काबाद जाओ और ईश्वर के मित्रों को अब्दुल बहा का उत्साहवर्द्धक अभिवादन पहुँचाओ। तुम प्रत्येक के चेहरे को चूमो और सब को इस सेवक का गहन और सच्चा स्नेह दो। अब्दुल बहा की ओर से तुम मिट्टी की खुदाई करो, गारा–मसाला ढोओ और मशरिकुल–अज़कार को बनाने के लिये पत्थर लाद कर ले जाओ ताकि सेवा का यह हर्षोन्माद 'दासता के केन्द्र' को आनन्द और उल्लास के भर दे। वह मशरिकुल–अज़कार स्वामी की पहली देखी जा सकने वाली और प्रत्यक्ष संस्था है। अतः, इस सेवक की आशा है कि प्रत्येक नेक और सदाचारी व्यक्ति अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देगा, अधिक–से–अधिक प्रसन्नता और उल्लास दिखलायेगा और मिट्टी और गारा–मसाला ढोने में आनन्द का अनुभव करेगा ताकि यह 'दिव्य भवन' बन कर तैयार हो सके, प्रभुधर्म का प्रसार हो सके और दुनिया के हर कोने से मित्रगण पूरे निश्चय के साथ इस महान कार्य को पूरा करने के लिये उठ खड़े हों। अगर अब्दुल बहा कैद में नहीं होते और उनके रास्ते में बाधायें नहीं होतीं तो वह स्वयं शीघ्रता से अश्काबाद जाते और असीम आनन्द व हर्ष के साथ मशरिकुल–अज़कार के निर्माण के लिये मिट्टी ढोते। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए मित्रों के लिये यह उचित है कि वे उठ खड़े हों और मेरी जगह पर सेवा करें ताकि कम समय में यह भवन सबकी आँखों के सामने प्रकाशमान हो सके, 'आभा सौन्दर्य' के उल्लेख में ईश्वर के प्रिय गण लग जायें, तड़के भोर के समय मशरिकुल–अज़कार का मधुर गान ईश्वर के लोक तक गुंजायमान हो सके और ईश्वर के बुलबुल की गीत–लहरी 'परम महिमाशाली

साम्राज्य' के निवासियों को आनन्द और उल्लास से भर सके। इस प्रकार हृदय उल्लास से भर जायेंगे, आत्मायें आनन्दातिरेक से तरंगित होंगी और मन प्रकाशित होंगे। सच्चे लोगों की यह सबसे बड़ी आशा है, वैसे लोगों की सबसे प्रिय इच्छा है जो ईश्वर के निकट हैं।

(बहाई विश्व को सम्बोधित 1 अगस्त 2014 के पत्र से) (66)

धर्मों के इतिहास में मशरिकुल–अज़कार एक अनूठी संकल्पना है और वह ईश्वर के नए युग की शिक्षाओं का प्रतीक है। यह उपासना के एक सर्वव्यापी स्थल के रूप में है जो कि किसी स्थान के सभी निवासियों के लिए खुला है – चाहे वे किसी भी धर्म से जुड़े हों, उनकी चाहे जो भी पृष्ठभूमि हो, वे किसी भी प्रजाति के हों, स्त्री हों या पुरुष। यह आध्यात्मिक यथार्थ एवं जीवन के मूलभूत प्रश्नों पर गहन चिन्तन करने का आश्रय–स्थल है और इन प्रश्नों में समाज को बेहतर बनाने के लिए व्यक्तिगत एवं सामूहिक दायित्व के विषय भी शामिल हैं। इसके दायरे में स्त्री और पुरुष, बच्चे और जवान सब एक समान हैं। यह विशिष्ट और समेकित व्यापकता मशरिकुल–अज़कार की संरचना में ही निहित है जिसका नौमुखी डिजाइन 9 की संख्या द्वारा संकेतित पूर्णता और निःशेषता का सूचक है।

एक ऐसे स्थान के रूप में जहाँ से आध्यात्मिक शक्तियां परावर्तित होती हैं, मशरिकुल–अज़कार मानवजाति के कल्याण के लिए निर्मित की जाने वाली उप–संस्थाओं का केंद्रबिंदु और सेवा के लिए एक सर्वसामान्य इच्छा और उत्सुकता की अभिव्यक्ति है। ये उप–संस्थाएँ शिक्षा तथा वैज्ञानिक ज्ञान के साथ–साथ सांस्कृतिक एवं मानवतावादी कार्यक्रमों के केंद्र हैं जो कि ज्ञान के प्रयोग के माध्यम से प्राप्त की जाने वाली सामाजिक एवं आध्यात्मिक प्रगति के आदर्शों को मूर्तिमान करती हैं और यह झलकाती हैं कि जब विज्ञान और धर्म में तालमेल होता है तो किस तरह वे मानवजाति का रुतबा

बढ़ाते हैं और सभ्यता को सम्पोषित करते हैं। जैसाकि आपके जीवन से यह स्पष्ट रूप से झलकता है, हालाँकि उपासना मनुष्य के आंतरिक जीवन के लिए अनिवार्य और आध्यात्मिक विकास के लिए अत्यावश्यक है, किन्तु उसे उन कर्मों की ओर भी अभिप्रेरित करने वाला होना चाहिए जो उस आंतरिक रूपांतरण को वाह्य अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। मशरिकुल–अज़कार सेवा से अविभाज्य उपासना की इसी संकल्पना की घोषणा करता है। इस संदर्भ में शोग़ी एफ़ेन्दी कहते हैं:

मशरिकुल–अज़कार की उप–संस्थाओं के इर्द–गिर्द घूमते सामाजिक, मानवतावादी, शैक्षणिक, एवं वैज्ञानिक कार्यकलापों से वियुक्त होकर, उपासना मन्दिर – उसकी संकल्पना चाहे जितनी भी उदात्त हो, उसकी भावना चाहे जितनी भी उत्कंठापूर्ण हो – किसी संत के चिन्तन अथवा किसी निष्क्रिय आराधक के सत्संग जैसे तुच्छ एवं अक्सर क्षणिक साबित होने वाले उद्देश्यों से बढ़कर और अधिक कुछ भी पाने की आशा नहीं कर सकता। वह स्वयं उस आराधक को भी दीर्घ संतोष या लाभ प्रदान नहीं कर सकता, तो फिर मानवजाति को कहाँ से कर पाएगा, बशर्ते कि वह मानवजाति के निमित्त ऐसी गत्यात्मक एवं निस्पृह सेवा के रूप में रूपांतरित न हो जाए जिसे संवर्द्धित करना और सहज बनाना मशरिकुल–अज़कार की आश्रित संस्थाओं का परम ध्येय है।

इस प्रकाशित युग के 'नक्षत्र युगल' ने हमें यह सिखाया है : प्रार्थना आत्मा का अपने 'रचयिता' के साथ एक अनिवार्य एवं प्रत्यक्ष तथा मध्यस्थता–विहीन वार्तालाप है। यह वह आध्यात्मिक आहार है जो चेतना के जीवन को पोषित करता है। सुबह की ओस की तरह, यह हृदय में ताजगी भरती है और हठी 'स्व' की आसक्तियों से मुक्त एवं पवित्र करते हुए उसे स्वच्छ बनाती है। यह पर्दों को भष्म कर देने

वाली अग्नि की तरह है और 'सर्वशक्तिमान' परमात्मा से पुनर्मिलन के महासिंधु की ओर ले जाने वाली रोशनी। इसके डैनों पर चढ़कर आत्मा परमात्मा के चिदाकाश में विचरण करती है और दिव्य यथार्थ के निकट आती है। आत्मा की असीमित क्षमताओं का विकास और ईश्वर की उदार कृपाओं को आकर्षित किया जा सकना प्रार्थना की गुणवत्ता पर ही आश्रित है, लेकिन बहुत–बहुत देर तक प्रार्थनाएं करना वांछित नहीं है। प्रार्थना में निहित शक्तियां तब प्रकट होती हैं जब वह, किसी भी भय अथवा कृपा की कामना से परे, ईश्वर के प्रेम से सम्बलित होती है और दिखावों एवं अंधविश्वास से मुक्त होती है। प्रार्थना की अभिव्यक्ति आस्था और विशुद्ध हृदय से की जानी चाहिए जो कि चिन्तन और मनन के अनुकूल हो ताकि सचेतन क्षमता उसके प्रभावों से प्रकाशित हो सके। ऐसी प्रार्थना शब्दों और महज ध्वनियों की सीमाओं से पार जाती है। इसके स्वर–माधुर्य की मधुरिमा हृदयों को अवश्य ही आह्लादित करेगी और उन्हें उन्नत बनाएगी और भौतिक रुझानों को स्वर्गिक गुणों में रूपांतरित करते हुए एवं मानवजाति के प्रति निःस्वार्थ सेवा की प्रेरणा से भरते हुए ईश्वरीय 'शब्द' की भेदक शक्ति को सुदृढ़ करेगी।

●●●●●

हमने बहाइयों का आह्वान किया है कि समुदाय–निर्माण के अपने प्रयासों में वे यह देखें कि समाज का नया ढांचा कैसा हो सकता है। यदि उस ढांचे को समग्रता से लें तो वह सेवा की क्षमता को बढ़ाने वाला है – युवा पीढ़ी की शिक्षा के लिए, युवाओं के सशक्तीकरण के लिए, बच्चों की आध्यात्मिक शिक्षा के लिए, सेवा के क्षेत्र में दूसरों का साथ निभाने के लिए 'ईश्वर के शब्द' की शक्ति पर आश्रित होने की क्षमता के विकास के लिए, और इस युग के लिए प्रस्तावित दिव्य शिक्षा के आलोक में लोगों की सामाजिक–आर्थिक उन्नति के लिए। उस ढांचे के लिए आवश्यक है भक्तिपरक सभा –

जो अच्छे जीवन का एक सामुदायिक पहलू और उस मशरिकुल–अज़कार की अवधारणा का एक आयाम है जो कि आपके समुदाय के लिए न केवल 'सर्वशक्तिमान' की आराधना करने और स्वयं आपके जीवन के लिए उसके वरदानों की याचना करने का एक अनूठा अवसर प्रस्तुत करता है बल्कि अपने बंधुओं तक भी प्रार्थना की आध्यात्मिक ऊर्जाओं का विस्तार करने, उनके लिए उपासना की शुद्धता को फिर से हासिल करने, उनके हृदय में परमात्मा की संपुष्टियों के प्रति आस्था जगाने और उनमें तथा स्वयं अपने आप में राष्ट्र और मानवजाति की सेवा की उत्सुकता जागृत करने और न्याय के पथ पर रचनात्मक लोचशीलता दिखाने का अवसर।

प्रिय मित्रों: आपके समस्त आशीर्वादित भूभाग में तथा प्रत्येक पास–पड़ोस, शहर, गांव और कस्बे में प्रार्थना के लिए समर्पित सभाएं तथा आपके देशवासियों द्वारा बहाई प्रार्थनाओं तक जो बढ़ती हुई पहुंच प्राप्त हो रही है उससे आपका समुदाय विशाल मानवजाति के सम्मुख एकता के प्रकाश को जगमगाने में सक्षम हो रहा है जिसका अंश दुनिया भर के आपके धर्मानुयायी बंधुओं को भी मिल रहा है। अतः, सबके लाभ के लिए भविष्य के मशरिकुल–अज़कारों के बीज बोइए और घृणा एवं अन्याय के अंधकार के विरुद्ध प्रकाश की अनगिनत किरणें बिखेरिए।

(ईरान के बहाइयों को सम्बोधित 18 दिसंबर 2014 के एक पत्र से) (67)

1. 'योजना' का अपने सभी पक्षों में प्रणालीबद्ध अनुसरण, एक सामूहिक प्रयत्न के प्रतिमान को बढ़ावा देता है जो न केवल सेवा के प्रति प्रतिबद्धता, बल्कि उपासना के प्रति इसके आकर्षण के कारण भी विशिष्टता प्राप्त करता है। अगले पाँच वर्षों में गतिविधियों की जिस सघनता की आवश्यकता है वह भक्ति के उस जीवन को और समृद्ध बनायेगी जो, पूरे विश्व में, समुदायसमूह में साथ–साथ सेवा दे रहे

साझा करते हैं। समृद्धि की यह प्रक्रिया पहले से ही काफी विकसित है: उदाहरण के लिये, देखें, किस प्रकार उपासना के लिए बैठकें सामुदायिक जीवन के मूल में गूंथ दी गई हैं। भक्तिपरक बैठकें वे अवसर हैं जहाँ कोई भी आत्मा प्रवेश कर सकती है, स्वर्गिक सुगंधों की सांस ले सकती है, प्रार्थना की मधुरता का अनुभव कर सकती है, 'सर्जनात्मक शब्द' पर चिंतन कर सकती है, चेतना के पंखों पर उड़ सकती है, अपने 'प्रियतम' से संवाद कर सकती है। भाईचारा तथा साझे उद्देश्य की भावनायें उत्पन्न होती हैं, विशेषकर आध्यात्मिक उच्च वार्तालाप में, जो स्वाभाविक रूप से ऐसे समय उत्पन्न होते हैं और जिनके द्वारा "मानव हृदय रूपी नगर" खोले जा सकते हैं। किसी भी स्थान पर उपासना सभा का आयोजन कर, जिसमें किसी भी पृष्ठभूमि के वयस्कों तथा बच्चों का स्वागत है, मशरिकुल अज़कार की चेतना उत्पन्न हो जाती है। एक समुदाय में भक्तिपरक चरित्र का बढ़ावा, 'उन्नीस दिवसीय सहभोज' पर भी प्रभाव डालता है तथा अन्य अवसरों पर जब मित्र एक साथ एकत्र होते हैं अनुभव किया जा सकता है।

(महाद्वीपीय सलाहकार मंडलों के अधिवेशन को सम्बोधित 29 दिसंबर 2015 के पत्र से) (68)

मशरिकुल–अज़कार "विश्व की सबसे महत्वपूर्ण संस्थाओं में से एक" है। मन्दिर और उससे जुड़ी हुई आश्रित संस्थाएं बहाई जीवन के दो अत्यावश्यक एवं अविभाज्य पहलुओं को संयोजित करती हैं: उपासना और सेवा। बहाउल्लाह का प्रकटीकरण सभी लोगों के लिए जिस दिव्य सभ्यता का संवाहक है, उसके एक सशक्त प्रतीक और अंतर्निहित तत्व के रूप में उपासना मन्दिर जिस किसी समुदाय में निर्मित होता है वह उस समुदाय का ध्रुवीय बिंदु है। अब्दुल बहा कहते हैं: "मशरिकुल–अज़कार की पावन सुरभियां सच्चरित्र लोगों की

आत्माओं को नवजीवन देती हैं, और उसकी जीवन्तकारी हवाएं शुद्ध हृदय के लोगों पर जीवन का संचार करती हैं। वस्तुतः, उसका प्रभाव ऐसा है कि वह समस्त मानव को एक समान उद्देश्य की और अधिक गहन भावना तक पहुंचने के लिए गतिशील कर सकता है। वर्तमान समय में बहाई विश्व की दृष्टि अपने नव–लोकार्पित 'मन्दिर' पर टिकी हुई है, और हमें पक्का विश्वास है कि यह अभिलषित विजय सभी जगहों के मित्रों को उल्लास से भर देगी। तथापि वे निश्चित रूप से स्वयं अपने बीच आनन्द मनाने भर से संतुष्ट नहीं होंगे। यह उदात्त भवन जिन समस्त बातों का प्रतीक है उनसे प्रेरित होकर उन्हें चाहिए कि वे ईश्वर की स्तुति और मानवजाति की सेवा से उत्पन्न शाश्वत आनन्द की खोज के लिए अन्य लोगों को भी आमंत्रित करें।

'प्राचीनतम सौन्दर्य' की दहलीज पर शीश नवाते हुए, हम धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने अपने समर्पित अनुयायियों को पवित्रता की ओर आकर्षण का सम्पोषण करते हुए कांच, पत्थर और प्रकाश से एक ऐसे अद्भुत मन्दिर के निर्माण के योग्य बनाया है। हम जिस कृतज्ञता का अनुभव कर रहे हैं वह उस भव्य दिवस के लिए हमारी उत्कंठा को और बढ़ा देती है जब प्रत्येक नगर और गांव को एक मशरिकुल–अज़कार का वरदान प्राप्त होगा और सबसे पहले हम अत्यंत उत्सुकता के साथ उन देशों पर दृष्टि डालते हैं जहाँ राष्ट्रीय एवं स्थानीय उपासना मन्दिरों का अभ्युदय आरम्भ हो चुका है। 'महानतम नाम' के समुदाय ने सैंटिएगो में जो उपलब्धि हासिल की है उसका प्रकाशमय परिदृश्य सभी जगहों के निष्ठावान लोगों को विश्व को बेहतर बनाने के लिए ईश्वर के प्रति समर्पित अपनी सेवाएँ और अधिक गहन करने के लिए प्रेरित करे, चाहे वे सेवा कितनी भी छोटी क्यों न हो।

(दक्षिण अमेरिका के मातृ–मन्दिर के लोकार्पण के लिए सैंटिएगो, चिली, में एकत्रित मित्रों को सम्बोधित 14 अक्टूबर 2016 के एक पत्र से) (69)

बहाई विश्व ने जब महाद्वीपीय उपासना मन्दिरों में से अन्तिम उपासना मन्दिर की पूर्णाहुति की थी तब से पूरा एक वर्ष बीत चुका है, और मशरिकुल–अज़कार की संस्था के विकास की दिशा में अब एक नया विहान हो रहा है। आप उस उदय–स्थल में ही एकत्रित हुए हैं – प्रथम स्थानीय उपासना मन्दिर की स्थली पर जो कि वर्तमान चरण के उन्मीलन के दौरान क्षितिज पर चमकने वाला है। इस अनूठे भवन का लोकार्पण एक ऐतिहासिक अवसर है तथा, 'परम पवित्र पुस्तक' में बहाउल्लाह द्वारा प्रकट की गई इस आज्ञा के अनुपालन में और भी अनेक स्थानीय एवं राष्ट्रीय मशरिकुल–अज़कारों की पूर्वभूमिकाः "उसके नाम पर जो सभी धर्मों का प्रभु है, सभी भूभागों में तुम लोग उपासना मन्दिरों का निर्माण करो।"

●●●●●

बैटमबैंग में एक उपासना मन्दिर का अभ्युदय ..... इस बात का प्रमाण है कि वहाँ के मित्रों के हृदय में आस्था का प्रकाश कितनी प्रखरता से जगमगा रहा है। कम्बोडिया के एक कुशल भवन–शिल्पी द्वारा तैयार की गई उसकी रूपरेखा उस राष्ट्र की संस्कृति की भव्यता और सुंदरता की झलक दिखाती है, उसमें नवकल्पनाशील तकनीकों का इस्तेमाल किया गया है लेकिन उन्हें उस क्षेत्र के पारम्परिक स्वरूपों से समन्वित किया गया है, यह निस्संदेह रूप से उस भूभाग का है जहाँ उसका निर्माण किया गया है। अपने लोकार्पण से भी पूर्व, मन्दिर अपनी छाया में रहने वाले लोगों की उस विषयवस्तु के बारे में, जो कि मशरिकुल–अज़कार में अंतर्निहित है, जागरूकता बढ़ाने में सफल रहा है – अर्थात, समुदाय के जीवन में उपासना और सेवा की अविभाज्यता। उसने एकता के महत्व के प्रति और भी अधिक समझ विकसित की है जो कि अब उसके प्रांगण में होने जा रही सामूहिक उपासना के माध्यम से और मजबूत हो रही है। उसका अभ्युदय उन प्रयासों के लिए एक उत्प्रेरण के रूप में है जो कि

आध्यात्मिक रूप से विशिष्ट समुदायों को पोषित करने के लिए किए जा रहे हैं। यह एक अच्छे उद्देश्य के लिए समर्पित भवन है जिसे अच्छी चेतना वाले लोगों ने खड़ा किया है।

(उपासना मन्दिर के लोकार्पण के लिए बैटमबैंग, कम्बोडिया, में एकत्रित मित्रों को 1 सितंबर 2017 को सम्बोधित पत्र से) (70)

विश्व न्याय मन्दिर की ओर से लिखे गए पत्रों से

जहाँ तक मशरिकुल–अज़कार की आश्रित संस्थाओं का सवाल है, अब्दुल बहा की पातियों और सम्बोधनों में उनके बारे में कई संदर्भ दिए गए हैं। उदाहरण के लिए, वे अनाथ बच्चों के लिए एक स्कूल, अस्पताल एवं गरीबों के लिए औषधालय, अक्षम लोगों के लिए बसेरा, उच्चतर वैज्ञानिक अध्ययन के लिए कॉलेज, और आश्रय–स्थल की सूची दी है। उपरोक्त संस्थाओं का उल्लेख करने के बाद, एक अन्य स्थान पर वे कहते हैं कि अन्य लोकोपकारी भवनों का भी निर्माण किया जाना है। .....विश्व न्याय मन्दिर ने यह भी कहा है कि उसने ऐसा कोई पाठ नहीं देखा है जिसमें यह कहा गया हो कि इन आश्रित संस्थाओं की संख्या नौ होनी चाहिए।

(एक व्यक्तिगत बहाई को लिखित पत्र दिनांक 18 मार्च 1974 से) (71)

इस प्रक्रिया (विकास परियोजनाओं में बहाइयों की भागीदारी) का एक संकेत उपासना मन्दिर और उसकी आश्रित संस्थाओं में देखा जा सकता है। जिस प्रथम भाग का निर्माण किया जाना है वह है मुख्य भवन जो कि समुदाय का आध्यात्मिक हृदय–केंद्र है। उसके बाद, क्रमिक रूप से, उस आध्यात्मिक हृदय–केंद्र की वाह्य अभिव्यक्ति के रूप में वह "सामाजिक सेवाओं से जुड़ी ऐसी संस्थाओं" का निर्माण किया जाएगा और उन्हें सक्रिय किया जाएगा "जो पीड़ितों को

सांत्वना, बेघरों को आश्रय, वंचितों को तसल्ली और अज्ञानियों को ज्ञान" प्रदान करेंगी। इससे बहुत पहले कि बहाई समुदाय स्वयं अपना मशरिकुल–अज़कार बनाने के चरण में पहुंचेगा, यह प्रक्रिया अपनी शैशवास्था में आरम्भ हो चुकी है ताकि बहाई समुदाय जिस प्रथम स्थानीय केंद्र की स्थापना करे वह न केवल एक आध्यात्मिक एवं प्रशासनिक केंद्र तथा समुदाय के एकत्र होने के एक स्थल के रूप में अपनी सेवा देने लग जाए बल्कि ट्यूटोरियल स्कूल तथा सामुदायिक जीवन के अन्य पक्षों के केंद्र के रूप में भी। लेकिन फिर भी सिद्धान्त यही रहता है कि भौतिक पक्ष से पहले आध्यात्मिक पक्ष है। प्राथमिक महत्व इस बात का है कि बहाउल्लाह के प्रकटीकरण द्वारा मनो–मस्तिष्क प्रकाशित हों और उसके बाद अनुयायियों की निम्नतम इकाई इन शिक्षाओं को अपने समुदाय के दैनिक जीवन में क्रियान्वित करने के इच्छुक हों।

(8 मई 1984 को ब्राजील की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को लिखे गए एक पत्र से) (72)

बहाई लेखों में 'मशरिकुल–अज़कार' शब्द का प्रयोग अनेक वस्तुओं के वर्णन के लिए किया गया हैः प्रभात–काल में प्रार्थना के लिए मित्रों का एकत्र होना, वह भवन जहाँ यह कार्य सम्पन्न होता है, अपनी आश्रित संस्थाओं सहित मशरिकुल–अज़कार की पूरी संस्था, उस संस्था का मुख्य भवन जिसे अक्सर "उपासना गृह" या "मन्दिर" कहा जाता है। इन विभिन्न वस्तुओं को 'किताब–ए–अकदस' में घोषित बहाउल्लाह की संकल्पना के क्रमिक परिचय के चरणों या पहलुओं के रूप में देखा जा सकता है। मशरिकुल–अज़कार के विकास के लिए, कई कार्य–योजनाओं को गतिशील बनाया गया है और धर्मानुयायियों को चाहिए कि वे इन्हीं दिशाओं में अपना ध्यान केन्द्रित करें और उनके लिए प्रयास करें।

(एक व्यक्तिगत बहाई को 20 अप्रैल 1997 को लिखित पत्र से) (73)

"मशरिकुल–अज़कार" शब्द जब भी उपासना मन्दिर की ओर संकेतित करे, तब वह उस भवन, उस केन्द्र का परिचायक होता है जहाँ लोग ईश्वर के शब्दों के श्रवण और उसकी उपासना के लिए एकत्रित होते हैं। उस केन्द्रीय उपासना मन्दिर के चारों ओर मशरिकुल–अज़कार की आश्रित संस्थाएँ होती हैं जो मानवजाति की सेवा के रूप में उपासना को अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं।

(एक व्यक्तिगत बहाई को 24 फरवरी 1998 को लिखित पत्र से) (74)

यह समीक्षा करते हुए यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि संगीत–रचना के साथ गीत के रूप में पवित्र लेखों से चुने हुए अंशों का प्रयोग करने और श्लोकों या शब्दों को दोहराने की अनुमति है। गान की संगीत–शैली का निर्धारण करने के लिए संगीतकार स्वतंत्र है बशर्ते कि वह पवित्र लेखों को औचित्य, गरिमा एवं समुचित सम्मान के साथ प्रस्तुत किए जाने के आध्यात्मिक दायित्व को ध्यान में रखे।

●●●●●

इसके अतिरिक्त, संगीत की आवश्यकताओं के अनुरूप प्रार्थनाओं या बहाई लेखों से चुने हुए श्लोकों को दोहराने पर कोई आपत्ति नहीं है।

जैसाकि ऊपर कहा जा चुका है, पाठ में हल्के–फुल्के परिवर्तन करने, कोरस के रूप में पंक्तियों अथवा "हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर" जैसे छोटे वाक्यांशों को दोहराने की अनुमति है। गान की संगीत–शैली का निर्धारण करने के लिए संगीतकार स्वतंत्र है बशर्ते कि वह पवित्र लेखों को औचित्य, गरिमा एवं समुचित सम्मान के साथ प्रस्तुत किए जाने के आध्यात्मिक दायित्व को ध्यान में रखे।

(ऑस्ट्रेलिया की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को लिखित 14 फरवरी 2001 के पत्र से) (75)

मन्दिर में कार्यकलापों के स्तर में उल्लेखनीय वृद्धि के बारे में जानकर, जिनमें वृहत्तर समुदाय से प्रतिभागियों को संलग्न करते हुए

मूल कार्यकलापों की बढ़ती हुई संख्या भी शामिल है, विश्व न्याय मन्दिर को विशेष प्रसन्नता का अनुभव हुआ। ....इस आधारशिला पर काम करते हुए, आपकी राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा द्वारा अच्छी तरह ध्यान दिए जाने हेतु मुख्य महत्व का एक विषय है उपासना मन्दिर के कार्यों तथा उपोलु समुदाय–समूह में विस्तार और सुगठन के कार्य के बीच और बेहतर स्तर की सुसंगति स्थापित करने के तौर–तरीकों के बारे में धर्मानुयायियों के बीच विचार और उद्देश्य की एकता को बढ़ावा देने की आवश्यकता।

इन प्रयासों के केंद्र में होंगे मन्दिर में हो रहे शिक्षण के कार्य तथा समुदाय–निर्माण की प्रक्रियाएँ। खासतौर पर, आगंतुकों तथा आस–पास रहने वाले लोगों के साथ प्रभुधर्म की बुनियादी शिक्षाओं को साझा करने के प्रयास एवं मन्दिर–प्रांगण में आयोजित अध्ययन–वृत्तों, भक्तिपरक सभाओं, बच्चों की कक्षाओं और किशोर समूहों में संलग्न होने के लिए उन्हें आमंत्रित करने के कार्य को सुव्यवस्थित करने तथा उन्हें आवश्यक मानव एवं आर्थिक संसाधनों से सम्पन्न करने की जरूरत होगी। एक विषेश कार्यक्रम तैयार करने पर भी विचार किया जा सकता है जिसका उद्देश्य होगा समुदाय के आध्यात्मिक केंद्र के रूप में उपासना मन्दिर तथा आस–पास की आबादी पर उसके द्वारा डाले जा सकने वाले प्रभाव की विचार–दृष्टि को साझा करना – समोआ के लोगों के लिए निर्मित मन्दिर की विचार–दृष्टि।

विश्व न्याय मन्दिर की यह भाव–प्रवण आशा है कि विकास की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के अपने कार्य में उपोलु समुदाय–समूह में सेवा दे रही एजेन्सियां और धर्मानुयायी अपने बीच उपासना मन्दिर की मौजूदगी का पूरा लाभ उठा पाने में सक्षम होंगे और आगंतुकों को आकर्षित करने एवं उनके अनुभव को समृद्ध करने का यह माध्यम समय आने पर और भी अधिक परिष्कृत होगा। बहाई सामुदायिक

जीवन के अन्य पहलुओं की तरह, इस प्रयास की सफलता भी मुख्य रूप ऐसे मित्रों पर निर्भर करेगी जो यह सुनिश्चित करने के लिए कि तौर–तरीकों और कार्यकलापों की सतत समीक्षा और उनमें सुधार किया जाता रहे, सीखने की मनोदशा में रहकर कार्य करेंगे।

(समोआ की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को लिखित दिनाँक 27 दिसंबर 2011 के पत्र से) (76)

विश्व न्याय मन्दिर को यह जानकर खुशी हुई कि मशरिकुल–अज़कार के महत्व के बारे में विचार–विमर्श उनके प्रयास के साथ सशक्त सम्बंध जोड़ रहे हैं और इस सामूहिक प्रयास में बहाइयों और उनके मित्रों की वृहत्तर प्रतिभागिता की ओर अग्रसर कर रहे हैं। कोलम्बिया के धर्मानुयायियों के बीच उपासना मन्दिर के महत्व के बारे में पहले से अधिक जागरूकता के कारण उनसे भौतिक योगदान भी प्राप्त हो रहे हैं और यह उनकी आध्यात्मिक प्रतिबद्धता का एक और संकेत है। यह आशा की जाती है कि यह आरंभिक प्रत्युत्तर परियोजना की पूरी जीवन–अवधि तक बरकरार रहेगा और प्रभुधर्म के कोषों में सतत रूप से दान देने की पद्धति को प्रोत्साहित करेगा।

(कोलम्बिया की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को लिखित 10 दिसंबर 2013 के पत्र से) (77)

निस्संदेह, उपासना मन्दिर समुदाय–निर्माण की प्रक्रिया का एक अंतर्निहित अंग है और उसका निर्माण किसी भी समुदाय के विकास में मील का एक महत्वपूर्ण पत्थर होने का परिचायक है। विश्व न्याय मन्दिर की यह आशा है कि ..... के मित्रगण पांच वर्षीय योजना के अत्यावश्यक कार्यकलापों को जिस उत्साह और दृढ़ता से पूरा करने में जुटे हैं, शीघ्रता से वे दिन भी लाएंगे जब आपके देश में मशरिकुल–अज़कार का निर्माण किए जाने का समय आएगा।

(एक व्यक्तिगत बहाई को 12 दिसंबर 2013 को लिखित एक पत्र से) (78)

इसके अलावा, चूंकि यह परिकल्पना की गई है कि मन्दिर की डिजाइन "सहज रूप से उन लोगों की स्थानीय संस्कृति और दैनिक जीवन में रच–बस जाए जो वहाँ प्रार्थना और मनन के लिए एकत्रित होंगे" अतः मित्रों को उसकी भौतिक रूपरेखा के बारे में कुछ आरम्भिक अभिकल्पना के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। अंततः, यह आशा की जाती है कि उपासना मन्दिर की डिजाइन ऐसे तत्वों और प्रतीकों से प्रेरित होगी जिनकी पहचान केन्या के लोग सहज रूप से करते हैं। शीघ्र स्थापित होने जा रहे निर्माण कार्यालय को भेजी गई ये अभिकल्पनाएं परियोजना की आवश्यक बातों का वर्णन करने वाले संक्षिप्त वास्तुशिल्पी परिचय में शामिल की जा सकती हैं।

(केन्या की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को लिखित 24 सितंबर 2014 के पत्र से) (79)

जहाँ तक महाद्वीपीय, राष्ट्रीय एवं स्थानीय उपासना मन्दिरों में अन्तर के सम्बंध में आपके प्रश्न का मामला है, मशरिकुल–अज़कार की स्थापना दुनिया के विभिन्न हिस्सों में एक 'मन्दिर' के निर्माण से प्रारम्भ हुई। जब उनका निर्माण हो गया तो प्रभुधर्म की मौजूदगी और उसके वचन को संकेतित करने में इन उपासना मन्दिरों की भूमिका को, अक्सर प्रतीकात्मक भाषा में, रेखांकित किया गया। धर्मसंरक्षक ने लिखा कि मशरिकुल–अज़कार "बहाउल्लाह की विश्व–व्यवस्था का प्रतीक और अग्रवाहक" है और उन्होंने प्रत्येक महाद्वीप में बनने वाले प्रथम मन्दिर को अक्सर "मातृ–मन्दिर" का नाम दिया। पांचवें कालखण्ड के आरम्भ में राष्ट्रीय उपासना मन्दिरों की परियोजनाओं के समारम्भ और उसके बाद महाद्वीपीय मन्दिरों में से अंतिम चिली के उपासना मन्दिर के निर्माण की शुरुआत की ओर संकेत देते हुए, विश्व न्याय मन्दिर ने लिखा है कि "यह समाज की जड़ में प्रभुधर्म की पैठ होने का एक और संतोषदायक प्रमाण प्रस्तुत करता है।"

इस सांकेतिक महत्व से भी आगे, मशरिकुल–अज़कार अत्यंत ही प्रबल व्यावहारिक सम्भावनाओं से भरी संस्था है। यह परिकल्पना की गई है कि जहाँ कहीं भी एक आध्यात्मिक सभा का गठन होता है, चाहे वह स्थानीय हो या राष्ट्रीय, समय आने पर वहां मशरिकुल–अज़कार और हज़ीरत–उल–कद्स नामक संस्थाएं भी स्थापित होंगी। शोग़ी एफ़ेन्दी ने लिखा हैः "मशरिकुल–अज़कार से, जिसे बहाउल्लाह ने 'किताब–ए–अकदस' में उपासना मन्दिर के रूप में निर्धारित किया है, अपनी–अपनी समितियों के सदस्यों सहित बहाई समुदायों के स्थानीय और राष्ट्रीय प्रतिनिधि, जब वे प्रभात काल में इसके प्रांगण में प्रतिदिन एकत्रित होंगे, तो उन्हें वह आवश्यक प्रेरणा प्राप्त होगी जिससे प्रभुधर्म के चुने हुए कर्णधारों के रूप में हज़ीरत–उल–कद्स – अर्थात उनके प्रशासनिक कार्यकलापों के आसन – में अपने दैनिक कार्यों और दायित्वों के निर्वहन में वे सक्षम होंगे।"

और फिर, उपासना मन्दिर को समुदाय का आध्यात्मिक केंद्र बनना है और अपनी उन आश्रित संस्थाओं सहित जिनका निर्माण किया जाएगा यह सामूहिक जीवन के एक फलती–फूलती पद्धति की रचना में योगदान देता है। वर्तमान समय में प्रत्येक महादेश के प्रथम उपासना मन्दिर वे जिस देश में स्थित हैं उनके राष्ट्रीय मन्दिर की भूमिका भी निभा रहे हैं और स्थानीय कार्यकलापों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए वे अपने आस–पास के समुदायों की भी सेवा कर रहे हैं। जब विकास की प्रक्रिया आगे बढ़ेगी, सतत बढ़ते हुए रूप में राष्ट्रीय एवं स्थानीय स्तरों पर भी मन्दिरों का निर्माण किया जाएगा और उनकी प्रकृति तथा समुदाय–निर्माण की प्रक्रिया में वे कैसे अपना योगदान देते हैं इस बारे में और भी बहुत कुछ सीखा–समझा जाएगा। तब इस संस्था के काम–काज के अनेक पहलू क्रमिक रूप से उजागर होंगे। जैसा कि शोग़ी एफ़ेन्दी ने लिखा हैः "मशरिकुल–अज़कार की संस्था के सिवा और कुछ भी नहीं है जो

बहाई उपासना और सेवा के अत्यावश्यक तत्व सर्वाधिक पर्याप्तता से उपलब्ध करा सकें – वे दोनों तत्व जो विश्व के नवनिर्माण के लिए परम आवश्यक हैं।"

(एक व्यक्तिगत अनुयायी को लिखित 26 जनवरी 2015 के पत्र से) (80)

मशरिकुल–अज़कार में प्रस्तुत किए जाने वाले गानों में प्रयुक्त गीत जरूरी नहीं कि बहाई लेखों तक ही सीमित हों, बल्कि होना यह चाहिए कि वे बहाई या अन्य पवित्र लेखों पर आधारित हों और उनमें बहाई विषयवस्तु का समावेश हो। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि प्रस्तुत किए जाने वाले गानों में प्रयुक्त गीतों का स्तर उपासना मन्दिर के भक्तिपरक कार्यक्रमों के दौरान पढ़े या गाए जाने वाले पवित्र लेखों और प्रार्थनाओं के स्तर से कुछ हद तक भिन्न होता है। इसलिए पवित्र लेखों और अब्दुल बहा की वार्ताओं पर आधारित गानों के प्रयोग पर कोई आपत्ति नहीं है।

(ऑस्ट्रेलिया की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को लिखित 2 नवम्बर 2015 के पत्र से) (81)

मशरिकुल-अज़कार के लिए चयनित प्रार्थनाएँ

(अब्दुल बहा के लेखों से)

हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर! उन्हें अपनी सेवा में सम्पुष्ट कर! मशरिकुल–अज़कार के निर्माण के लिए पत्थर उठाने में उनकी पीठ सशक्त कर। हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर! इन सच्चरित्र लोगों के मुखड़ों को उस प्रकाश से ज्योतिर्मय बना जो तेरे रहस्यों के उदय–स्थल से जगमगाता है। सत्य ही, तू शक्तिशाली है और अप्रतिबाधित तथा, वस्तुतः तू दयालु है, करुणावान है।

(एक पाती से – फारसी से अनूदित) (82)

हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर! तुच्छ, विनम्र और अश्रुपूर्ण, मैं अपने मुखड़े को तेरी दया के साम्राज्य और तेरी एकमेवता के लोक की ओर उन्मुख करता हूं और तेरी एकता की दहलीज पर उत्कट भाव से तुझसे याचना करता हूं कि अपने सच्चे प्रेमियों को उस भूभाग में मशरिकुल–अज़कार के पोषण के लिए दान देने में सहायता दे – ताकि इस भवन से हर दिशा में दूर–दूर तक उसके प्रकाश की आभा छिटक सके और तेरे नाम की प्रशंसा और महिमा–विस्तार करने वाली, तेरे स्वर्गिक प्रांगण एवं तेरे सर्वभव्य 'क्षितिज' तक उठती हुई आनन्दपूर्ण पुकारें सुबह–शाम गुंजरित हों।

हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर! घाटी के इस निकटस्थ छोर से लेकर उस "दूरस्थ छोर"[3] को पृथक करने वाली इस लम्बी दूरी के बावजूद, मुझे उनकी ध्वनियों के स्वरालाप और उनके हृदयों की आर्त पुकार सुनने दे, ताकि मेरी चेतना आह्लादित हो सके, मेरा हृदय उत्फुल्ल हो जाए, मेरे नेत्रों को सांत्वना मिले, और कृपा के ऐसे महान आलोड़न से, ऐसी प्रत्यक्ष आभा से, मेरा सम्पूर्ण अस्तित्व आनन्द से प्रकम्पित हो उठे।

हे ईश्वर, मेरे परमात्मन! ऐसी प्रत्येक आत्मा के लिए अपने आशीर्वादों के द्वार उन्मुक्त खोल जो इस उदात्त भवन, इस विलक्षण प्रार्थना मन्दिर, प्रकाश के इस 'दिवास्रोत' के लिए अपना समर्पण देने के लिए उठ खड़ा हो। वस्तुतः, तू सर्वशक्तिमान है, सामर्थ्यवान है, शक्तिशाली है, मृदुल है, भव्य है।

(एक पाती से – अरबी से अनूदित) (83)

हे ईश्वर, मेरे परमात्मन! धड़कते हुए हृदय और अश्रुपूरित नेत्रों से मैं याचना करता हूं कि जो कोई भी इस 'मन्दिर' को खड़ा करने और इस 'भवन' – जिसमें प्रति प्रभात और संध्याकाल तेरे नाम का उल्लेख किया जाता है – के निर्माण के कार्य में अपनी शक्ति लगाता है तू उसकी सहायता कर।

हे ईश्वर! जो कोई भी इस भवन की सेवा और दुनिया के बंधु–वांधवों और धर्मों के मध्य इसे उन्नत बनाने के लिए प्रयत्नशील होता है उस पर अपनी दिव्य संवृद्धि भेज। मानवजाति के कल्याण के प्रवर्द्धन के कार्य के लिए हर शुभ कर्म में उसे सम्पुष्टि प्रदान कर। उसके लिए तू वैभव और प्रचुरता के द्वार खोल और उसे 'साम्राज्य' के अविनाशी खजानों का उत्तराधिकारी बना। लोगों के बीच उसे

1 कुरान 8:42

अपने अनुदानों का संकेत–चिह्न बना और तेरी करुणा और कृपा की लहरों से उमगते हुए तेरी उदारता और कृपालुता के महासिंधु से उसे शक्ति प्रदान कर। वस्तुतः, तू उदार है, करुणावान है, कृपालु है।

(एक पाती से – अरबी से अनूदित) (84)

हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर! अपने सच्चे प्रेमियों के ललाटों को प्रकाशित कर और उन्हें निश्चित विजय के देवदूत–समूहों के माध्यम से सहायता दे। अपने सीधे पथ पर उनके चरणों को सुदृढ़ बना और अपनी पुरातन उदार कृपा से उनके समक्ष अपनी कृपाओं के द्वार खोल दे, क्योंकि तेरे धर्म की सुरक्षा करते हुए, तेरे स्मरण पर अपना विश्वास रखे हुए, तेरे प्रेम के लिए अपना हृदय न्यौछावर करते हुए और तेरे सौन्दर्य के लिए और तुझे प्रसन्न करने की विधियों की खोज में जो कुछ भी उनके पास है उसे समर्पित करते हुए, जो कुछ भी तूने उन्हें प्रदान किया है उन्हें वे तेरे ही पथ पर व्यय कर रहे हैं।

हे मेरे प्रभो! उनके लिए एक उदार अंश, एक नियत पारितोषिक और एक सुनिश्चित पुरस्कार निर्धारित कर। सत्य ही, तू पोषणकर्ता है, सहायक है, उदार है, परम कृपालु है, सदा देने वाला है।

(अब्दुल बहा के लेखों से चयन, सं. 235) (85)

तुमने मशरिकुल–अज़कार का जो फोटोग्राफ भेजा है वह प्राप्त हुआ है। यह अत्यधिक आनन्द का स्रोत था, क्योंकि, ईश्वर का गुणगान हो, ईश्वर के प्रेमीजन मोमबत्ती की तरह प्रकाशित मुखड़ों के साथ मशरिकुल–अज़कार में एकत्रित हुए और उस सम्मिलन को उन्होंने आध्यात्मिक भावनाओं के प्रकाश से प्रकाशित कर दिया।

हे ईश्वर, मेरे प्रियतम, मेरे हृदय की अभिलाषा! ये तेरी पावनता की दहलीज के सेवक हैं जिन्होंने स्वयं को तेरी एकमेवता के द्वार पर अवनत किया है। तुझसे याचना करते हुए, तेरी एकता के साम्राज्य से

अभ्यर्थना करते हुए और तुझ पर अपने हृदय को दृढ़तापूर्वक केन्द्रित किए हुए, उन्होंने तेरी स्तुति के 'उदय–स्थल' और तेरे प्रकाश की सभा में प्रवेश किया है।

हे मेरे प्रभो! उनके कर्मों को स्वीकार कर, उनकी प्रार्थनाओं में उनसे वार्तालाप कर और उन्हें अपने रहस्यों के आश्चर्यों से प्रेरित कर, ताकि तेरी सृष्टि और तेरे लोगों के मध्य जो तेरे चुने हुए जन हैं उनके बीच वे तेरी कृपा के प्रकट–रूप बन सकें। वस्तुतः, तू सौम्य है, सर्वकृपालु है, भव्य है, दयालु है, सबको चाहने वाला है।

(एक पाती से – अरबी और फारसी से अनूदित) (86)